

॥ आय पञ्च (सारसूत्र) ॥

पत्र १६६ अष्टम (आर (न डिउर)

मन्त्राणां गवयः शयनमस्त्यति सुनाय ॥ नव
कम्पुमिरवत्रकूटा मावविह्वलितस्य ॥ म
पुत्रमलंकर ॥ महावज्रयुक्तिनिधीन
संस्तुतं रुमिसारग ॥ महावज्राधिसुनाधि
नामिन्द्रस्वरुपनममहावज्रसिंहासनका
नायकिसनया निहाय समशग ॥ सर्व

मन्त्राणां गवयः शयनमस्त्यति सुनाय ॥ नव
कम्पुमिरवत्रकूटा मावविह्वलितस्य ॥ म
पुत्रमलंकर ॥ महावज्रयुक्तिनिधीन
संस्तुतं रुमिसारग ॥ महावज्राधिसुनाधि
नामिन्द्रस्वरुपनममहावज्रसिंहासनका
नायकिसनया निहाय समशग ॥ सर्व

वर्णसर्वरूपानिर्जातवज्रनलीतिरिवाधिसत्त्वकाटीनियुक्तगमसुमेधासाईसवेनरुजातिवक्षेनवेवर्तिकेननूर ॥
यांसंशयकवारधेमहास्त्रमयाफेमहावज्रविभादसगाधिवृद्धकविकूर्वेमहायातिहायेसंदर्भकेनकत्रिरुक्तयव
मूर्ध्नुसर्वसत्त्वविरुवनिगानप्रवणविविक्तमधुनादानगर्हानधर्मदक्षताप्रतिरानतयातिहायेसंदर्भकेननेकवृद्धक
नथागरुमहापूजाभधार्वताविभादसुखधानलीसमाधिवनिगातिह्लावधिकवार्धगमागरुमियात्रमिगाऽयायकी
ल्यसंगुदजम्भुमेणीकनूनामदिगायकामेणीवलविविक्तययवदकरविरुसंगानेश्वरशथावज्रगरुहवनाधिसत्त्वनमहास
त्वनवज्रनगुणववज्रगागुणववज्रमगिनाववज्ररुक्तनववज्रसंदर्भनववज्रनायायलनववज्रविक्र

विंशतव ॥ वज्रकूटनव ॥ वज्रनाभिनाव ॥ सुवज्रनाव ॥ वज्रसप्तनव ॥ वज्रकण्ठनाव ॥ वाधिसत्वनमदासत्वन ॥ एवं यमखे
कुनलीनिलिवाधिसत्वनकाटीनियुक्तमस्तु ॥ साङ्गैर्मन्त्रकलेभ्यमदाध्यावके ॥ सर्वे नरे हि ॥ कीलाधवे नृत्तिनरुवर्मायु
ने ॥ सर्वमग्राह्यसुविमलकविले ॥ सुविमलकप्रकृतं त्रिशासमाधिवलयागिहयविक्रवक्षमदाह्यमयाकेनर्गहानरभि २
लि ॥ सर्वे विगतसत्वनिदग्धकृष्णवाधनावीर्ययुक्तायुष्माकावयूष्मिणायिभीयुर्गन्ध ॥ आयुष्माकावर्मकल्याणनन ॥ आयु
ष्माकावसुखनिना ॥ आयुष्माकावमदाभोक्तृलयायनन ॥ आयुष्माकाववर्द्धन ॥ आयुष्माकावनन्दन ॥ आयुष्माकावका
धन ॥ आयुष्माकावनदीकाधधन ॥ आयुष्माकावविलाकाधधन ॥ आयुष्माकावमयाकाधधन ॥ एवं यमखे ॥

नेर्मदाध्यावके ॥ साङ्गैर्मन्त्रकलेभ्यमदाध्यावके ॥ सर्वे नरे हि ॥ कीलाधवे नृत्तिनरुवर्मायु
वयुर्गन्ध ॥ वज्रकूटनव ॥ वज्रनाभिनाव ॥ सुवज्रनाव ॥ वज्रसप्तनव ॥ वज्रकण्ठनाव ॥ वाधिसत्वनमदासत्वन ॥ एवं यमखे
वयुर्गन्ध ॥ वज्रकूटनव ॥ वज्रनाभिनाव ॥ सुवज्रनाव ॥ वज्रसप्तनव ॥ वज्रकण्ठनाव ॥ वाधिसत्वनमदासत्वन ॥ एवं यमखे
वयुर्गन्ध ॥ वज्रकूटनव ॥ वज्रनाभिनाव ॥ सुवज्रनाव ॥ वज्रसप्तनव ॥ वज्रकण्ठनाव ॥ वाधिसत्वनमदासत्वन ॥ एवं यमखे
वदवानामिदुलसर्वदवयुर्गन्ध ॥ वज्रकूटनव ॥ वज्रनाभिनाव ॥ सुवज्रनाव ॥ वज्रसप्तनव ॥ वज्रकण्ठनाव ॥ वाधिसत्वनमदासत्वन ॥ एवं यमखे
वनव ॥ सुवज्रनाव ॥ एवं यमखे ॥ वज्रनाभिनाव ॥ सुवज्रनाव ॥ वज्रसप्तनव ॥ वज्रकण्ठनाव ॥ वाधिसत्वनमदासत्वन ॥ एवं यमखे
किनाव ॥ वज्रकूटनव ॥ वज्रनाभिनाव ॥ सुवज्रनाव ॥ वज्रसप्तनव ॥ वज्रकण्ठनाव ॥ वाधिसत्वनमदासत्वन ॥ एवं यमखे ॥

दुभनवकिन्नननाऊन अन्नककिन्नननाऊयनिवानल यंवविखितवगधर्वनाऊन अन्नकगधर्वनाऊयनिवानल
 सर्वार्थसिद्धनवविद्याधननाऊन अन्नकविद्याधननाऊयनिवानल सुवर्णकननगनूठनाऊन अन्नकगनूठ
 नाऊयनिवानल वेधमरुतनव साक्षिरुदधव पृथ्वीरुदधव पात्रिकनव महायकनाऊनव अन्नकयक ३
 नाऊयनिवानल सन्निष्ठावर्षवयुधनयनिवानया सफरिश्चमहालाकमारुहिः सफरिश्चमहालाकसीरिहा
 सफरिश्चमहर्षिवनेः अन्नकिन्नवनेश्चमहर्वनकुरुग्रुदवनेः दिग्विधिविदिग्विधुयधियावसनसत्याव हर्ष
 धुविधुविनायकधुयनरुमहाद्विकेः सर्वधुयवर्गनाऊः वनरुतनवलाकपालन सर्वसमूहयनिवानल

विनूठकनवविनूपाकनवदधुयाधिनव नेमाकनव मागवदसाव सफरिश्चमहावायुहिः ४७ क्षाननव
 सपलिकनव अन्नकगधकाटीनियुक्तसहस्रयनिवानल नानायरुतनव सयनिवानलव दलुकनवदामक
 नवलारुकनव मारुकनव महागधयकिन्नव भवात्कनव विनायकधनव अन्नकविधुविनायकयनिवा
 नल वद्यायकाटगिर्यावचगसृष्टिरुगिनीहिः सगानकाहिः वजांकुष्माव वज्रकलयाव वहुवहिति
 धुवज्रदूमीहिः वज्रसननवसुवाकनाव मूर्धनकनव अन्नकवज्रकुलपनिवानल गदनीधुवृद्धधर्मसंघाति
 पसन्ननयनिमिगाप्रभयासंख्येदवनागयकगधर्वीसन्नगनूठकिन्ननमहानगहनधुयधियावनासायव

नक्षत्राणां साहस्रिकाष्टमं ॥ सूर्यधनवदवपुःशतं वरुधवदवपुःशतं सूर्यधनवदवपुःशतं सूर्यधनवदवपुःशतं
उपयावदवपुःशतं सर्वेषु मनुजैः ॥ आदित्याय प्रणम्य तदा वदवपुःशतं सूर्यधनवदवपुःशतं ॥ ४४ ॥ यत्पि सूर्यगवाक्षं यवलिङ्गधर्मं
वक्रं सूर्यप्रतिनिधिं न वदवपुःशतं सूर्यप्रतिनिधिं पूज्यमानं सूर्यधनवदवपुःशतं सूर्यधनवदवपुःशतं सूर्यधनवदवपुःशतं
लालकृष्णनिर्गन्धं सूर्यधनवदवपुःशतं सूर्यधनवदवपुःशतं सूर्यधनवदवपुःशतं सूर्यधनवदवपुःशतं सूर्यधनवदवपुःशतं
निर्गन्धं सर्वमानसकर्मकाविदं ॥ सर्वसत्त्वज्ञानयन्त्रं विधवक्रं सूर्यधनवदवपुःशतं सूर्यधनवदवपुःशतं सूर्यधनवदवपुःशतं
सन्नागं ॥ सर्वमानसकर्मकाविदं सूर्यधनवदवपुःशतं सूर्यधनवदवपुःशतं सूर्यधनवदवपुःशतं सूर्यधनवदवपुःशतं सूर्यधनवदवपुःशतं

आशंखययनिमानकल्यकाटीनियुक्तमसहस्रशयनशीलकाकिवीर्यधामयज्ञापायवल्लयक्षिधनरत्नपा
 नमिताइस्कनवयोविनिवर्त्तितदाविमलस्यूनृषलक्षवदुनशील्यनृयऊनालकृतग्रामारु॥ अनकवज
 नत्ववदिकासंस्कृतपादपी०स्यप्रकिष्ठिक॥ अनकवजनलमकनसखागीर्धुलाहिरमकावलीनिवद्वगधूषक
 अनकवजनलमकाकिंकिनीजालकलानादिक॥ अनकवजनलकर्षिकाविलग्नकर्कशमन्दनीलपूषागगन
 क्षिजालावरासिकसमकृपासादिक॥ अनकवजक्षलाकाविरहविमोदधुगपयकाटिनियुक्तमसहस्रकृतकृपा
 यनिकन॥ अनककल्यदूमायरगारिकविकान॥ समनूमाकुवजनलयसाधननिषलु॥ काचश्नयचक्रनाकु

वक्षिणा कलनसूर्यो सदृशानि वक्रयुगलमधुलविनाजिह्वरुमिसारगारूपनिपुण्यवन्द्यवसर्वसाकपियदर्शना
महाकलारुद्रवृद्धधर्मसंकुसमिगाधर्मदक्षयनिसमाजादोकल्यानंमश्वकल्यानं पर्यवक्ष्यते कल्यानस्वयं
सर्वजनकवलपनिपुण्यनिष्ठुर्ध्वपर्यवक्ष्यते सर्वयुकाधनिसमाजाध्वखलरुगवान्मद्वृद्धसंधनृष्टुकाध
सर्ववृद्धसंदर्शननामनभिहान्युपमश्वनिसमाजनवनभिजालनार्यदिसारुमुमहासाहसालोकधातुनवला
षिकरुदीकृताहृयावक्रिवर्गगानदीवालकायमानिवृद्धकृताधितानिसर्वाधिनतावहासनसूदन्यवहासि
गानाहवनयवकृष्टवृद्धकृष्टवृद्धाहगवहास्यकर्मिहासनकाटीनियुक्तगतसदृशवृद्धकृष्टीगानविमान

पृथग्मेदधयनिसमाजाहमहाधवकवाधिसत्येमहासत्येहिहृद्धयागकायाधिकाहिर्दवनागयकृगध्वोसृजगन्म
किन्ननमहाभरगेशसाह्वंअथखलरुगवांविस्तीर्णपनिषदामामनुयकृष्ट
यांप्रवक्ष्यामिसर्वसत्त्वानुकंपयाधानदीदृक्कृष्टोवांसर्वदृष्टयुमर्दनीयस्याधमममममयापागष्टंकिर्सीकयं
सुखदासर्वसत्त्वानांसर्वकाधियुमावनीकामृद्धासर्वसत्त्वानांलोकनारधनराधितापनिषाधायसर्वधीदहिनीया
कानिर्दीप्तनयाकृष्टनकृष्टयुविषदसनालयंअदकवर्गीकथागष्टयुद्धाधामालयंउविहृष्टनागपिषावतांयु
द्धहेनवदानृद्धाअध्यासर्वधकृष्टांसर्वरुगगरोनपिशुद्धासर्वविनस्याकिनामग्रहलकीरुनेष्टकृष्टा

राजपुष्पाभाषाः पिशाचाः अकिनीयकाः ॥ राजाह्वयमहाह्वयः हिंसकमानवीपजाः ॥ सर्वसुखिनाशानि प्रमिसनार्थं
मुक्तजसाः यत्र वक्रावितस्य निकारवादाश्च वदन्तः ॥ मलुकमोतवाधकः मूलकमोत्रमचकः ॥ न विषं न गर्भनाम्नि
न भुंने वशादकं ॥ अक्षतिविद्युत्तरश्च वाकालवायने वाधकः ॥ सर्वक्षकः प्रभानि विद्यानाह्लादिकृजसाः ॥ उपसर्गानि स्य
नित्याध्यानरुवक्ष्यति ॥ सर्वथासुखसिद्धिनिजयया प्राप्तिनिर्णयः ॥ यः कश्चिद्धानयद्विज्ञां कश्चिद्वानिर्णयः ॥
तस्य स बोधि कार्याणि ॥ सिद्धकनागर्भसयः ॥ निर्णयकृत्किद्वन्ताः नागनागसुरथेवव ॥ वाधिसत्तामहावीर्यावृद्धा
॥ यथकनायकाः ॥ आवकाः सर्ववद्वानि विद्यादद्यामहाबलाः ॥ न ह्यकृत्तुर्धनकर्म ॥ प्रमिसनाथानकस्य वै ॥ यजुया

[illegible]

तथा देवी धन्वा च विद्यमानिनी ना कस्यैक ऊय वेव वृद्धा ॥ किं कना यदा ॥ काया लिनी महा रागा धन्वा लंक ध्वनी क
था अन्वा ध्रुव ह वा विद्या सत्त्वानु य रु का निका ॥ क साने कां क निष्ठा कि य स विद्या क न सि ता हानी ती या कि क र ध्व
वर्ध विनी कूट द किनी श्री देवी धन स्व नी वे वा न न क नि स दान गा ॥ महा य नि स ना म नी या स्त्री धान य द स दा स ध्व
ति द्वि र्ह व रु ह्या पू ज ग र्हा व नि ल ध ॥ स र्व ग र्हा वि व र्ध क स र्व प स्र य कि गु र्वि धी वा ध य ध्या यि न स्र कि स र्व ध
पान र्ग स य ॥ य ध्व नी व ल वा नि र्ध न ध न्वा प व र्ध ॥ आ द य व व न ध्या यि पू ज नी या र वि षा कि ॥ ६ वि र्ध न य
क य सु क्रि या वा य नू षा र थ वा स व र व ल र्व स त्वा नी मा क ना थ स म य रु ॥ स गि क ध्रु व लि र्व स र्व वा धि वि

वर्जिर्ग ना जाना व स गा रु ह्या धा न पू न म स रु ना ॥ नि ल र्क क ल र्ग ल आ पू न मा नि वि व र्ध ॥ स र्व क ल्पा रु ह्या सि द्धा
नि प्र वि ष्ट स र्व म शु ल स र्व क स म य रु सो जि न स्र व व र्ध य था ॥ ३ ॥ स ग्रान य वा ध क स र्व या प रु नी य ना ॥ कि लि
षा र ध्रु व न स्र कि य स मि षा रु थे व न स र्व य रु वि ना धा र्थ ता पि ना रु न म रु ध्व ने ॥ स र्व का म र्नी मा धा र्थ ए व य द
नु नि ल ध ॥ ग दि द नी य व द्वा मि रु ग सं घा ध्रु धा नु म न मा वृ द्वा य न मा ध र्मा य न म र्श र्श द्या य न म र्श स र्व ग थ ग
ना नी न मा न म र्श स र्व व द्वा धि स त्व ध र्म र्श य ल ॥ क य था ॥ ६ वि पू न ग र्हा वि म लि क य ग र्हा ॥ ६ वि पू लि वि म ल ग र्हा व र्ध
आ ला ग र्हा ग कि ग र्हा न ग र्हा र ग ग ध वि र्ध ध नि स र्व या प वि र्ध ध नि ॥ ६ गु ध व कि ग ग ध वि वा नि धी ॥ ग ग नि धि

[illegible][illegible]

हा ॥ १०५ ॥ नुवनि ॥ नुवलाकिग स्वाहा ॥ नुवलाकिग स्वाहा ॥ विनूनमस्त्रगाय स्वाहा ॥ महेश्वरवन्दितयूजिगाय स्वाहा ॥
॥ वरुधनवजयाधिवरुवीर्याधिविठिक स्वाहा ॥ धृगनाष्टय स्वाहा ॥ विनूटकाय स्वाहा ॥ विनूपाकाय स्वाहा ॥ वेधमधाय स्वाहा ॥
॥ भुक्तमहाजातनमस्त्रगाय स्वाहा ॥ यमाय स्वाहा ॥ यमयूजिगनमस्त्रगाय स्वाहा ॥ वनूधाय स्वाहा ॥ मानूगाय स्वाहा ॥ महामानूगाय स्वाहा ॥ १०
॥ अन्नय स्वाहा ॥ वायव्य स्वाहा ॥ नागविलाकिगाय स्वाहा ॥ दवगल्लय १ स्वाहा ॥ नागगल्लय १ स्वाहा ॥ यकगल्लय १
स्वाहा ॥ नाकगल्लय १ स्वाहा ॥ गन्धर्वगल्लय १ स्वाहा ॥ असुरगल्लय १ स्वाहा ॥ गन्धर्वगल्लय १ स्वाहा ॥ किन्नरगल्लय १ स्वा
हा ॥ महाकिन्नरगल्लय १ स्वाहा ॥ मनुष्यगल्लय १ स्वाहा ॥ अमनुष्यगल्लय १ स्वाहा ॥ सर्वग्रहय १ स्वाहा ॥ सर्वलोकय १ स्वाहा ॥ सर्वय

कय १ स्वाहा ॥ सर्वविष्णवय १ स्वाहा ॥ सर्वविष्णवानय १ स्वाहा ॥ सर्वकृष्णल्लय १ स्वाहा ॥ सर्वयूगनय १ स्वाहा ॥ सर्वकटयूगनय १ स्वा
हा ॥ सर्वदूष्टय १ स्वाहा ॥ उं धृन १ स्वाहा ॥ उं उन १ स्वाहा ॥ उं वन १ स्वाहा ॥ उं मन् १ स्वाहा ॥ उं रुन १ स्वाहा ॥ उं रुन १ सर्वगल्लय स्वाहा
॥ उं रुन १ सर्वदूष्टय स्वाहा ॥ यव १ सर्वययर्थिकययमिगल्लय स्वाहा ॥ यममादिगल्लय स्वाहा ॥ सर्वविष्णवय १ स्वाहा ॥ सर्वविष्णवय १ स्वाहा ॥
विलागी स्वाहा ॥ कलिगाय स्वाहा ॥ यकलिगाय स्वाहा ॥ दीफकालाय स्वाहा ॥ वज्रकालाय स्वाहा ॥ मासिरुद्राय स्वाहा ॥
यकुरुद्राय स्वाहा ॥ कालाय स्वाहा ॥ महाकालाय स्वाहा ॥ मारुगल्लय स्वाहा ॥ यकलीनी स्वाहा ॥ नाकसीनी स्वाहा ॥ यक
विष्णवय किनीनी स्वाहा ॥ आकाशमारुगल्लय स्वाहा ॥ समुद्रगमिनीनी स्वाहा ॥ समुद्रवाहिनीनी स्वाहा ॥ नागीवनागी स्वाहा ॥

दिवसवनाभांस्वाहा॥ निसंधावनाभांस्वाहा॥ वलावनाभांस्वाहा॥ ज्वलावनाभांस्वाहा॥ गर्हभयः॥ स्वाहा॥ गर्हाहानिनीय
॥ स्वाहा॥ गर्हसंधानिनीयस्वाहा॥ रुलः॥ स्वाहा॥ उं स्वाहा॥ रुः॥ स्वाहा॥ रुवः॥ स्वाहा॥ रुउवः॥ स्वाहा॥ विटिः॥ स्वाहा॥ विटिः॥ स्वाहा॥
धननीस्वाहा॥ जग्निः॥ स्वाहा॥ रुजावायुः॥ स्वाहा॥ विलिः॥ स्वाहा॥ शिलिः॥ स्वाहा॥ मिलिः॥ स्वाहा॥ वधः॥ स्वाहा॥ मिथः॥
स्वाहा॥ मधुलवः॥ स्वाहा॥ धीर्मावः॥ स्वाहा॥ सर्वधः॥ पुनः॥ यः॥ स्वाहा॥ ऊरुयः॥ स्वाहा॥ सुसुयः॥ स्वाहा॥ श्लिन्दः॥
स्वाहा॥ हिन्दः॥ स्वाहा॥ रुः॥ स्वाहा॥ वधः॥ स्वाहा॥ मारुयः॥ स्वाहा॥ मणिविशुद्धः॥ स्वाहा॥ सूर्यः॥ विशुद्धः॥ स्वाहा॥ वन्द्यः॥ पूर्वः॥
वन्द्यः॥ स्वाहा॥ धानिः॥ स्वाहा॥ विः॥ धानिः॥ स्वाहा॥ ग्रहः॥ स्वाहा॥ नक्षत्रः॥ स्वाहा॥ शिवः॥ स्वाहा॥ धानिः॥ स्वाहा॥ यः॥

ॐ स्वाहा ॥ स्वस्वयन ॥ स्वाहा ॥ शिवं कनि स्वाहा ॥ शं कनि स्वाहा ॥ शान्तिं कनि स्वाहा ॥ पूष्टिं कनि स्वाहा ॥ वलवर्द्धनि स्वाहा ॥ वल
वर्द्धन कनि स्वाहा ॥ श्री कनि स्वाहा ॥ श्री वर्द्धनी स्वाहा ॥ श्री कालिनी स्वाहा ॥ मवि स्वाहा ॥ नमू वि स्वाहा ॥ म नू वि स्वाहा ॥ वि
गवनि स्वाहा ॥ ॐ सर्वगथा गगनमूर्धं प्रवन्न विगगरुय समयस्व मरु गवनि सर्वपापं स्वस्तिरु वरु म म सर्व सत्वानां च
स्वाहा ॥ ॐ मूनि २ वि मूनि २ धलि वलि वल नरु गवनि रुय विगगरुय रु नि धि ॥ वा धि २ वा ध य २ वृ धि लि २ सर्वगथा
गगनदय रु रु स्वाहा ॥ ॐ मूनि २ मूनि वन ३ रि धि वरु कु मी सर्व सत्वा ॥ सर्वगथा गगा १ सर्व वि शारि ध के र्म वरु क व व म
डामूदिने १ सर्वगथा गगन दया धि धि वरु स्वाहा ॥ ॥ समरु काला माला विष्णु द्वि सु नि क वि ना मालि मदा

वैचिकित्सिष्ठं ॥ अथ कर्तव्यं नृपसद्वर्तनं नृपविमलं छिन्नाभाया विजायति वसति स्म ॥ महाकनूषासमन्वा
 गमा ॥ रक्षात्रियं महाविद्यानालीजिह्वायह ॥ साकस्थानिकमयसंक्रान्ताउपसंक्रान्त्यमां महाविद्याप्रवर्तयाम
 स ॥ साकथेककलायां मनुस्मृत्युक्तमात्रयानिर्विषयस्मिन् प्रकिलर्षं कृत्वा गतामहाव्यवधानाद्यनिमावयित्वा ॥
 सामवच्छिद्यैरुमहाविद्यां रुदयगतां कानयति स्म ॥ यथाविधि नद नृणां मित्रि ॥ अपि च महावाग्मना
 किंपनिष्कृतमिति ॥ वानाधस्यां महा नृपया मनुपूर्वधनान् विवर्ज्य मास्वा नाजावृक्षदरुनि संख्या गच्छति
 भाग्यप्राप्तिमीमिकावलचक्रमावावतुर्न गवलकायं सनादुवा नाधसी महा नृपनीयनिवार्य विना भयिष्ठमानसा ॥

१३

गता नास्ति वृक्षदरुस्यासाद्ये निवदितं ॥ दवय नवकंधन गत्रमयहर्गं कलि नृवल्लवयमयायं कुर्यामायने वनखनव
 विनस्यत ॥ आरूपाय यच्च ॥ नाजाकथयति ॥ अस्यां सूकाहवनामारवक्त ॥ अस्मिन्मम महायति सनाताममहाविद्यानालीय
 नारुमिर्मवतुर्न गवलकायं यनाज्यामिरुष्मीकनिष्ठा मि अमास्या भिनसाय लिप्यावृक्षकिमिदं महा नाजनास्माहि ॥
 कदाचिदपिन भूतमिति ॥ नाजापारु ॥ अरुमिदानीयत्तु नृर्न नंकनिष्ठा मि ॥ अथ सनाजावृक्षदरुना नागारध्वादकनसा
 ग ॥ निना ॥ विवर्ज्य पात्रस्य ॥ मां महायति सनां महाविद्यानालीयथाविधि नाहिलिख्य भिनः कार्वा श्वस्य मां भवमहाविद्या
 नालीकवर्चनं कृत्वा सप्रमत्तश्च श्वरीर्युक्तो किनेव सर्वैरसौ वतु नृवल्लकाय ॥ यनाजिह्वा ॥ अमर्दिनश्च तावथावच्छेद

लंगतः॥३॥ निरुत्ता सो वल न क ना जामूक नि कि॥३॥ वं हि महा वाक्क लय लु नू ला वयं महा विद्या ना ह्री सर्व कथा गत हृदय म
 दा धि वि ता य लु न न नि धा न यि ग वा॥३॥ सर्व कथा गत स मे वा ड हृ वा॥३॥ य श्चि म काल य श्चि म सम य ३ ल्या य कानां म धु पु न्या नां
 म न्द रा ग्या नां प नि रु हा ह्ना नां स त्वा नां म र्था य हि ना य स र्वा य ड हृ वा॥३॥ य ४ क श्चि त् महा वाक्क ल मां महा विद्या ना ह्री य था वि धि
 ना लि खि त्वा वा हो क २४ धा न यि य नि॥३॥ स सर्व कथा गता धि वि ता व दि ग वा॥३॥ सर्व कथा गत का य ४ नि व दि ग वा॥३॥ व रु का य
 नि व दि ग वा॥३॥ सर्व कथा गत धा नु ग र्हा नि व दि ग वा॥३॥ सर्व कथा गत न य ४ नि व दि ग वा॥३॥ क लि ता र्चि ध नी न नि व दि ग वा॥३॥
 अ रु द्र क व व नि व दि ग वा॥३॥ सर्व भ क्त्वा य मी ध न ४ नि व दि ग वा॥३॥ सर्व पा पा व न भ नि र्द ह न नि व दि ग वा॥३॥ सर्व न न क ग

१४

नि र्वा ध न नि व दि ग वा॥३॥ कि मि नि पू र्व य नि र्वा नं महा वाक्क ल अ न्य क म स्मि न्य द २४ हि रु न धा र्द स था गत कू ल नि दा ख २४
 का ३ द रु दा यी मू र्वा य दान रु न क ४ सां धि क व भ उ र्द नि कं सो पि कं ग ल पा क च य ड व न लो की लि कं कू ला सर्व म धि ष्ठा य त
 रु य नि॥३॥ या व द य न भ स म य न म हा वा धि ना स्य ४ म रु ती ३ ४ र्वा व द ना ३ न रु व नि॥३॥ स ग य स्वी अ ग ल ३ य ना य २४ ३ य नि
 धा न २४ म हा क म क्रा ध ना ध रं क ना नि॥३॥ अ थ त स्मि न्न व य थि वी य द २४ उ पा ध का वा क्क ल य नि व स कि॥३॥ न न क द्वा य ४ ३
 ला व पु न र्थ म स हि रु रु ना य र्सा का ना य र्सा क म्प न स्य हि का नि मां महा य नि स नां महा विद्या ना ह्री लि खि त्वा क २४ व धा नि
 स्मा॥३॥ स म न क न व धा यां महा य नि स ना यी महा विद्या ना ह्री स्य हि का ४ सर्व व द ना य धा ना ४ सर्व वा धि ल ४ य नि म क ४ स

सुसंवृत्तः ४४ मि॥ कस्याऽवनाशाऽस्य यास्य पृथिविस्त्विति यकिल च ४ कालगणः ४ कस्मिन्नवकठवनउत्सृष्टः ३ वीचो महाननकः ३
पपन्नः ४ कञ्चनस्य मृगभानां हि कुरिः ४ कृष्टस्त्वपिर्न ॥ साकस्य महाप्रति सना महाविद्या क २४ वद्वे वास्विता ४ समननभाययन
स्यतस्य हि कास्मिन्नवीचो महाननकः ३ वानानका नां सत्वानां सर्व इ ४ खा ४ प्रभाता ४ कञ्चनानका सत्वा ४ सर्वसर्व समर्पिता ३
रुवन ४ भवतमहाकञ्चावीचिका ३ गिरिस्त्वस्त्वपि सर्वसर्व य ४ भाता ४ ४ मि ॥ अथ कञ्चनपूना विस्मय मायनायमस्य ४
मनाजस्य मन्त्रिष्वयं विस्मयनाभावयति स्म ॥ अकिविस्मयमिदं ददद्व्यकननकर्णकट ॥ प्रभाता दानू ४ इ ४ खा ४ सत्वानां
कर्मजा ४ य ॥ प्रभातास्त्वपि वागाना ४ ददद्व्यकननां सदा ॥ कनपयानवाधक कनधानानसर्जन ॥ अय ४ भाता लया रुग्ना

१५

४ प्रभाता लारु कं रुय ४ ॥ अक्षियववनपयानवाधक कर्मजायुन ४ ॥ यमसंधर्मनाजामिधर्मलभासं यमप्रजा ॥ ४ दनु कान
ननाला मस्माकं वकुं मरुति ॥ कगा ३ सोधर्मनाजा वेधर्मात्मा धर्मनिश्चय ४ ॥ कनू ४ गयनरुनी वार्क ४ खेदमी दर्ग ॥ किमगल
४ थका गीर्ध कथनिविवावदत् ॥ ककसु इ ४ सुकानायायमरुत्या सुदा नू ४ ॥ यमस्य धर्मनाजस्य ४ दववनमकवन ॥ अय
दवमहा सत्व उत्ताननकर्णकट ॥ अवीचिर्यस्यानामदं कनासोननकर्णकट उचार ॥ कर्माक्षयस्य वेविगीसना यदिसरु
कता ॥ सुखिना कस्य सर्व कपूनर्या कि सुनालयं ॥ यमापि धर्मनाजा वे ४ द्वावदकि विविभिर्न ४ ॥ मरुर्द्विकार्यं मरुद्वा स्य भानी न
योर्धर्मिक ॥ यथा धातुर्गर्भे नृ ४ ॥ सूर्यसंसारु विष्णु न ४ ॥ कथास्य सारु ककाय ४ य कि सुनाव क ४ ४ ॥ अथ कननेकया

या नहि मिमिले १ सा ३ स्या पाता ३ वष्ट ३ ॥ विना हयि कुं कार्मा नागाश्च संक्रुष्टा मदान गऊं तासु टं कुर्वन्ति विश्व ॥
नरुजानि ॥ वजा धनिपवर्षा यि तु मान द्या ॥ नरुक्त वलिजामदगा ३ ॥ खनात्या रुत विलासं मदानं नागसं दारं विश्व
इत्का वजा धनिवात्सु जानि रेश्वरि मिमिले १ याग मवष्ट ३ ॥ दृष्टमदान मूका धना धर्दं कर्तु मान द्या ॥ नदवता विलास ॥
यावय कि ॥ नवकश्चि रुषी य निशा र्धं व कि ॥ नरुक्त सार्थ वारु स्या य म मा क नू १ ॥ मिद व व न म क्र व न ॥ य निरुना य
स्व महा सत्त्व भाव या सात्त्व सा र या रु ॥ अथ खलू महा सार्थ वारु दृष्ट विलास महा म कि ॥ वलिजा विल्लु वी हत्वा निद व व
न म क्र व न ॥ मोर र्च सि जा रु व ना धी न गा व रु न ॥ अहं वा मा य यि द्या म् ३ ॥ ३ ॥ ख म दार्धु वा न ॥ न गा धी न म न सा हत्वा

वलिजु विदं व व न म क्र न ॥ कि म न रु न म हा सत्त्व क्रु हि धी घ म वि द्रु ग ॥ जा व जी वि न म स्ता कं ल त्पु र वा त्म हा म न क
थ गी ज्ञान महा सत्त्व यश्चालं किं क निष्प सि ॥ न १ ॥ सार्थ यं निरु र्पा मि मां वि या म दारु न रु ॥ अ कि म म महा वि या य कि स ना
ना म वि द्रु गा ॥ म द नी स र्व दृष्टा नां महा व ल य ना क मा १ ॥ न ना रुं मा व यि द्या मि ऊ ना ३ ॥ ख म दार्धु वा न ॥ न गा म हा सा
र्थ वारु सत्त्व व ला या मि मां महा य कि स नां महा वि या ना रुं लि खि ला ध जा या व ला पि नां क ना मि स्म ॥ स म न क न
ध ना य व ना पि ना या म स्या महा य कि स ना यां महा वि या ना रुं स र्व व रु कि मि जि ला र्धं या ग म क जाली रु र्म य ष ॥ कि
॥ न रु क्त ना गा १ ॥ म न म न स स्या म कि क ३ व नी र्थ पू जा क रु मा न द्या ॥ न व नि मि गिला ३ स्या महा य कि स ना या महा वि

द्यानाङ्गनननवनदक्षमानापयलायिनाविलयंगताः॥ नवसार्थिकास्तैर्महानागेर्महतिनलक्षीयपापिताः॥ निः
नवनीयमहाविशामहायमिसनासर्वतथागताधियिगनरुतनामहावाक्कमहाविशकिख्याताः॥ गम्मादवसास
मवयंभजायावनायिगांक्रला॥ धानयिगवा॥ सर्ववागसीनाकालमद्यविश्वदर्शनीयमयकि॥ सर्वदवमनूयामनूय
विश्वविवाहवृषनिभावयकि॥ सर्वदर्शमसकलमसकलनरुपाकजागाविविधवृषाणस्यविनाशकानप्ररुव
मिप्रमसंगककि॥ सर्वद्वष्टविलासगपकि॥ द्विष्टिनाविनक्षकि॥ सर्वविषयकूलपणवनस्यथावधिषास्यादीन्य
हिवर्द्धन॥ सूनसानिस्तान्निवरुविषयकि॥ सम्यग्गवपत्रियाविनातिरुचिष्यकि॥ नूतिदृष्टानादृष्टिषाः॥ सर्वधर्म

१८

वनरुविषयकि॥ नाकालनष्टि॥ यवनसिंविषयमहानागास्तैर्महानागवकालनकालनवर्षधानाडप्रयानि॥ यस्मि
न्विषयः॥ यंविद्यानाङ्गीमहायमिसनानामयवनिषयकि॥ कुरुते॥ सत्वेकालापूजासंस्कारनैकलानानागंधेनानाधूप
नानावस्तु॥ यनिवष्टुमित्वावेष्टुस्थायनिधुजायावनायिगांक्रलानानावाद्यरूपसंगीकिरिवाद्यमानाहि॥ प्रदक्षि
करुया॥ गनस्तुमामहामत्तानीयथाविंकिरुमासांयनियूनयिषयकि॥ दवगाशकवक्रप्ररुतय॥ अथवायथायथ
विधिनाहिरुगनथागथासमृद्धा॥ पूजाशीलरुतयुक्तुं गर्हसंधानदीयना॥ सुखनवर्द्धनगर्हसुखनवयय
यक्तु॥ कालनवर्द्धनगर्ह॥ कालनयनिमृशक्तु॥ किमिकिमहावाक्कलपूर्ववक्तुयताः॥ रुवमगधविषयनाजाय

सा निगया धिर्नामसना युरुकावरुवः॥ किमिनिप्रसा निगया धिनि किख्याकवानः॥ कतनाह्ला जागमा कथया धिप
सार्यमा उरुनो गृहीत्या यावदाकं क्षीनयीकं॥ कोचरुनो सदस्यर्षक्षमा प्रक्षसु वर्धुवः सुसंवेत्ते॥ निखकाले वमदगाक्षीन
क्षयवर्द्धनः॥ कतना नरक्षनरस्य नाह्ला प्रसा निगया धिनि किनामस्य पिनः॥ अनाचरुस्य नाह्ला यदा याचन कजना आगच्छ १६
किरदा सना जादक्षिण्या धिप्रभा नयं त्यपर्यक्त निक्षवा धिसुखः॥ सना जा कन रुडना कस्य वृद्धा हि प्रमना दवरु दिव
वल विरक्षयेस्तु वर्धुमक्षि हि श्रया धीप निपू नयनि॥ कदा सना जा कत्या याचन कजन त्याः॥ नृपयच्छुक्तिः॥ यथा विनिग
मा कथ सर्व याचन कजनानां सर्वसुखसमाहिका मांद दानि दवाना क्रमहा किपूजा सत्याना धिकना किपू रुदगान्नवपू

[illegible]

दाममकिचिरुविषयिकदहंधर्मपूजयिष्यामि। नस्यगृह्यापानं कर्त्तव्यमाधर्मकशृङ्खलाजावदयनकालसमय
नरुषिनाएकादीनानादरुषासकनसर्वसत्यनिगार्थवाधिविरुमयायसर्वसत्यसाधनसंकला। महाप्रति
सनानलकिनिर्झकिता४। उर्वयधिधानं कृतमननमहाकूलनमसर्वसलानावशानिउदइखसमूहदस्यात्
अननका नरुषनकदानं पनिरुयन्नगकृकि। उर्ववहविधानकविधयूयाहिसंस्तानकृतादवनाध्वयूजिताय
वहद्वारुगवकायूजिता४कदावसद्वावासायिकाहिर्दवनाहि४खप्रदर्शनरु। उवकाहिरिकंतामहावाज
समकला मालाविष्टिस्त्रिनिविकामक्षिमहामूडादृदयापनाकितामहाधनक्षीमहाविशानाक्षीम

२०

हाप्रतिमानामतायथाविधिनाहिलिखयथाविधिनाकस्याहिरिकउयवारुषामितायाऽयमहिष्यादव्याक्षनीनव
धाकुरुपूजयिकिलंकारविषयीकि। अथसनाजायकिविवहकस्याभवनाशामत्यथनसंख्यालिपिनक
ग्रहविषयकाकूलवाकक्षान्नियात्ययथाविधिनाहिलिखामा महाप्रतिमानी महाविशानाक्षीक४वह
वानहमीमहावृद्धययूजामकाषीत्। अननानिवनलविष्णानिसलानांदानातिदलानि॥ कनानवा
नीमासानांमत्ययात्पूजागाहिनूय४याक्षादिकादर्शनाय४यनमयाधुरवर्धयूकलरुया। समन्वयगकृकि
गालामहावाकक्षसर्वकामरुमाश्यनाकितामहाप्रतिमाननलकिविष्टिनामहाविशानाक्षीसर्वतथागकय

जिगाधकस्यापीयं वृक्षा मतिः सर्वथा यदा एका दवानामिन्द्रा महासंयममस्तु नेः सार्धं कर्तुं कामस्तदा ॥ मा भव
महाविद्या कवचं कला संयममस्तु ॥ वतीर्य वृक्षा यामवस्तु सत्त्वा सुना त्रिङ्गुल्य सर्वस्व क्लिनां क्षमन दव पूनं पु
विशक्तिः ॥ सर्वसूत्रे नष्टकारु विषय कि ॥ एवं हि महावाक्कषयथम विहात्या दमया दायवाधिसत्वस्य महासत्वस्य मां २१
हय किं सुनां महाविद्या नास्तीत्यनय कः सर्वसा नेन धृक्कारु विषय कि ॥ एवं हि महावाक्कषयथम विहात्या दमया दाय
यवाधिसत्वस्य महासत्वस्य मां महाय किं सुनां महाविद्या नास्तीत्यनय कः सर्वसा नेन धवमृशकारु वकि ॥ यस्यैषां काय
कः ॥ गगारु विषय कि ॥ सर्वरथा गगा विष्टि कारु विषय कि ॥ सर्ववृक्ष वाधिसत्वस्य न किं कारु विषय कि ॥ सर्वदव मनूयाम

नृष्य नाऊ नाजा माय वाक्कषय हस्य किं हि श्वसकं संमिगं वदित ॥ पूजित ॥ सन्मानिगाह विषय कि ॥ सर्वदवा सन गनू
किं ननम हान गात्य चित् पूजि कारु विषय कि ॥ समदा सत्व ॥ क्वावरु गवाना नवल प्रमर्दक ॥ सर्वव्याधि विगनाह
विषय कि ॥ सर्वत्कप दवा पसरगा श्वस्य पक्षाम्य कि ॥ तस्य महासत्वस्य सर्वरक्षा क विगमाह विषय कि ॥ सर्वदव
ता श्वस्य धनं संमिगं नका वन धगु फी सं विधा स्य कि ॥ ५० मानि वा नन वलार्य पना जिगा महाविद्या मं पद
हृदया नि सक्तं संमिगं लिखित्वा काय कः ॥ गगानि क्वाधा नयि क्वा नि सक्तं संमिगं ॥ मनसि कर्तुं व्या नि स्वाधा
नया निहा वयि क्वा नि स्वाधा ॥ धनं सर्व ॥ स्वप्न इति मिहाम क्वा लवा विन स्य कि ॥ सर्वसुखं संपरु यश्च पाद

22

दशनावृद्धकृत्यमगदिकिज्ञानं॥१॥ यं हृदी वस सर्वरुथागरेष्वर्धसिक्ताश्नुमादिता व्याकृताय नम इन्द्र हयं म
हाधानं॥ यनाजिनामहाप्रतिमनाममरधयं शुभममृषिपनम इन्द्र हं॥२॥ यं सर्वपापकृपकनीमहावलप
याक्रमामहारुजामहापलावामहाउल्लाहावनी सर्वमानकायिकादवताविधं सनकनी॥३॥ सर्ववातनानुस
धिसमृद्धाटनकनी॥ सर्वमानपाथसमृद्धनकनी॥४॥ यनमनुमृदाविषकास्वादकिन्नलययोगविधेय
हियनकातावरइष्टप्रिहानीविधं सनकनी॥५॥ सर्ववृद्धवाधिसत्त्वाय गहवन्नयूजाहिननानां पत्रियालनकनी॥६॥ महा
याताय हललिखनवावनप० नखाश्चायनश्रवणधनलहियकानां पत्रियालिकयं महाधानलीयावृद्धवाधि

पानि पूनयिशीयं महावाक्कम महाप्रमिस नाम महाविद्यानाह्नीन कविचुकिहयन सव्वरु वमहायू जांया प्राप्ति यथा
 हंशाताकि विविधिषथकिमिनिपूर्वय निरुक्तवगीयं महाविद्यानाह्नीन सव्वविघ्नविनायकानां विधं सयिशीयदावरुग
 वाचियूलयुरुसिरुवदनमलिकनकनलाहलनभिपलासात्करीगनाऊरुथागताऽरुनाम्यक्रीव द्वायनवाधिसधु
 रुनापसंक्राकायसंक्रम्यसर्ववृद्धयसंरुंधर्मवक्रंयवर्लियिहुं कामरुदागुस्यरुगवरुऽसर्वमानेऽसंयनिवाजेनने
 कमानकाटीनियुक्तमसहस्रयनिवृत्तनाना नूपविनुयहयहे नवक्षयाकुलेर्वह विविधमानविषयविक्रवेषाधिक
 नाधिष्ठिरुनानायरुनसवृष्टीरि निर्मायागल्यवहुर्दिक्षीयनिवार्यकनायऽकर्तुमानशाशाकगऽसरुगवांविपूल

२३

यरुसिरुवदनमलिकनकनलाहलनभिपलासात्करीगनाऊरुथागताऽरुनाम्यक्रीव द्वायनवाधिसधु
 नाह्नीमनसासककल्यवर्लयासाससमनकनयवर्लिनायामस्यां महाप्रमिसनायामहाविद्यानाह्नीन ह्नादवसव
 ममानाऽपायीयांसाददसुर्गवरुनर्ककस्माशमविवनादनककाटीनियुक्तमसहस्रयनिवृत्तनाना नूपविनुयहयहे नवक्षयाकुलेर्वह विविधमानविषयविक्रवेषाधिक
 वचानां कलि रुवक्रयनभुयाभमरुना विविधभूलरुक्तानां मववायंययाहूनमानानिर्गन्तुकिगृह्णरुवचरुऽइष्टमाना
 विधंक्षयऽइष्टयुरुविघ्नविनायकानां यिरुगवगाविहृण कूर्वकिगृह्णरुवचरुऽइष्टमानाऽमेशीरुवक्रनाहिनिरिर्जिना
 कलाकविचिह्नापदानि गारिनाकविदिद्यानरुनायां सम्यक्वांवाऽभेदाहनारुमहानूलावाऽह्नायपनरुक्ताकथाग

गतनामविवनादिनिर्गतामहायुनृषांष्टुष्टागस्मिन्नगत्रविकलीहृगासद्विपनिहीनानृषयकिहानवलपनाकमाविधः
 स्नातमस्नातययलीताहंकिगगगगवगाधर्मवक्रंयवलिर्नयथातोवृद्धेनिनि॥सर्वविघ्नविनायकामानाध्यायीयासा
 विभक्तयित्वालीधुयानगरकि॥उर्वहिमहावाक्त्रमहावलवगसद्विमानमितायाफर्यमहायकिमनामहाविशानाही २४
 स्मनक्षमाक्षमसर्वयगतनरुयहेनवत्यष्टयनिभात्रयकि॥आक्षययनिष्ठुज्ञानानात्रासांष्टुवगसां॥कस्मरुहिमहावाक्त्र
 नित्यमवानुस्मनक्षमाक्षमनसिकरुवासासर्वकालकलिलित्वाकायक॥गगांकृत्वाधानयिकवाकिमिनिधुर्ववक्त्र
 गांडक्यनामदानगर्यनाह्लावक्त्रदरुम्यविदिक्कनवित्युनृषतापनाद्वक्त्रशासनाह्लावक्त्रदरुनवधकयुनृषयनाह्लावक्त्र

हवनागच्छनेनयुनृषंकीविताज्ञापनापयकि॥अथरुवधकयुनृषासंनारूपाहंयुनृषंरुहीत्वापर्वगविवननीत्वाशुभिका
 क्षान्तिष्ठास्यंनयुनृषंकीविताज्ञापनापयिष्ठमानक्षा॥कदासपुनृषहंमांमहायकिमनांमहाविशानाहीमनसास्मरुवालिलि
 ताकदद्विहवाहोवधाधानमकिस्म॥कस्यामहासत्यमहाविशयायलवनागिनकहालीहृगाखलुखलुयथापाठुविकी
 लुकि॥ककसवधकयुनृषाहंमाभवेनिष्ठुयंनारूपाविमनक्षानावयामीसक्षाकनाजायकूपिकध्वंरुक्कथयकि॥गच्छ
 कायुनृषाअनारुमस्मिन्नुद्वेष्टयद्वुलाकि॥कवद्वुनिवयद्वुक्षकसरुआदियकिवसकि॥पिनिताहीनिकुनीत्वाअनयकक्षक
 ॥सपुनृषसर्वधकयुनृषकस्यायद्वुहायांक्षानिकक्षमनकनक्षानिस्मिन्नुद्वेष्टयद्वुहायांक्षानिकक्षमनकनक्षानिस्मिन्नुद्वेष्टयद्वुहायां

पुष्पाविनामानं रूपायिनामसुक्तिः। न पश्यन्त्यासामहायकिसनाया महाविद्यानाह्ला ननु तावतं नृपं नृपं मकलालीक
 रं ददीयमानं विग्रहं दृष्ट्वा व सर्वत्र वरुयकाः ४ सकलादस्मानास्वहानी नृपस्य निः। अथ नृपका विस्मयमायनास
 पुनृषं गृहीत्वा वरिष्ठा नवस्य ययदक्षिणी कुरुमाना ४ यावत्तुर्वधकपुनृषं ४ नाह्ला निश्चयार्थं विस्तृतं नाचिन
 ४ न गौरया नाजायकृपिगच्छुः कुरुकथय निः। यथर्वत्तुका गच्छुः नृपं वधानां यद्विपक ४ नृपः सपुनृषः
 र्वधनं यद्विपक ४ स मनकनयद्विपकस्मिन्मायपुनृषसा नदीनि नृदकीरुतायथा सपुनृषस्य नगकनवं किञ्चि
 नानि च वधना निखधुखधु विवृष्टिगानि नाह्ला भर्तृगता नाजा विस्मिता र्वद न कथय निः। अह्ला विष्मय मि

दं पुनृष दृष्ट्वा न किमनुकानं ॥ स्यादिति मविकर्त्ता ४ अथ सनाजा नृपं नृषमाहूयेव माहूः किं त्वं ता पुनृष जा ना
 सि। सपुनृष उवाच ॥ नारुं महा नाजा कि विदयि जाना मि। अननुमदाय किमनामहाविद्यानाह्ला भानया मि। न
 स्या नृषय एव ता नाजा आहूः ॥ अह्ला अश्चर्यमिदं महाह्ला विद्याह्ला विना ॥ माहूनी मरुदृष्ट्वा स च वृद्धे न धिक्कि
 ता। गानधी सर्वसत्त्वानां सर्व ३ ४ यमावनी ॥ महाविद्यामहा नृजाः कालमृष्यमावनी ॥ लाविता कानुलिके नृत्थि
 र्महा नागनिवा निधी ॥ नगा नाजा यदृष्ट्वा मानमनमहाय किममहाविद्यानाह्ला पूजिता ३ रि नृदिता ॥ नृस्य पुन
 पस्य पदवर्द्धं कृत्वा स्वस्य जनपदस्य पुनृष नगनज्जुता या मरिषका दल ४ नृवदिमहा नाह्ला ४ यं महाय

निस नामहा विद्याही सर्व उ मनी पू जांल रुत अनिके कमधी या सर्व दूष्ट विरुद्धासत्वे ४ पूर्वभियं प निरुद्धा मा महावि
 या नाहीन क्वचित्पु कि रुत न रा रुत्ता द वस्य मिय काय कंशु गतां कलाध नयि न वा ॥ अ पितु महा वा क्रोध स न रु
 क नयं महा विद्या नाही स य स रुत विधान न लिखि न वा ॥ अथ स महा वा क्र ॥ धा नी व प रुष्ट मान स न रु ग व नै य
 ५ म म्बुल क ना हि य क्ष म् ॥ प्रष्ट मान भ ॥ की द र न रु द रु ग व विधान नै य महा प कि स नामहा विद्या नाही लिखि
 रु वा ॥ रु ग वा ना ह ॥ ७ म्बु महा वा क्र ॥ धा नी व प रुष्ट मान स न रु ग व नै य महा प कि स नामहा विद्या नाही लिखि
 व्याधि ना ना क्र मा क्ता र्थ की धा ग र्ह म्बु र्वा रु विद्या कि व स त्वा ना द निघ व क्ष ना रु र्वा ५ य वा र्धा पि ना रु त्वा न रु रु प य

सं म रु ॥ वृद्ध पूजा य ना रु त्वा विरु म्बु त्वा य वा ध य रु ॥ क नू धा म्बु रु विरु न मे ॥ वा यि स म चि न ॥ १ ॥ रु ना धा न य न मं ध्रा पि स
 र्च स त्व वृ नि र्द्य ॥ १ ॥ रु त्वा त्वा र्च न क र्प नै र्क रू नी स लि ल न व ॥ ७ ॥ वि व रु ता नि या वृ त्त धू पि ना नि व धू य नै ॥ १ ॥ रु ना म्बु ल क रू
 त्वा म्बु रु म य स म चि न ॥ ४ ॥ पू र्धु कू रु ध व रु न ॥ ४ ॥ य क र्म म थ म्बु ल ॥ ५ ॥ य थ धू या ध म्बु ॥ ५ ॥ द रु वा रु म हा नि रु ॥ ५ ॥ य र्च नै व रु नै व
 व रु क्ता रु नू रु र थ व व ॥ ५ ॥ य क र्म क ना रु नू रु ॥ ५ ॥ द रु वा रु वि धा न रु ॥ ५ ॥ ना ना वि धा नि य णा नि य थ कालै य थ वि धि ॥ ५ ॥ स र्च
 पू र्ण रु ले र्च ॥ १ ॥ ग र्ध ॥ ५ ॥ पि स म रु ता न ॥ ५ ॥ द रु मा कि क इ र्ग ॥ ५ ॥ य व क ॥ ५ ॥ पा य सा दि हि ॥ ५ ॥ पू न म द लि कू रु ॥ ५ ॥ ल रु ॥ ५ ॥ य
 स म रु ल ॥ ५ ॥ य प य च रु ना दि रु प क र्म म थ म्बु ल ॥ ५ ॥ य प नी या र ॥ ५ ॥ ना वा ध का र्ध ॥ ५ ॥ य प नी या र ॥ ५ ॥ ना वा ध का र्ध ॥ ५ ॥ य प नी या र

29

[illegible]

महानागेर्यथ दक्षानाजयन्नामः ॥ १ ॥ नववहविधाहया गच्छुलटाविवर्तिकाभा ॥ २ ॥ यदादानूत्ता यवयसक्तमानुषीयजो
मनूषाणां विनामार्थं हि स काश्चिदसदा नृणां सर्वकृत् प्रलयं याति न क्वायकुमहावलाशा न योक्तु न क्कु वध्य प्रोक्ता वि
मत्यग्ना यदि यष्टकाल पारं न नीरु श्रियि यमालयं ॥ ३ ॥ आयुस्तस्य विवृद्धे रु १५ किं स नालिखतादपि ॥ ४ ॥ यनि कीलाम्य
षायस्तु सफा रुमृगवववा याव त्तिखिक माकुल स जीवनी नर्णसय ॥ ५ ॥ अथवा वलमाकुल कृम नका विधानमक्ष
स्वकि प्राप्ता कि सवेय सखं जीव कि वयया ॥ ६ ॥ अष्टवष्टा सह आति काटी नित्य रुधनानि व ॥ ७ ॥ य किं वचय दवा ॥ ८ ॥ स
वेध कय नागमा ॥ ९ ॥ नकार्थ कस्य सखस्य पृष्ठ ॥ १० ॥ समुप सिता ॥ ११ ॥ चत्वा नाला कया लाध्ववजया लिमहावल ॥ १२ ॥ विद्या कला

३०

भक्त ॥ १ ॥ सच्चि नन्दा कूर्च कि नित्य ॥ २ ॥ साम ॥ ३ ॥ समना सूर्यश्च वक्रा विष्ट मरुध्वना ॥ ४ ॥ यमश्च माति रुडश्च वल दवामहावल
॥ ५ ॥ यूलु रुडामहावीना हानी नीवस्युष्टिका ॥ ६ ॥ या वल ॥ ७ ॥ या विरुक्ते वकारि कया गल ॥ ८ ॥ धन ॥ ९ ॥ धी नपि च महादवी
वेधमल ॥ १० ॥ सनस्वनी ॥ ११ ॥ र्विनी कूटदनी वरुथे वेकजाटा पिव ॥ १२ ॥ धन्या ॥ १३ ॥ नगां हामरागा नन्दा कूर्च कि नित्य ॥ १४ ॥ खलु
नीयुजुननी गरुह्य न विवृद्धनी ॥ १५ ॥ नक्षयं महती वा स्म याव जीवं रविष्यति नाना ॥ १६ ॥ जयदा नित्यं यद्धर्मग्रामरुनव
॥ १७ ॥ नयावनदाह कि दवगा धर्म निष्ठिका ॥ १८ ॥ अथ पाप विनाश लिखना दवसत्य कि ॥ १९ ॥ गगा विला कति वाधिसलासा ॥ २० ॥
ववयगश्च वद्धकस्य युनमायुश्च वद्धक ॥ २१ ॥ धन धन्य समुद्विष्ट रविष्यति नर्णसय ॥ २२ ॥ सखं स्वपि कि मया वी सखे कयति

वृद्धावस्थायाः सर्वं भूयः सर्वं रूपांशं नयिष्यामि सर्वं मानसं च यत्नं च निर्वृत्तं विद्यामाध्यात्मनायाः मित्रं
नक्षत्रं नक्षत्रं ॥ सर्वं साधयन् विद्या विद्यामं नरविद्यामि साधयन् विद्यामि सत्त्वकल्याणं प्रविष्टं सर्वं मन्त्रं लक्ष्मीं कृपया समय
क्षीणं रविसत्त्वं जगिष्यामि विद्यामि सत्त्वकल्याणं प्रविष्टं सर्वं मन्त्रं लक्ष्मीं कृपया समय
शिवमायायां सर्वं साधयन् विद्यामि सत्त्वकल्याणं प्रविष्टं सर्वं मन्त्रं लक्ष्मीं कृपया समय
दानं रूपांशं सर्वं रयं विनिम्नं कृत्वा नार्कं च वर्नयथा ॥ नित्यं जातिस्मना कृत्वा जातिं जातिं जातिं सय ॥ नानावर्णं
रूपांशं ॥ पद्मं रूपांशं ॥ सामाख्यं रूपांशं ॥ साधयन् विद्यामि सत्त्वकल्याणं प्रविष्टं सर्वं मन्त्रं लक्ष्मीं कृपया समय ॥

[illegible]

32

छन॥ घानि विवित्रि विप्रवन समन वधुलि मार्गं गि नूचसि सन विवर्चसि समनि पूका सिवा वनि भावनि भावनि विदमि
 छिद्रामि जीद रुनि यवनि पावनि मर्दनि सन ल२ सन ल२ रुनि म२ र्थात्कृष्ट विदनि विधा निधा मरुल २ मरुल मरुल
 निगठनि गठ रुंज मर्दमर्दिनि दान वक्रवा किनी रुल २ रुल निधवनि भावनि भावनि सर्वया धिह निधा वृत्ति २ वृत्ति नि २
 मरुल वृनि निमि २ निमिध निगठिला कद रुनी गिला काला कक निमिध रुकय वला किनी वरु यन रुया धम रु
 ना निवके विधूल विना मदि मरुल विधा धा निधा नक्ष २ मासि च रुन गरी स च रु रुय ल २ सर्वम नूयाम नूय रुय रु
 ४ सर्व रुय रु ४ सर्वया धि रु ४ वरु वरु वनि वरुया धिध न॥ रुलि २ मिलि २ किलि २ विलि २ विलि २ वल २ द सर्व रु

ऊयलश्चस्वाहा॥सर्वपापविदानिदीस्वाहा॥सर्ववाधिरुनिदीस्वाहा॥संरुनदीस्वाहा॥सर्वक्षयदनिदीस्वाहा॥सु
 किर्तवुममसर्वसत्यानास्वाहा॥भार्तिकनिस्वाहा॥पृष्टिकनिस्वाहा॥वलवर्धनिस्वाहा॥उंऊयउऊयऊयवर्तिक
 मलविमलस्वाहा॥वियलस्वाहा॥सर्वकथागतमूर्तस्वाहा॥उंरुनिमलभार्तिकस्वाहा॥उंरु१उंरुनि२वर्धवर्तिकसर्व
 कथागतहृदयपूजनिष्ठा॥यू४पानक्षि॥वल२वलवर्तिकऊयवि३हं२रु२स्वाहा॥उंमलियनिवर्धिमलपूजि
 मनहंरु२स्वाहा॥यस्यकस्यविल्लवाक्षमनयानुथागतमूर्त्तविशामरुपदथाविष्ठा॥नकाकनागुकिंय
 निशर्षयनियहयनियानक्षि॥भार्तिकस्वा॥यनेदधुवनिहनाभरुपनिहनाविवद्वर्धविमनाधनंरुर्करुवर्धना

३३

स्यपत्रिकीक्षमायू४पूजनवविवर्धनसुविनंसुखनजीवनि॥उञ्जानममार्जुनवावजावमार्जुननवाञ्जकाल
 मनक्षामहावाधिरुपनिमन्यन॥सर्वभागध्यास्ययुक्षाम्यानिदीर्घयान्यवमार्जुमार्जुनयुक्षामंगच्छनि
 दिन२स्वाध्यायंकूर्यात्सहाप्राह्ववर्तिक॥उंजावलवीर्ययुक्तिताक्षसंपन्नवर्तिक॥सर्वकर्मावनक्षानिवासा
 नियतवदनीयानिनिजवरक्षयपत्रिकयंगर्भुक्ति॥सर्ववर्धवाधिसुखदवनागयक्षादीनिवासा॥अजावलवी
 र्यकायप्रक्षुप्तानि॥महायीनिवर्धलाहविष्ठा॥अनसामहावाक्षक्षयंमहाविशामरुपदत्रक्षागीयः
 र्था॥निगतानामपिमृगयक्षीभांयक्षांकर्तुपू४निपतिष्ठाकिरुसर्वऊववर्हिकाहविष्ठा॥नरुनायांसम्यक्कारधे

क० पुनर्वाद्यय० मां मरुयमिसनाधनधीधर्ध० कूलयूगावाकूलइहिगावारिइर्वाहिइभीवाडपा० कावाडपा० जा
वा० नाजावा० नाऊमाथावावाक्र० लावा० क्रियावा० मदेन्वावा० य० के० धि० यमि० ध० ला० वम० रु० या० व० ध० द्यार० गे० न० व० ना
ध० अ० य० न० लि० रि० य० मि० लि० खा० य० यि० य० मि० ध० न० यि० य० मि० वा० व० यि० य० मि० गी० व० ध० म० न० सा० ल० व० यि० य० मि० य० न० य० य० वि० स्म० न० ल० म०
य० का० म० यि० य० मि० म० स्य० म० रु० वा० क्र० ल० अ० व० काल० म० न० धा० नि० स० च० स्म० न० य० मि० कां० द्वि० न० या० नि० न० वा० स्य० का० य० म० रु० वा० ध०
या० र० वि० य० मि० ना० मि० न० वि० य० न० म० न० न० न० का० खा० द० नि० कि० न० धा० न० म० न० क० म० म० न० न० वृ० धु० ना० र० ग० न० वा० न० धू० न० न० धि० ना० व० लि० न० का० दि०
क० द० नी० य० क० रु० नी० य० क० स० फा० हि० का० वा० रु० ला० न० क० मि० य० मि० स० स्म० न० व० स० र्व० स्व० मि० ना० स्व० पि० मि० स० स्म० न० व० वि० व० ध० न० म० रु० य० मि० नि० च०

[illegible]

निसनायामहाविद्यानाम्नाः न वास्यधरुयंरुविषयि॥ अन्नकिं कमधीयश्चरुविषयि॥ सर्वधरुगरे॥ नारुमहाकाः
 माखेवाकृषगुरुयकिरिध्वानुनसावधार्हयिवधकयनूधेनूक्तितायपिधका निखलुं खलुंगकृनियंभुमयानीव
 विधीयन्तं नस्मिंश्च समर्थसर्वधर्माश्चिन्त्या हि मूर्खीरुविषयि॥ मरुचास्यस्मृतिवर्लंरुविषयि॥ नकाव्रियनर्मरुक्त्यवि
 कुं पाया नाधर्न॥ धीकनधीकनवेवसर्वेगुधविवदने॥ सर्वमंगलकनोदधी॥ सर्वमंगलनाधनी॥ सुखप्रदर्शनीवापि॥
 स्वप्रस्यविनाधनी॥ म्नीयुं धयापना नका विधयं हि माहावला॥ मूटवीकाना नरुगर्गधुनियमयानिकरुक्तागु॥ सर्वका
 माधुलरुसन्मृद्ववचनयथा॥ पथउत्पथमायनामवां विद्यामनस्मनरुगायन्कनंलरुगुणीयुहाऊनयाधमरुम

२५

कर्मधामनसावावायलुगं पूर्वरुनस॥ अमुहं वरुविधं किंकिरुसर्वरुययिषयि॥ स्मनधामनसावेवउरुहाः
 निखतादपि॥ य० ताहावनाधेवजयनात्यनदधनामरुविषयविनधमो॥ सर्वधर्मगकिगनधाम॥ नर्वदिधमनसया
 फपायागच्छनिसंक्षयं॥ सिधनसर्वकमोमिमनसायशदीप्तीकं॥ सर्वमरुहयधेवांताधनस्यरुविषयि॥ नारु
 मिनूदकरुवविषयकारुक्तापिवा॥ यद्वसंयमविजयादुष्टिरुधायवदानुधाम॥ सर्वरुयलयेयाक्तिविद्यान
 रुयापक॥ विधमांयनमीसिद्धांसर्ववृद्धिदिदधिनी॥ कीर्तिमानानसोदकीवाधिसंज्ञानयूनयगु॥ सर्वधेवयस्मान
 पूरुमांविद्यायथा॥ यरुगायानिधच्छनिकायालिसुयनार्थयसिद्धय॥ सिधययलुक्तानिविद्यानातधर्नसयशान

34

[illegible]

कात्यायनन॥आयुष्माताववकुलन॥आयुष्माताववाधन॥आयुष्मातावकोधिलन॥आयुष्माताववागीरन॥आयुष्मा
 तावधजिना॥आयुष्मातावसहकिता॥आयुष्मातावसुवाकृता॥आयुष्मातावनिनूदन॥आयुष्मातावनवनन॥आयुष्मा
 तावनदिकन॥आयुष्मातावनदन॥अवयमसुखेनर्द्धकयादहाहिरिर्हृदयकेश॥कस्मिंश्चसमयहगवानसहिरुसंघामागाध
 नवनान्नाअजाकहाकृष्णव॥हीयुषसत्कृतागुनूकृतामानिग॥युजिगाविनृष्टीवलपिष्ठुयाकृषयनाधीनग्लानप्रत्य
 यरुषकृपनिस्ताने॥कनखलपूने॥समयनवे॥आलामहानगयामिरुहमिवालाहृदयकृदय्याइक॥महतीवा
 कालवाता॥निर्महामघश्चसमल्लिगादेवागर्द्धकिगुगुगुजयन॥विश्वरूपनिश्चनक्ति॥दहादि॥अकृतीहना

३४

हकमाचकानश्चपाइहृगंगानकृणाधिवरासकवदुसूर्योनिरुवगतलघनशाननयगतविनाचगाननचयरासुनोरुवत
 हअथरुगवानडाक्षीदिव्यनचरुधाविष्ठुद्वानिक्काकोमानाथकनवे॥आलामहानगयानिमगानिरुयानिप्राइहृगानि
 कृष्णकल्यानांवे॥आलकानांनिचूवीनांयाग्रामाकशापनीसारुके॥अधिरिगासमकनश्चवे॥आलीकनपदवाहिरुहिरुधय
 मकापाधिकाहीगासुक्ता॥संविग्नासंहृदनामकृपकागाडईमरुवापकृनकीवृद्धधर्मसंघानमस्यक्ति॥अचवाकृष
 गरुस्यनयावृद्धआननारियसुनार्कवाथकल्यावाक्कृषगरुस्यनयशावक्राधनमस्यक्ति॥कवित्यन॥कक्रोकरनिज्ञाक
 वालानमस्यक्ति॥कवित्यन॥महेश्वनमाहिरुडपुर्धुहानीगीवदुसूर्यगरुनकृषयचकवनपरुधुधधिरुनयत्तना

[illegible]

दोषि न सावदित्वा न का कस्मिन् न कवा रगे कप दन रुग वक्त गा था रि न रि स्तु वृ ४॥ दी फ का क न निर्हा स यू र्धु व द्य प र्हा
 स्व न ४॥ श्री व द्य म ध व द्दी न ४ न त्वा ना म ना द्दि मि ॥ सिं रु वा न न वि क्रा न ४ म रु ना ग प ना क म ४॥ प च्च ना वा स व र्धु स्या नि स्तु
 जा न्म न द स्य वा ॥ व द्वा वा वि म ल द्या मि न रु रु रि प न स्तु न ४॥ म र ध्वा व क सं घ स्य ल रु र्दी ४ स म ल क र्क ४॥ ला क ४
 स द व का रु ष म् नि ष न द मा ग न ४॥ म नू ष्या धां रि का र्थ य न का का ल ड प लि ना ४॥ सा रु मु य म र्द न स्तु र्ग स च्च व र्द
 ४॥ य का नि र्ग ४॥ आ च क्वा उ य र्थ कं णी मां व द्ध न म रु मं ॥ न म रु प नू ष वी न न म रु प नू षा रु म ४॥ रु ना ऊ लि न म स्या मा
 व र्म ना र्ज म दा म नि ॥ अ थ रु ग वा न्म रु र्द रु र्दी ला व ना धि वा स्य व रु ना म रु ना जा ना म रु या मा स ॥ नै रु ना रु ना म रु

न० यकि नृपं य यथात्मनिषदाः स्मृत्यनिषदविह० यिगव्यं मन्यक ॥ गल्लस्य रुगाः ॥ ४४ ॥ गदिमान् यलाक वदीत्या
दधर्मस्वाख्यातता वसं घस्युक्ति ॥ ४५ ॥ दमस्मिन्नीमवलाय वझरुगवनालाकात्ययक ॥ प्रत्यकवृद्धाश्चरुत
धावकाश्च ॥ अस्मिन्निमलाकाः ॥ कुशलमूलान्यवलाय सदृशगाद्या किं नान्दवनि कायानात्यक नान्य न नद्वनि २०
काथडपययक नाना नापिरुवकिं धुन न किं धुन धीयध नान्धकवर्हित ॥ ४६ ॥ समुद्रयय्य नमहायुशिनीमधुन
धर्मनायं कानयकि ॥ गवांश्च यद्रुमरुमं रुवकिं सुनाधोदी नान्धवना न नृपीधं महानग्नवल व गद ॥ ४७ ॥ यमन
यमर्दकानां ॥ सफनल समवागगानां ॥ गयथा कमत्यालूकविहान न विहानगानां ॥ न वं नृपाधोम स्मिन्नाकनाय

यकिं विषयि अथ वेधमरुधामरुनाशामर्कं गम्या ननादकासमरुनासर्कं कत्वादकिं जानमधुलं प्रथिवायकि
थाययनरुगवांस्तुनाञ्जलिं कत्वा रुगवकमवनमस्यमानारुगवकमदवावह सक्तिरुगवन्नस्मा रुमदानाधि
गदरुनरुवनानितगनायानविमानकूटाग्नि नरुम्यनिर्युक्ताननधगवाकधुरुनविनविविधविविधयदूदा
नधम वामनमकाजालय निक्किफानिधूयघटिकानि पृथ्यावकीर्णानि यष्वनयनान्रीधगसहस्रयनि
वृणास्यूरुर्धुः ॥ यकहिः ॥ कामगुरेः ॥ समर्थिगाः ॥ समचकीह ताविह नामः ॥ कयामस्माकं रुदकुरुगवत्यमरु
नोदसादविहानिर्धो विहानगां यनिषदां समतादृशदिरुधानयानहानानिमा र्कयनि प्रयलायमानाधुः ॥

कयूतः॥ हस्तयकनकनशाकनास्याविसरुसदा॥ उन्नीयनववकुश्रयनवयनामखः॥ मयमनुष्यनयः॥
 कनाथधृष्टाहिम॥ स्याद्यथदं॥ अखनखविनख॥ वरुवनाथ॥ वयल॥ वरुवखनवखिन॥ अखिन॥ नखिन॥
 वरुल॥ हगहगधुल॥ वरुवधवलिनीस्वाहा॥ मयकुसर्वसत्ता॥ सर्वगुरुणाधृगनादुस्यमहा॥ नाक॥ यनामाव॥
 लनेकध्याधिपकनवस्वाहा॥ अथविनूटकासहा॥ नाजाअक॥ मयागनादकासमरु॥ नास॥ कृत्वादक्षिणका॥
 नमधुलीयुथियांयुकिष्ठायायनरुगवांरुनाअलिक्ता॥ हगवकभवनमस्यमा॥ नाहगवकभवनमदवावक॥
 अस्त्यनिषदाहृदकहगवक॥ मयाधुगहृदीकस्य॥ हृदक॥ नूयलक॥ वलवगीरु॥ वा॥ कि॥ वि॥ क॥ श्र॥

४२

पिपुक्कन॥ मखंलाहिगमाकागिरु॥ मोखपिकि॥ कृकि॥ ४॥ इर्वलकव॥ गपश्वदीर्घक॥ नखरुथा॥ इर्गद॥
 रक्षामलिनधृपिमृयासंरिन्नतावरु॥ नकुमकुयदानाकिलाकनाथधृष्टाहिम॥ स्याद्यथदं॥ रवखरवम॥
 रवलन॥ रवलम॥ रवलाभ॥ रवनलि॥ रवनख॥ रवटिन॥ रवनलि॥ कनखि॥ कसन॥ कनट॥ कालकामिनिविधलि॥
 विधियवि॥ धय॥ मयन॥ मयवरु॥ ममिशमिनिस्वाहा॥ मयानुसर्वसत्ता॥ नाक॥ सर्वगुरुसर्वरुथायडवाविनूट॥
 कस्यमहा॥ नाक॥ स्यानामावलनेध्याधिपकनवस्वाहा॥ अथविनूयाकासहा॥ लाजाअक॥ मयागनादकासम॥
 रुनास॥ कृत्वादक्षिणका॥ नमधुलीयुथियांयुकिष्ठायायनरुगवांरुनाअलिक्ता॥ हगवकभवनमस्यमा॥

नाभ नदवावरु ॥ अस्मत्प्रतिपदा रुगवकरुगवनागसुपर्णी गुरु गृहीकस्य ॥ दमं नूपलकसं ॥ दिक्क कस्यस
 कथापिणीगलं गमवव ॥ स्थिरक रुनलातासा स्वपकवपून ॥ पुनः ॥ वर्धुवां रुवकसुभा वपकधावकस
 दा ॥ पुनर्नखा निदर्शयति महीविषमिनादकि ॥ मयु मयु यदो न्यासिलाकनाथ ॥ २४ ॥ हिम ॥ २४ ॥ २४ ॥ २४ ॥
 गमककममि ॥ ककस ॥ ककसम ॥ कुधुम ॥ ककक ॥ कुरुम ॥ कुरुग ॥ अगलनगलसमगल ॥ कुरुमकुरुम ॥ अ
 लूक ॥ कलमक ॥ कलल ॥ ॥ नमिन्नयिन ॥ अगनूवमिस्तारु ॥ स्वस्त्यस्तु ममसर्वसत्त्वानां कविनूपादसामरा
 नाकस्यनाम्नावलनेकध्याधिपत्येनवस्तारु ॥ अथरुगवांस्तु वदवसर्वावस्थापविषद ॥ पुनः ॥ सिंद

२३

नादनदकि ॥ दक्षवलसमन्यागगार्हवकुवे ॥ अत्रयवि ॥ अत्रद ॥ पयोयदानमार्पणं संम्यक्किं रुनादनदकि वाक्र
 ककवरुयामि ॥ माभानिर्जिकुचकनससेनवलवारुन ॥ नक्षत्रेसर्वसत्त्वानां सर्वविशाल ॥ २५ ॥ २५ ॥ २५ ॥ २५ ॥
 द ॥ असीरग ॥ स्वकुरुवक ॥ वलवक ॥ वलनिर्घोष ॥ धून ॥ धूनधन ॥ वरुगमवजधन ॥ कुरुकुरु ॥ दृष्टस्तान ॥ विन
 रुविद्युसवनायपाफ ॥ अत्र ॥ अत्रधर्मयूकदिगिविशुस्वारु ॥ स्वस्त्यस्तु ममसर्वसत्त्वानां कथागरुस्यवलने
 कध्याधिपत्येनवस्तारु ॥ वदस्यववर्न ॥ लालाकपालाधुदिर् ॥ इनुकासीकेसीविग्ना ॥ अस्त्युपाऊलीक
 गा ॥ मिष्टरुगगभाकुस्तु विदिफाविनलीकेगा ॥ यलायकदधदि ॥ मरुनादमूदीनयक ॥ गदिदित्तामरुना

रुनादिर्लं नास्मात्समागतानां हि रुनागा रुजसाधियां अकनिक कदाहास्म सर्वह्लादिस मूर्ति रु॥ वजाधन निषय
द विमानवक्रातिर्मिर्ग रुगावक्रा महावक्रा या अलिखन साति ॥ सर्वधुपर्व रु॥ सीमा कफ काक नस त्रिरु॥
पमपूष्यवदुत्तु लालना जवपूष्य रु॥ पूर्ववदा न विवायि न रु॥ ४५ निवात्रि रु॥ ४६ सर्वधुपर्व काय नल ४७
रु॥ सीमति ना रु॥ ४८ संमुलाला कय शा रु॥ ४९ वक्राला कयि ना रु॥ ५० ए नाला कना थस्य लाकपाला न था वुवी
रु॥ नया फला कपाला ना पयं श ना न सा धनी ॥ ५१ ना वदा हि जा य रु॥ ५२ वदा ४ पय क जा अयि ॥ ५३ रु॥ ५४ वकाय
हि रु॥ ५५ वा अयि समुत्ति रु॥ ५६ जाय रु॥ ५७ वक्रा रु॥ ५८ व. व रु॥ ५९ वद पा न रु॥ ६० मय य रु॥ ६१ म रु॥ ६२ रु॥ ६३ रु॥ ६४ रु॥ ६५ रु॥ ६६ रु॥ ६७ रु॥ ६८ रु॥ ६९ रु॥ ७० रु॥ ७१ रु॥ ७२ रु॥ ७३ रु॥ ७४ रु॥ ७५ रु॥ ७६ रु॥ ७७ रु॥ ७८ रु॥ ७९ रु॥ ८० रु॥ ८१ रु॥ ८२ रु॥ ८३ रु॥ ८४ रु॥ ८५ रु॥ ८६ रु॥ ८७ रु॥ ८८ रु॥ ८९ रु॥ ९० रु॥ ९१ रु॥ ९२ रु॥ ९३ रु॥ ९४ रु॥ ९५ रु॥ ९६ रु॥ ९७ रु॥ ९८ रु॥ ९९ रु॥ १०० रु॥

वाक्का ४१ अल्पात्सु कानां यथा कं वथा रुमानधी यजा वक्रा रु॥ ४२ वव वं रु॥ ला लाकपाला ववा क व रु॥ ४३ वम रु॥
सहा वक्रा न वम रु॥ ४४ वम रु॥ ४५ वम रु॥ ४६ वम रु॥ ४७ वम रु॥ ४८ वम रु॥ ४९ वम रु॥ ५० वम रु॥ ५१ वम रु॥ ५२ वम रु॥ ५३ वम रु॥ ५४ वम रु॥ ५५ वम रु॥ ५६ वम रु॥ ५७ वम रु॥ ५८ वम रु॥ ५९ वम रु॥ ६० वम रु॥ ६१ वम रु॥ ६२ वम रु॥ ६३ वम रु॥ ६४ वम रु॥ ६५ वम रु॥ ६६ वम रु॥ ६७ वम रु॥ ६८ वम रु॥ ६९ वम रु॥ ७० वम रु॥ ७१ वम रु॥ ७२ वम रु॥ ७३ वम रु॥ ७४ वम रु॥ ७५ वम रु॥ ७६ वम रु॥ ७७ वम रु॥ ७८ वम रु॥ ७९ वम रु॥ ८० वम रु॥ ८१ वम रु॥ ८२ वम रु॥ ८३ वम रु॥ ८४ वम रु॥ ८५ वम रु॥ ८६ वम रु॥ ८७ वम रु॥ ८८ वम रु॥ ८९ वम रु॥ ९० वम रु॥ ९१ वम रु॥ ९२ वम रु॥ ९३ वम रु॥ ९४ वम रु॥ ९५ वम रु॥ ९६ वम रु॥ ९७ वम रु॥ ९८ वम रु॥ ९९ वम रु॥ १०० वम रु॥

यस्य मया मः सुखं वक्राणि निर्मिता यस्तदंता यन विस्तक र्क र्क र्क मधुलं वृद्धस्य पाथे वानि ला आला कवपन सानं
सर्वधुनूया वक्र्या मकायां सुटिक सव स मसाना समगर्हा सस फनल समा कलान स हमाना मो वधु श्र
उज संसु गा कुथान विध कर्म सुकान द्वा वे हा य स र्माना गकारि न रुना जान पका ना ह म मधुलं यय
पृथु मदी कला श्रु र्धु श्रु पि हि न धम यः य हि ना वध व ग न सु कया भा सु था पि व य रु स ना य मी सु चो
शु व यित्वा वडु हि नो आ न धु सर्व रू ना नि या व ना स्म र्ना ता दि वि सा ह म प्र म द न रु न सं र्धा उ सु क र्क म
रु कला का सु म दि र्ग सर्व ला के वि वि कि र्क म हा हा ह म का य न म दि ता य क ना क सा शा अ ला वा र्क के व ल

स्य य रु स ना य र्ति ग र्क वि क्र म न धु उ दि कृ धा वं धा य नि गु रु का ष प्र ह वि ष च रु ना नि य रु र्ग च र्च जा म
न पु न वि म दि ला ला ग र्क र्क सं धा श्रु र्धु म सर्व र्क सु क या र्क न य च र्च न यी डि ना अ रु वि ष च रु
ना नि य रु कृ क्का धु जा म न द कि ला मि दि ला ला ग र्क र्क सं धा श्रु र्धु म सर्व र्क सु क या र्क न य च र्च न
यी डि ना अ रु वि ष च रु ना नि रु कि ना ग य रु म न दि रु ला ग उ रु न वा पि रु र्क सं धा श्रु र्धु म सर्व र्क सु
क या र्क न य च र्च न यी डि ना अ रु वि ष च रु कृ क्का धु कृ क्का धु न स स अ यो न न वा रु ष पा द मृ ल उ रु स्ये व य काली म वि ष
का ट य अ रु वि ष च रु कृ क्का धु न य च र्च न यी डि ना अ रु वि ष च रु कृ क्का धु न स स अ यो न न वा रु ष पा द मृ ल उ रु

सेवयकाभांषट्टिकाटयः॥ आकृष्टासूत्रयारणनयकवचनपीठिकाः॥ पूरुहनीयसुखेवनाम्नासोमहायुः॥
 पादमूलकुनसेवयकाभांषट्टिकाटयः॥ आकृष्टासूत्रयारणनयकवचनपीठिकाः॥ पूरुवकुथेसुखेवनाम्ना
 सोकल्लभादनः॥ पादमूलकुनसेवयकाभांषट्टिकाटयः॥ आकृष्टासूत्रयारणनयकवचनपीठिकाः॥ म
 हेश्वनामहादवधकुवांरुमहावलः॥ पादमूलकुनसेवयकाभांषट्टिकाटयः॥ आकृष्टासूत्रयारणनय
 वचनपीठिकाः॥ आगत्यसर्वहानियवैरुहकमदनः॥ उषांउहाविगाविद्यासर्वविद्यासमाकनाः॥ निष्पन्न
 पूरुवदुर्गसर्ववृद्धिहिताधिकः॥ उषगच्छमक्षनर्गसर्वरोगममार्दनाः॥ अक्षानानुवर्तयमावसर्वनरै

व्यक्तः॥ गगामूर्दुरुमात्रुलरुगसंध्याः॥ समागताः॥ पर्वकषप्रयागः॥ वृत्तमूर्दुष्वसनः॥ सचः॥ नदीपक्षवः॥
 त्रस्रुआवरुष्वयस्त्रिगाः॥ उद्यानवृत्तिमानवृत्तिनामवृत्तनवृत्तवृत्तनवृत्तमूलवृत्ति
 गागनगनस्याप्रदक्षिणनिगमजनपदवृत्तनाजकूलमूलालवृत्तिमानवृत्तयस्त्रिगाः॥ मधुपमममन
 वृत्तथादवकूलवृत्तगीमासुहृकक्षलायांनूनागानधर्जगलः॥ उर्द्धदुर्द्धकयकाधुर्द्धविदिहवय
 रुकोटिसहस्राविद्यायारणनकर्षिगाः॥ मूर्दगवादिर्गकलाकेविमर्मनवादिर्गवीणापक्षयवृत्तवा
 दयकामहावलाः॥ कलाववादिर्गविर्गगाधर्वनायमववः॥ उषामश्ववन्तः॥ नद्याजप्रजायमी॥

कर्णदीर्घनाह्दीर्घनाभययाधयः शुक्लकायादीर्घकायादीर्घकभासुलकभाः पादकानाहयधोवाहगे
 भाकनः एवदनाः रुद्धनजामलकर्णकुर्णकभासुभाहिकाः सुललीषोधनेगीवाकुकुः एवदनाहकाः न
 वर्यः दक्षिणवर्णाभिभनूमस्त्रीविवालयवेः वृक्षयवगपावाभमजुकुटसमधर्मिः भखरुनीमृदगातांका ५३३
 हिलनाः यमचंकिनवकीर्ममहाकरः एवजमनाः कालनीलकपीमाधुद्विचिंमलपिंगलाः ५३३
 निकेनाथनकलोहिमप्रदिगाः रुक्मानाहिकवकिः कृष्णसंयुक्तनेः कीकदनानकरुसाः अंभुसुनिः कलाहिकाः
 ऊर्ध्वस्त्रादितगावः ५३३ रुक्माहकोयपुनिगाः ५३३ रुक्माहदयकृष्णिः ५३३ रुक्माहकाः ५३३ कनलारुक्मपादकाः ५३३ रुक्म

कयाभिनांवलंः सुस्मिः संकलकाथनजाभयकिजनावरुनः गृहीत्वामानखंवर्मलाहिकनयपुनिगं विधरः एव
 रुसंसृष्टं विक्षिपयनकिदिः एवदक्षः नगनाभंयवः एवधुः विक्षिपयनिकलाकलं वारं पिरुं चः एवधातक्षरुयनिकिच
 उर्दिर्लः ५३३ रुक्मिस्तमिष्टककजनाजयीजामरुहयाः सर्वसमागतासुपि विज्ञायाः एवनकर्षिगाः ५३३ नमस्तुपुनूयावीन
 नमस्तुपुनूयारुमः ५३३ नमस्तुमाः अलिङ्गनाधर्मनाजनभासुः ५३३ चनक्तिनगर्नशामनाथनाजकलधुवः ५३३ यकाः अजा
 रुनाथानाः नृमान्नाधुधिनानिः ५३३ मरुकायामहालीमाः महावलमहासुनाः ५३३ दक्षगीवासरुनाकाः मरुगाः मा
 मरुमाखः ५३३ मरुगायनिवाननगः रुक्मासुहंनवाः ५३३ रुक्मिः नमगृहीताः ५३३ उल्काः रुक्माः ५३३ रुक्माः ५३३ रुक्माः

स्नाभ सुहृत्ता ४७ लिना वरुणानि न ४७ उ ग म नि दि ४७ सर्वान् च कलासदा नृणां य स न्ना यु क्त का म र्च इ ह्ना ना माल य सि
 गा ४७ य स न्ना मान ध लो क न न नार्थ स्त र्थे न नान् ४७ उ र्ध्वा य स न्ना नृ धि ने र्ज ना ज्ञा का म नृ धि न ४७ स सिं ह व्या धु म ह्ना य ४७
 र ग्ना य ना धु र नृ धि न ४७ म ह्ना धि वि वृ क न्ना कृ ण्म ल उ वि द न क ४७ नृ य ना र्व ४७ क पि पु र्व ४७ र्व श्री ण्म क न ना कृ ले ४७
 म ह्ना कृ ल य नृ धि य न ४७ का क को किले ४७ र्ध्वा ल क र्व स न्या दि क्त्वा कि मि मि मि शिले ४७ मा य न्ना ह्ना का या ४७
 ४७ का र्व वि ह्ना ग्म ४७ क वि कृ कृ नृ य ल य का ४७ य धि नि मा नृ या नृ म य धु य कि व ध ध म क्त्वा स कि ज ना य ह्ना क र्वा
 वि लान् र्व णी र्व णी न र्व न को कृ ट ४७ अ न्या न हि द व ना नृ द ह्ना क वि क ला ध या वि न ग्ना का म य न मा अ न्ना माल य

पु णि ना ४७ य ह्ना नि वि मूल न पी ज क र्व नि या धी ना म र्च नि द नृ म स्ता सं ता य य नि ४७ मा ४७ य जा ४७ वि वि न
 नृ या द ह्ना क या व नी या ध धी न कि ४७ ग ह्ना क य र्व न ह्ना ना अ धि व कृ ध ना य न ४७ र्वा ध न स ह्ना मा म्ना म र्व ना द ४७
 म र्चि ना ४७ उ र्वा टि ना का वि म र्वा र्व धु द ना ह्ना ना क सा ४७ वि ना मा धि न र्धु धि न र्जि का व ली म र्वा ४७ सी च्चि न
 धी र्वा ध ना क सा ४७ य ह्ना नि या व ना न् दि अ ज्जा दि म्नि कि लि या ४७ मा नृ या ध धी न नृ य स ह्ना का द ह्ना क य ह्ना
 ४७ ना मा नृ नृ म म्ना य र्वा व ध म र्व व ४७ स र्व स मा ग ना क्त्वा वि वि या पा र्ध न क र्वि ना ४७ न म र्वा य नृ या व
 न न म र्वा य नृ या र्वा म ४७ न म र्वा मा अ लि क ना ध म्ना ना ज न मा म्ना ४७ म ना गि नि ना ज न क्त्वा द क र्वा

वद ॥ गृध्र कूट ॥ ध्या धाम हिमवत्तन्मद न ॥ पाशुपति उक्त च नानन्द यत्न मरु य ॥ श्री परवत्तम मूर्द्धन्य ॥
य एण मूर्द्धना शया सुकुद वना धरा हवयश्च समाहिता ॥ वरु वरु पिवादि गमा आ यश्च कुरु मान सा ॥ द व
काटि सहस्राणि ॥ द व काटी क्षमा निव ॥ द व कन्या मरा रागा ॥ अ ऊरु लि संप गृध्र वे ॥ व म विगी च ना रुश्च प
स्त दश्च समागता ॥ ह र काटी सहस्र ॥ ह र काटी क्षम न पि ॥ क न्या सु स मृद्धि मर्या ॥ व धा द क्षन रवा ऊरु लि ॥
म गगन ॥ सूर्य मि सुश्च ॥ ना न आ जी मन स्था पि ॥ ना र ग डान व रु कश्च ॥ उ श न दाय न न द को ॥ व रु र्न दाय व रु म
नि ॥ ग गति च ॥ गगन ॥ सूर्य भु य द्दि ना जान ॥ क्षम न र्का र य कि थ ॥ ना ग काटी सहस्र लि ॥ ना ग काटी क्षम

७५

रुथा ॥ कन्या सुवां मरा रागा अ ऊरु लि संप गृध्र वे ॥ न विव द्दा व लो वा पि न रु रु प नि वा नि गो ॥ स व र्धु व र्धु घृथ मूरु
गरुध्र पू व रु ष क टा ॥ का पि लि र ल क वृ ष का ग ल दू य पू षु क ॥ ह वि ना मा व म ड प म श्र व व य र मा ध न ॥
विही ष ष पा श्र ल ला हि ना रु श्र अ ऊरु ॥ दि ग ल श्र अ व न वृ क पि ला रु श्र वे दि र ॥ क म्हा द न श्र म र्मा
ष म न रु ष व दी र्घ ल ॥ य म र्द न रु ग न्ना न सूर्य मि सुश्च क वृ म ॥ म र्हा न न य द ध न उ का य द्दा य रु र्द ॥
व रु पा नि म्म र्हा य द्धा ध र्म याल पु पू षु न ॥ क पि ल र्हा र्द र्ना दि रु ॥ दि उ ल क ल र्णा द न ॥ क म्ही न र्णा र्का श्र
पि या वि रु श्र जि न र्प र ॥ म र्हा न म र्हा य द्धा उ र्वा रु म र्हा व ल ॥ य म र्द न ॥ स न स ना म दान र्मा म र्हा व ल ॥ य

मन्त्रयमद्रुगधुमान्नायिससेनयकः॥ रुनिर्नाम्नात्वे सोयकायककाटीयत्रिगुहः॥ हानीनीचसमेनाडुगिनिदिना
चयकापी॥ मनुष्यामहाका. हानीनीतामविह. गा॥ चयुचयुलिकाववयकयु. ॥ जकादाक
कटीकाली. यइमापइमानकीगथा॥ पृष्टदकीविभालाव. खनकर्धुवनाकसी॥ वदनाविहूलधायिहनिपिंग
लपिहला॥ कृजनातागदकधु. निमिहायडखकः॥ नाहमीरुदकायवकिलाविहूलानथा॥ येकीहालरधेवना
कलधुविहृदकः॥ हूलषुनहृदीलाथ. गवाधुमृगमानूषान्तरकयकधुजीवनाधावेकधुदिह्लादधायकण
मानाधनपी॥ शयकावनस्यगीत्. सीकाचयकः॥ हिरवनामेईमकः॥ मा॥ प्रजा॥ यनस्यनसहर्वयका. दि

ज२

याकृष्टसमागगाशनमस्तुपूनुषवीननमस्तुपूनुषारुमनमस्यामाऊलिकना. धर्मनाऊनमास्तुका. गवांस
मागगानादिलोकनाथस्ययुगकः॥ गगावेधुमरधनाजा. लोकनाथमथाववीठ. ममास्युरुनदिह्ला. गगाऊ
धानीसूनिर्मिता॥ मनानमादकवगी. कनाहमधुकाधियः॥ चिकिगासर्वददिनाऊधान्याउकोकया. ममधुमा
मुयाकात्रामफनतसमाकूला॥ कामकयजिनहवे. मस्तुगाकाऊनामये॥ कामकः॥ कभकस्मि. नमनादि
ग्रहस्य॥ दि. न. उधनायका॥ मुहसुसुवर्मिता॥ नाऊधानोमुकस्येवककदान्वहुसूर्य॥ नकस्वधुमयका
नंदिगीयं नूयामस्तुका॥ रुनीयं स्फटिकं दानं. चउर्थमगिविविधिउं॥ ऊखकनउनयप्रउषानवनपूर्यका. दिना

नातिविचिगलि सफनत्तमया निवे ॥ नाना नत्तमया च कानाताप निनिकुजिता ११ नाना पृथासु सं च नाना नाग
ध्यादल पना १॥ यक्षी नां विला १॥ श्वगी कवाथे नलं कगा १॥ अन्या मिहिर्यं त्वयं ॥ रगानां यक्ष मधुले ॥ सर्वा कानव
नायता सुश्रमय निवान का १॥ धर्म वा नी धर्म का मान विहिस कि पाणिनी ॥ अन्या ने कु विकला दानु धा स्त्रि न प्रजा १॥ धर्म वा नी श्र
जा १॥ धर्म वा नी श्र धर्म का मा सु विहिस कि पाणिनी ॥ अन्या ने कु विकला दानु धा स्त्रि न प्रजा १॥ धर्म वा नी श्र
धर्म का मा सु विहिस कि पाणिनी ॥ उदार्ज य निमार्ग का निषे क कि वतु हि ॥ न ग न दान स सु य उ शान पूर्व भष
वि ॥ यक्ष ना क सु रगानां काटी सु रगानां ॥ सर्वा कानान विद्या मिहिर्य पा १॥ न क र्थिता १॥ च नाना वि ने ॥ न

३३

शी क य कि नि धी वि चि कं ॥ मर ध क डा ज ध न्या सु धर्म ना ज नि व ध नं ॥ सम ना या ज नं या क दा मा न कु नि मि र्मा
१॥ सु व र्णु स्य र व द का दि नी या नू य म व च ॥ वे ड र्थ स्य र नी या सु व ड र्थ सु टिक १॥ वि १॥ य क मा न क म
का या य सु र १॥ वा ध म ग र्थ क १॥ स फ म म १॥ न स्य स फ न स म या रु म १॥ नाना नी ध न स आ लि उ के क सि स मा
ग ना १॥ वि ड ना रु न र १॥ न र १॥ वि ड व र १॥ न र १॥ न र १॥ वि ड गी न वा श य धि ल्य सु न य नि दि ता १॥ १॥
र १॥ न य मा द न ड द रु स मा न मा १॥ न य मा द न ड द रु स मा न मा १॥ न य मा द न ड द रु स मा न मा १॥
ना स कि दि र १॥ द १॥ न य मा द न ड द रु स मा न मा १॥ न य मा द न ड द रु स मा न मा १॥ न य मा द न ड द रु स मा न मा १॥

रम्भा निगता प्रपि न कुरु चन्द्रसूर्योश्च ह्यपीडितं किदा नूत्नं ॥ १॥ सस्यं वीरं कुरु लघुं भोषधयानराज नरं
 नमानवीलकी मच्चानी वीकना किचयक विदुः कृता लोकं वेन कनरु विगुहा ॥ २॥ दग्धनस्यं कुरुं हि नैकन
 र्वरु कुरु मंगल गुणं किनिगुष्टं नित्यया स्यात्किरुक्ति वरुत्ता स्य किच सत्ता ना विधु कृति विवतिच
 ॥ ३॥ किपायका स्यात्प्राप्त्युक्त्या न्योडयति वरुत्ता नरुत्ता कृता कलायका विगुहा किच मिगुहा किच न
 याश्च दृष्टं कालयति वरुत्ता विविगुहा नूयश्च दृष्टं कालमनूयिनश्च वरुत्ता नूयश्च दृष्टं कालमनूयिनश्च
 चित्तशावाला कालानि नूयश्च दृष्टं कालमनूयिनश्च वरुत्ता नूयश्च दृष्टं कालमनूयिनश्च

३८

दृष्टं कालमनूयिनश्च वरुत्ता नूयश्च दृष्टं कालमनूयिनश्च वरुत्ता नूयश्च दृष्टं कालमनूयिनश्च
 यष्य परथमं यष्य वरुत्ता नूयश्च दृष्टं कालमनूयिनश्च वरुत्ता नूयश्च दृष्टं कालमनूयिनश्च
 किच विविगुहा विव नूयश्च दृष्टं कालमनूयिनश्च वरुत्ता नूयश्च दृष्टं कालमनूयिनश्च
 विपनिगुरु दृष्टं कालमनूयिनश्च वरुत्ता नूयश्च दृष्टं कालमनूयिनश्च वरुत्ता नूयश्च दृष्टं कालमनूयिनश्च
 यिविद्यापारणन कर्षिका शापेक्षमरुत्ता नूयश्च दृष्टं कालमनूयिनश्च वरुत्ता नूयश्च दृष्टं कालमनूयिनश्च
 नसन्निहताला कय शाकनन नमि कल्पमरुत्ता नूयश्च दृष्टं कालमनूयिनश्च वरुत्ता नूयश्च दृष्टं कालमनूयिनश्च

[illegible][illegible]

कर्षादधुपरधमिनाकनाथस्यसंमुखं। स्थाय्यथदं। धर्मिवना। वलवनिवलिनिदिवांगविदसि
 गगन। खनिकपिलनधुलिलिलिलि। विनाऊन। विधानिलि। वधुवनि। अयनस्यस्यमुममसर्व
 सत्यानाययश्रिमायादिहिल्लाहा। वक्रावायथनकथलाकपालामहध्वन॥ यकाधियनयस
 र्वहानिनीचसपुत्रिका॥ इदंयथाकगन्धकप्रकिगृह्णुममाहर्नि। वीर्यधनऊसांनवाभेधय
 धवलनव॥ निहता॥ सर्वनागाधस्यस्यमुममसर्वसत्यानायसर्वरथापडवीयसर्गस्य॥ स्थाहा
 नमस्तुपूज्यवीननमस्तुपूज्यारुम॥ नमस्त्याभाऊलिकनाधमनाऊनमास्तुत॥ अथवक्राम

हावक्रासाऊलीकसमूलिक॥ वक्रा॥ स्थातक॥ स॥ इ॥ सर्वदधयानग॥ वेद्यमाऊऊनानन्द॥ सर्व
 लाकविकिल्लक॥ ययकात्राहसा॥ वेदिविदिहयवलिगा॥ यागालह॥ उ॥ इ॥ अ॥ का॥ निधि
 नायरा॥ कर्षादधुपरधमिनाकनाथस्यसंमुखं। स्थाय्यथदं। वक्रवक्रयाधवक्रस्यन॥ वक्र
 धन॥ लि॥ न॥ मान॥ अ॥ वल॥ अ॥ न॥ र॥ इ॥ ध॥ अ॥ न॥ लि॥ द॥ न॥ लि॥ न॥ व॥ ना॥ य॥ या॥ फ॥ सा॥ न॥ व॥ न॥ स॥ स॥ मु
 ममसर्वसत्यानायसर्वदिग्विदिग्वाय॥ स्थाहा। वक्रावायथनकथलाकपालामहध्वन॥ यकाधियनयस
 र्वहानिनीचसपुत्रिका॥ इदंयथाकगन्धकप्रकिगृह्णुममाहर्नि। वीर्यधनऊसांनवाभेधयधवलनव॥

मिडापकमाशादिदिवानिच्छयगतायादायहगवतावामनायनामिगवान्पनाम्यहगवकमववीरुयमान
स्मिन्४१ चत्वा नापिमहनामान४५ यकयकमाशादिदिवानिदिव्यच्छयगतायादायहगवतापृष्ठकनूयना
मिगवक४२ उयनाम्यहगवकमववीरुयमानास्मिन्४३ महम्भनायिदवयुशा३४ विंभानिहिधमहाय
कमनापगयादादिंश्चयकमहानग्नाहनीवीवसयुजिका४५ सयनिवा नाधोवकार्नायुधकदिन्यंक्क
मपनामिगवकीवीरुयकीवस्मिन्४६ उवन्नुयय२४ लाहसकोनाययाफारुगवान्तरि कसंधा गधक
दत्तचत्वादवनीर्यथनवैशालीमहानगनीकनायसंक्रान्त४७ मृदा४८ खलपून४९ वैशालकालिच्छवथाह

गवकं दूनकनवागच्छकं पाष्ठादिकं यसादनीयं शाकद्रिष्ठाकमानसं४१ दान्द्रियं दान्द्रमानसं४२ यन्न
रुमदमसथपापं४३ क्रिद्रियं नागमियसुदार्कद्रुदमिवांक्षं विषसन्नं मनाविलं४४ विंभानिहिर्महायून
षनकलोहसमलं कुरुगा४५ अशीमिहिष्ठा नूयकुरं४६ सुकसुमिर्कं४७ विविधतथागरुहनीर्जालनाड
रूवसुयुधि४८ सुर्थावादिवायमूक४९ नग्निजाल४९ नाक्षीवाभका नकमिस्रायांगिनिधिरवनगरपुष्प
लनमहानग्निस्तम्भा४९ महानिववासीकनावनधन४९ लवमवहगवान्तासुगतयकिविभावकसुह
दर्शना४९ दववैशालकालिच्छवथाहगवतानिकेयनासिपसादयामासु४९ कयसन्नविला४९ यन्नसाएन

शरुगवान्नेलीमहानगनीयविशति। नमार्गमधयति स्म। स नार्कयति स्म। य वकीर्णु न कूर्चनिस्स
उक्तिविविधपदसमयच्छकृद्वजययकातागगभानिधूपिगोक्तत्वा। यन्नरुगगारुतायसंजाम
मीस्माउपसंक्रम्यरुगवनरुपादयानियति स्म। अथरुगवान्नेरुजानवकनविनविलिखितलनयस
विंवगर्हसुकुमानभपूचंस्त्रनितलनरुपायचिन्ननरुनरुपादिवाकनकिन्नरु। किन्नकपुहनयसुनवलनधि
गतसुहसुनिर्मलनकनरुपायलिङ्गवीनांतिजासियनिमार्गसुयसुमनरुपासक्तिस्माभारुहृत्माप
प्रधारुमत्यागगायूपाकमवान्कषामपादायअनरुगंस्त्रतमहिस्वस्त्रास्मिन्। तर्चस्त्रानाकहिता

३०

यसुखाय। अथरुगवान्नेलीमहानगनीयविशतिमधमया मधुकीलमवदृष्ट्युद्धिधमवलाकसुव
र्धुवर्धुवाह्यसार्यडरुनासंगदिवनित्वावाच। भकवित्वाग्निमकालयाग्निमसमधसर्वरुलमावतथाग
रुधनीनंधाउंयुजयिष्यति। रुमाचमहासाहजयमर्दनीविशानास्त्रीसर्वगदृष्टमावनीयंमक्षसिकदा
पर्यानानांगथागगानामर्दनासम्यक्वद्वानावद्वमूडातिरुहिरुध्यायकायागिकाउंयुजयिष्यति।
नयिष्यति। वावयिष्यति। ययवायुनिदधयिष्यति। कर्षांरुजिरथायदवायमर्गायासाधेन
नकलिकसुहवधनदियरुविशदाः कलः ४ पेधून्यायकाः ३ कलः लाधमार्तकमिष्यति। अरुयाधुजयार

विष्णुनिःसर्गविहङ्गकण्ड ४॥ अवमकवक्रासहायकिर्गवक्तभक्तदवाचककतमासाहदकरगवक्तहासा
हस्यमर्दनीनामविद्यानाहूः सर्वग्रह्यमावनीयाधर्मयथाशायागमाधिकदयस्यानाक्तथागतानाम
हर्तासम्यक्वद्वानावद्वमदा ॥ अवमकरगवाचक्रासहायकिभक्तदवाचक ॥ कतहिल्वं वक्रासहायसाध
वलसहचमनसिकनूलाविद्यहर्तकि ॥ वक्रासहायकिर्गवक्तपुत्राश्रीवीर ॥ गवांस्तुष्टदवाचक ॥ स्थाय
थद ॥ अचलमचलसानमल ॥ यत्कतिवर्धुयत्कतिनीर्धाषसमक्तमुखसिन्नसुवनविद्यकृमेश्वर
गलन ॥ यानंगमसानवला ॥ सानंगवक्त ॥ वलमहावलमहानिर्गुणस्वाहा ॥ कुरुदम्यककायगगान

स्मृतिः॥ समथविषयनरुयः॥ समाधयः॥ चत्वारि सन्निधादाः॥ चत्वारि सन्निधादाः॥ चत्वारि सन्निधादाः॥ चत्वारि सन्निधादाः॥
 एयस्सुनानि॥ चत्वारि सन्निधादाः॥ चत्वारि सन्निधादाः॥ चत्वारि सन्निधादाः॥ चत्वारि सन्निधादाः॥ चत्वारि सन्निधादाः॥
 धर्मगानि॥ चत्वारि सन्निधादाः॥ चत्वारि सन्निधादाः॥ चत्वारि सन्निधादाः॥ चत्वारि सन्निधादाः॥ चत्वारि सन्निधादाः॥
 यगतानि॥ चत्वारि सन्निधादाः॥ चत्वारि सन्निधादाः॥ चत्वारि सन्निधादाः॥ चत्वारि सन्निधादाः॥ चत्वारि सन्निधादाः॥
 ददावहिकावृद्धधर्माः॥ चत्वारि सन्निधादाः॥ चत्वारि सन्निधादाः॥ चत्वारि सन्निधादाः॥ चत्वारि सन्निधादाः॥ चत्वारि सन्निधादाः॥
 यदप्रभावनीयं॥ चत्वारि सन्निधादाः॥ चत्वारि सन्निधादाः॥ चत्वारि सन्निधादाः॥ चत्वारि सन्निधादाः॥ चत्वारि सन्निधादाः॥

न० धर्मनिर्हानं संघनिर्हानं बुद्धनिर्हानं ॥ १ ॥ नृनिर्हानं ॥ लाकपालनिर्हानं ॥ २ ॥ धी ॥ ननिर्हानं ॥ सख
 निर्हानं ॥ मार्गनिर्हानं ॥ यतीत्यसमत्यादनिर्हानं ॥ सूर्यनिर्हानं ॥ ग्रहनक्षत्रनिर्हानं ॥ स्याद्यथैव ॥ सात
 कलिन ॥ विधनलिवनायमान ॥ अमर्षति ॥ अमाद्यवकिमन्त्र ॥ कालिनकालि ॥ कालिवन्त्र ॥ रुनरुन ॥ ३ ॥
 कनकसत्व ॥ समकथाफ ॥ सात्रयाफ ॥ संरुयाफ ॥ वरुधभसादा ॥ अथरुगवास्तस्यां वलायामिमीग
 था अलापक ॥ ४ ॥ मल्लिलाकय ॥ निमस्मिन्नायत ॥ स्वरुगवान्त्रवनाक्षित ॥ निममाक्षित ॥ नेवरुगथा ॥ गहनदवादि
 दवादिदवनकनारुभन ॥ गत्तादिदं नलवनं प्रधीकन ॥ कनसत्यन ॥ हा मुख ॥ ५ ॥ द्याविनागा ॥ अमक

गत्वसत्कृणं मास्त्राय सोष्ठाकमनियराविगं ॥ धर्मधनवसमाक्षिकश्चिदमृकनगा ॥ कन अमं स्रु कन ॥ ६ ॥
 स्मादिदं नलवनं प्रधीकं मकनसत्यन ॥ हा मुख ॥ ७ ॥ यदुष्टमिष्टं विधिवत्युकाक्षिगं ॥ ८ ॥ सास्त्रायान
 रुनयागवाहकं ॥ समाभितारुनसमानविद्यकवजायमनाद्ययमार्गदर्शिन ॥ गत्तादिदं नलवनं प्रधी
 कं मकनसत्यन ॥ हा मुख ॥ ९ ॥ अष्टमहायुं गलथयुमस्त्रायातानिचलात्रियुगानिचव ॥ कदक्षि
 यासुगहनगीणामहर्षिभाहृयकिपु ॥ अत्ययदानं रुवकमहाहृलवीकात्रिन्नास्त्रानियथासुहृ
 ॥ १० ॥ ११ ॥ दंप्रधीकं वनसंघनलमकनसत्यन ॥ हा मुख ॥ १२ ॥ यत्तुयसत्रामनसादृष्टनेडयसंक्रमीरगोम

मा न न हि । न प्रापि या क अ म र्गं वि या ह न मा न दा नि र्वा कि मा प्र व नि ॥ ४३ दं य ती र्ग व न सं घ न ल म र न स
ख न ॥ हा मु ख कि ॥ स ह य था ग दि रु द र्ग न स ख य ४ य ही क्षा य ग व लि ल ॥ ४४ स ला य द वि वि वि कि
लि ता व ॥ ही लं व र्ग द र्ग न मा र्ग ता व ॥ ४५ दं य ती र्ग व न सं घ न ल म र न स ख न ॥ हा मु ख कि ॥ न जा उ कू र्वा
वि वि र्ध हि या र्थ का य न वा वा म न सा थ वा पि ॥ प्र च्छ द नी यं स ह स न क लो क था न द वि र्ग र न न क र्वा ॥ ४६
दं य ती र्ग व न सं घ न ल म र न स ख न ॥ हा मु ख कि ॥ य र थ उ की ल १ पृ थि वी प ति वि ता व उ र्दि र्ग वा
यु रि न प्र क र्वा ॥ ४७ र था य मा प्र क ल स कि र्ग य य आ र्थ मा र्ग ता व न स द र्गि न ॥ ४८ दं य ती र्ग व न सं घ

५३

व ल म र न स ख न ॥ हा मु ख कि ॥ य आ र्थ स त्या नि वि रा व य कि र्ग री न य र्वा न स द र्गि ता नि ॥ का य र्वा
न ॥ स न स ख क लो क र्ग य क र्वा म वा प्र व नि ॥ ४९ र १ य ती र्ग व न सं घ न ल म र न स ख न ॥ हा मु ख कि ॥
वि र्ग था वा य व ता दि न सा अ र्ग ता नै व उ र्ध कि र्ग र्वा र १ र्थे व र्ग या र्ग न वि य य का अ द र्ग न या नि हि व
इ प र्वा ॥ ५० र १ य ती र्ग व न सं घ न ल म र न स ख न ॥ हा मु ख कि ॥ य र्ग म मा र्ग य र १ र्थे व र्ग व ना स म
व स त्वा १ र्थे वि ना र्ग व कु क्षा कान म र्ग न न द व य र्ग व र्ग न म स ॥ हा मु ख कि ॥ य र्ग म मा र्ग य र
१ र्थे व र्ग व ना १ र्ग स र्ग स त्वा १ र्थे वि ना र्ग व कु ॥ ५१ र्ग वि ना र्ग न न द व य र्ग व र्ग न म स ॥ हा मु ख

किं यं गंगाया पगरथे वस्य वनः सर्वसत्त्वाः सुखिनारु वक्तु यथा नाम अन्नं देवपूजं संघं न्नस्य
 यः हस्तुस्वस्ति ॥ याती हस्तानि स मागना निस्ति नानि ह मावथ वा न निरु कर्त्तुं भेदी भगवत्पञ्चासदि
 वाचनाशोचनं नु कुर्वन् ॥ यन् वसत्यन जिना जिना निः ॥ स सत्यवादी निपूतस्य नास्ति ॥ नैव सत्यं न ह
 दास्तुस्वस्ति ॥ न यं कुर्वन् यमहालयस्य ॥ स्वाहा ॥ या यथार्थं ॥ भिन्नविधिनवल निर्धाष ॥ वलमानं ॥ मानव
 कास्तुस्वस्ति ॥ यमहालयस्य ॥ आनवं ॥ आनधावा ॥ मानवमिज ॥ यमहालयस्य ॥ वलवक्तु न पापे ॥ मानं गभस्य गभस्य
 र्थनिर्धाषस्वाहा ॥ यं सावक्तु न दासाह मप्रमर्दनी नाम विज्ञानास्ती सर्वगह्य निमावनी र्थं सुकं गं ॥

कदाप्यस्यानां कथागता नामर्हता संम्यक् वृद्धानां वृद्धानां वृद्धमदा ॥ वृद्धपदा धर्मपदा संघपदा ॥ यमहालय
 ॥ वृद्धपदा ॥ लाकपाल पदा ॥ श्रीध्वज पदा ॥ मरुविपदा ॥ यथारिपदा ॥ आरिपदा ॥ अरिपदा ॥ ह ॥ उप
 ॥ प्रहयपदा ॥ निर्दयपदा ॥ नृत्ति संवृद्धा ॥ सम्यक् वृद्ध ॥ यथकवृद्ध ॥ सार्धिता ॥ आवकं न विधिना ॥ वृद्धा ॥
 हि ॥ यमं ॥ सिता ॥ दुःख ॥ पुजिता ॥ लाकपाल ॥ नमस्तुता ॥ श्रीध्वज ॥ नमस्तुता ॥ पुजिता ॥ सर्वदेवदेविता ॥ यागावा ॥ नहिनानि
 नापत्ति ॥ यमं ॥ सिता ॥ मृत्ति ॥ निर्दय ॥ कता ॥ वृद्धा ॥ निर्दय ॥ कता ॥ देवता ॥ निर्दय ॥ कता ॥ सार्धिता ॥ यमं ॥ सिता ॥ वा
 वरुणलाकन ॥ गावर्गं सर्ववृद्धानां न शानं यथकवृद्धानां माधवा ॥ यागावा ॥ नासा ॥ माकनावा ॥ विपदा ॥ धर्मा

[illegible]

नीनामविद्यानाह्नी सर्वश्रुयमावनीयं हूं गं गासि कतापुक्षाना कथागता नाम हूं नां सम्यक् वृद्धा नो वृद्ध
मृदाययामुद्रितं हृत् दवमानुषासनालाकाः नृत्तं निर्वाद्य पूनं पविष्टं यस्यावार्थयर्गगासि
यश्च १ सम्यक् वृद्ध १ पश्य कवृद्ध १ आवर्कश्च पृथ्वी सं वृद्धश्च सम्यक् वृद्धा १ पश्य कवृद्धा १ आवर्कश्च माता
पिरुदक्षिणीया गुप्ता नीया पर्यायाणि तावद्वाच्यं वीर्यं लीलं नक्षिर्गंदानंदं हूं कृपाया नमिता पत्रियु नि
१ साधिना वाधिसत्त्ववर्या साधिना वाधिया फिषा फा सत्त्वकृतापना जिना मान १ मथ वृद्धा सा ह्ययनि
१ कृच्छ्रद्वानामिन्द्रश्च त्वानश्च मरुता जान १ कवारगे कमरु कखनारु गवत नमस्यता उ वृ १ जया

विशामहाविशामहासाहस्रप्रमर्दनी। आज्ञासर्वसत्त्वानां बृहस्पतिश्चतुर्दिशीं मज्जावयं यदास्यामः॥
सूक्ष्मसाहस्रप्रमर्दनी। कस्य निसर्गकृतानि सृष्ट्या मृदिता यथा यमनृणां प्रदृष्टाश्च यस्तत्राश्च कृष्णसना
नवीन्दुं प्रदृष्टा माविश्यावक्राधनिर्मितानि कथयानि तामूर्त्तिलाकपालेभ्यः मृदिनी। स्यात्तदं कालि
रग। तानदं रुद्र। जामन। सिद्धमदं। क्षाना यथा फ। हस्तगामिनि। मालिनि। हलमिहल। पिहल। शि
हलम। हृदं हृदं हृदं हृदं। सुदनि। वना यवति। हस्तिन। नवनमतिवधुलिवलभवनावनखादा। सुखाव
लूपनर्मासाहस्रप्रमर्दनी। विशानास्त्राणां मातायामयति साहस्रमहासाहस्रालोकधुषद्विकानमकं यत्तदं

कविदिर्गुणाक्षरयोक्तानां कर्त्तृनिर्नादं प्रकृष्टा वंवाधा वयनि स। अहा दृष्टमदाष्टकं नष्टाह रगणावयंदि
सहस्रसंघानावसनीश्च सर्वथा। अथवायासिह तानां सर्वेषामयसं वना। नचरु मोनिषीद निहृय
निहृयिना। अथ रगवांस्तान् कमीव ऊमयी महिनिर्मिमीक। यवतुर्दिशीं पल्लयति। अथ वल्लानामहा
नामानश्चतुर्दिशीं महानग्निजालास्तन्महिनिर्मितवक्तृ। नचाकारणयनिधावति। अथ वक्रसहायनिज
यामयकाक्षमहिनिर्मिमीक। नचसफेनालमार्तं वेदायसं यनिधावति। अथ भक्तादवानामिन्द्राशोभिव
नकिं कृत्वा मलहृत्तयर्चनं वहीनरिषवर्च्यति। नच वसमयनसमनक। सहायां लोकधो यवयत्त

नयमकाऽनूनीकाश्च यथावत्परिचर्यते तज्जमानाश्चामरभासा कथावर्तकऽथ वला नाम हाना
जानऽया जलशारुगवकमरुदवावतऽयं रुरुगवन्महासाहस्यमर्दनीतु नोर्जसर्वगुह्यमा
वनीयं वृद्धमडाधर्मपर्याय यऽकश्चिद्विज्ञापयति गृहीतऽकाया यथा नीऽहृकथा नयित्वा नयि
त्वादहयित्वा पर्यावाय्या लिखित्वा मुक्तयित्वा भानयित्वा निऽमस्य सर्वं किं ह्यापडवायमर्गं यायासा
यमिष्युद्वाशा वैजकलिकलरुहं न विवासायदसेधू नययका नकुललाधर्मा नातिकमिष्यकिं
रुसाश्च जयाहदियकिं सर्वविदुः कथा नननाह रणीसावधयिउ कामेतसु ह्या ननहृ विरनवि

क्रेडकनयनमिषय निवर्जितनसर्वमानवलिक्तायदायनिगृहीतनसर्वमलसमचिरनवम्भार
लयकनयनमनगत्रनिगमऊनपदष्टिमाकककलान्यपगमर्तकानकुटानिकलामध्वमार्यानाकध
न्यां पृष्ठावकीर्णधनहीकलानानागभाधूपयिगवाशावदुर्दिर्धवेकअऽकेन कामस्मानसु विरुचिना
कुरुकास्त्यययिगवाशावलोभायवलो निनललाऊनानिगर्थादकपृथ्यरुलय निपूरुनिस्त्य
यिगवापयिवाति॥ पूर्वोक्तकालसमयउ नरुसहस्रकिनरुविद्या आवर्तयिगवायलेयष्टिक
यासूर्यं कुरुयिगवालिखित्वा नीनिकाया नृदिमहा वैधयूमहावृहयूमहाध्वजयवाद्याययिगवा

नाना पृथगेर्नाना गच्छेद्यद्गमार्ग पूजा कर्तव्यादि वसुधैव कुटुम्बकम् नाना विद्या आवर्तयितव्या नृवंशायुष्यविशेषा वि
हार विद्या निम्नं नृनयदनाजानी नृन विद्वानदवकुल कुरुक्षाला स कुरु लरु निता नाम रग भाल पशु
धाला अय गन र्णका ना र कला रव दिन वद ना गि पछाल्य पूष्या वका धु खधी कला दान भाला सारु ना ना ५५
नाग सप्त धूषिगां कला स र्ववी जानि मुर्ध्नि पाशु र्ध्नि यित्वा वडुर्दिर्ध्नि पुरुष कला निमृग्मो पक्ष कला निमृ
ना नाना गानि स्रज्जालिघान वधनी यानि निमृग्मो गानि गानि निमृग्मो सप्त नृप वधयितव्या निमृग्मो विद्या वा व
रुयितव्या निमृग्मो यित्वा वडुर्दिर्ध्नि पुरुष कला निमृग्मो गानि गानि निमृग्मो सप्त नृप वधयितव्या निमृग्मो विद्या वा व

मृदु कर्म रश्मि १० वा व ना यवुक्ता पुनि विव वा व क प नि विव वा व डु र्म ह ना ज प नि विव वा व ग धा मृ द्वा क
ला ना ना पृथगेर्नाना धयेर्नाना गच्छेद्यद्गमार्ग पूजा कर्तव्यादि वसुधैव कुटुम्बकम् नाना विद्या आवर्तयितव्या नृवंशायुष्यविशेषा वि
हार विद्या निम्नं नृनयदनाजानी नृन विद्वानदवकुल कुरुक्षाला स कुरु लरु निता नाम रग भाल पशु
धाला अय गन र्णका ना र कला रव दिन वद ना गि पछाल्य पूष्या वका धु खधी कला दान भाला सारु ना ना ५५
नाग सप्त धूषिगां कला स र्ववी जानि मुर्ध्नि पाशु र्ध्नि यित्वा वडुर्दिर्ध्नि पुरुष कला निमृग्मो पक्ष कला निमृ
ना नाना गानि स्रज्जालिघान वधनी यानि निमृग्मो गानि गानि निमृग्मो सप्त नृप वधयितव्या निमृग्मो विद्या वा व
रुयितव्या निमृग्मो यित्वा वडुर्दिर्ध्नि पुरुष कला निमृग्मो गानि गानि निमृग्मो सप्त नृप वधयितव्या निमृग्मो विद्या वा व

गीवमहंतथादवी गच्छयथा कथा श्रुतं ॥ गच्छतु वकी दिव्यं रेवकममृतायमं ॥ १ ॥ न सख्यार्क न आशुन
 सन्न जायते ॥ सर्वमप्यहं न वापि हवत्सु ममोषधं ॥ विषयि वृद्धं न नित्यं न च वलन च ॥ विश्वरू १
 सख्यार्क न क कृद्दसमाधिता ॥ कनका कस्य ह्यननया द्यावका ध्ययस्य च ॥ २ ॥ कर्मि हस्यवीर्यं हवत्स
 मृगमोषधं ॥ कला पूर्वो मख्य ग्ना न रूध क मयना मयं ॥ ३ ॥ माया विरविद्या रस्मि काले उदाह न ह ॥ ४ ॥
 यथार्थं ॥ खट्वट विषट विमल विलंब वल वल वल वल च ॥ ५ ॥ अमृति नर्घा ध्या ह्य ॥ वात जापि रु
 जा ना गा ॥ ६ ॥ अमृति या न जा ॥ निरुता ॥ सर्व भाग ॥ ७ ॥ स्वस्व सुमम सर्व द्य सर्व कारवा र्दव ना रु संप्रयुक्त

प्रकर्मसु नय नृप ॥ १ ॥ नागाय वसु न स स्ना न स रू धि न त पृथ्या वकीर्ण ॥ नाना गन्ध यधू यि ना र्ध न ॥
 कला उरय या र्ख दि न व द मा ग्नि य ह्य ल्य सर्व वी जा नि व रु दि र्जी प ह्य फ वा नि ॥ अ र मो व प्र कृ फ वा नि ॥ नाना
 नं गा धि व स ग्ना ति ण म् पु वा धू स पु वा कृ क पु वा का र ॥ २ ॥ पु वा व ध ती या नि सर्व म लो नि सर्व पृथ्या नि ना ना ग
 र्धा द की कला म रु ति कू र ॥ ३ ॥ पु र्ण फ वा नि ॥ य स्य कार वा र्द क र्ण र व नि ॥ ४ ॥ स्य र स र्ण क मा व ध कू र ॥ ५ ॥ धि ष्ठा य
 नी यां ण म् रु ध र्ण स र्ण कं चि ला अ र मो य कृ फ र्ण ॥ ६ ॥ दे व म हा सा रु ध य म र्द नी स र्ण म् रु द ह रु धी ॥ ७ ॥ वृ द्धा य ण क वृ द्धा
 ध्व वृ द्धा नी धा व का ध्व य ॥ व म्मा डो ला क पा ला ध्व य कृ स ता प नी ध्व ना ॥ ८ ॥ क था य क्ता म हा न ग्ना हा नी नी व स पु र्ण का ॥

वीर्यधरुजसाकर्मवगाडं कर्मद्विपुत्रुभक्तिनिवज्जनलानिवक्तिभिन्नदहकभावाकनसावितामद्यालस्कनक्ष
 वनस्यगीभननसखवाकनकार्वाकर्मदयगी॥नानागरेरुथापुथेनिर्दनासर्वपापकाशाकथथा॥इमेशकख
 लिखनलिहृदिनि॥कवलगललगदनिशिगायनिभाकिप्रभाकिस्वाहा॥धावनिस्वाहापुधावनिस्वाहागा
 धर्वस्वाहापलंगनिस्वाहासर्वकार्वाकर्मदयगी॥इमेशकयदेममसर्वसुखानाकसर्वका
 र्वाकर्मदयगीवधिमनुविषयागासर्वद्वेष्टदिगारुदिनाजिगायनाजिनास्वाहा॥गलगलुवेसर्वाभिनामाद
 गलुपिटकरुगदनविषपीतकात्यनिमावयिउकाभनसुखानकसुखविननरुडपीभक्षननिषरुडनक्ष

११

यंविशाउदाहर्तुवा॥कजसासर्ववज्ञानांप्रथकजिनकजसा॥अहगावेववेर्यधसर्ववांसकुधात्रिभां॥पुरुयाभा
 निपुणस्यमोक्त्यस्यचमद्वियां॥वज्जमानिज्जस्यकाधपसाधुर्गुरुष्टोकोष्टिनापूर्वपाप्मावज्जानदस्यधुर्ग
 नव॥मस्यावेवक्रुधावेवनेध्वर्यधधरुकागा॥विषयेलाकयालानामरुध्वनवसुनव॥मनापगीनीमोर्थध
 हानिस्वावसुमृद्विया॥वीर्यधरुजसाकर्मविषमस्तुविषमदा॥ककुमकुपदाहाकिनिर्विषाविषइवध
 शास्त्राश्रयदे॥रुनिकलिनकिलनरुन॥अमनज्जुनेपमुनेकटककयुने॥रुस३खस३खन॥गम
 नूगहनस्वाहा॥हिलस्वाहा॥मिगस्वाहा॥रुगा॥गमुकिला॥ध्ववेसर्वाध्विवर्विका॥पिटकालाहलि

गमश्चकच्छुर्वनिसफमी॥ नागद्वयश्चमाहश्चनरुलाकयथाविषा॥ निर्विषाहगवान्बुद्धाबुद्धकजाहर्न
विषं॥ नागद्वयश्चमाहश्चनरुलाकयथाविषा॥ निर्विषाहगवान्बुद्धाबुद्धकजाहर्न विषं॥ नागद्वयश्चन
रुलाकयथाविषा॥ निर्विषाहगवान्बुद्धाबुद्धकजाहर्न विषं॥ विषस्यपृथिमानाविषस्यपृथिवीयिना॥ ॥२॥
नरुनसखवाक्कतविषा॥ सर्वस्य निर्विषा॥ हर्मिर्न कामरुविषंयुधुयाह्वानासं कामरुविषंस्वाहा॥
अथागकलिकालहविश्रुविवादयनवकथकृन्नाजयिठकामनेपूर्वमहायेत्यस्यपूजाकर्तव्या॥
हूर्यवमहासाहस्यमर्दनीविद्यानाह्नीयवर्हयितव्या॥ वृद्धननिर्जिनामानाधर्मनधर्ममगाधर्म

धननिजिनालीर्था॥ ॥४॥ यक्षमसूनाजिना॥ असुनेश्चजिना॥ सा मावेनरुजुनसागन॥ अग्निनावजि
नाकाया॥ उदकनागिषाजिना॥ वारुननिर्जिनामघाननवजुक्षमथरु॥ सखनदवाक्रिष्ठकिसखन
पृथिवीस्त्रिना॥ सख्यवृद्धवधर्मवसखजयठमामृषा॥ स्याथरथदी॥ असुनेश्चजिना॥ वदूलनिवानधि
सर्वार्थसाधनित्रयनाजिना॥ धन॥ ॥२॥ क्षिगुष्कावर्लरगोरमगुफमनि॥ जीहनिस्त्राहा॥ यजंरनिस्त्राहा॥ वल
युर्लुनिस्त्राहा॥ जयस्त्राहा॥ विजयस्त्राहा॥ जयविजयस्त्राहा॥ जिना॥ यथार्थिकावेवसर्वयायापना
जिना॥ गगा॥ ॥३॥ धासासर्वरु॥ ॥४॥ मागि॥ ॥५॥ जलाघन॥ ॥६॥ क्षात्यनाजीअवलाकिरुक्षनाजिनिगहनमी

नननार्चिमनृशावजस्यवानामगृहीत्वसर्वदा नेवरुयंशं किनच्छुगित्वं ययं अष्टानमहाशक्तीनां
 मानिकीर्त्यमृनयदार्थाननगस्य अग्निर्नविषनक्षत्रकमनकायकमर्षयनिष्ठः सवदसो अष्टावतनउप
 छिन्नउच्छिन्नैकमुवधकवर्ममर्षः अन्तस्मनका अवलाकिरुध्वनरुखधुखधुपुपयुधकाः सवि
 द्गुहार्गपिरुवर्गैकमुच्छिन्नया विधनदीयेरुयशांनगस्य कायत्रिपरुयकिचिदनायुर्कपनिभनय
 कृर्गसमयदवाग्मृगथकोषिष्मनभासुनवृद्धजनकुरगावमानामुनसखप्रकाशकामूनसखयु
 किछायप्रजायमानसर्ववकार्यामासरुलाहवकुखाहा ममसर्वसत्त्वानां वस्त्राहा गतावनामहाप्रजा

१३

उच्छिन्नाश्चकृगा ऊरुलिशासुतापिनायं विशामहासाहप्रयुमर्दना विशामहंपवका मितनकाशोदिनं
 कनीवृद्धवीर्जनमस्यामाधमनाजं सलोकनंयनपमना विशाजं वृद्धीयप्रकाशिता धर्मायवविधिष्टय
 सद्यायवगत्सहभवावृद्धस्ययाशोवदिलावृद्धवचनमववीर्या नृजाप्रत्यकवृद्धाश्चवृद्धानाधवका
 ममययालाकपालाश्च यावकादवनायिव ॥ १० ॥ नामनृचलाका नृसर्वकर्मसमृद्धिना ॥ सकीहनाह
 साधानागहंरुक्षामहा मृनृगकाननयिवदुष्टनायिषकाश्चुर्दिनं ॥ यामायुकोनकायनृयामाग
 र्गनकिच्छुकिानननानीसंपयागवृनस्यसुक्ष्मिच्छुदियापूजवीर्जं विनासकिल्लल्लवातवृद्धः ॥

निस्यन्नागर्लयावस्ती जाय कनविधल्यरुगनामानिरुवांमाख्यास्थलाकनाथल्ल्हादिमंमंरुकासृगना
 रुद्रस्कभायमानंमृष्टिका॥मारुकाजामिकावेव कामिनीनवगीतथापूकतामारुनद्रायवकृति४क
 ध्यादिनी॥मुखमधुमिजाजलवावनक सर्वमदनी॥प्रकृष्टाययदभदानकाधोरुयंकनाशावरु १२
 लक्ष्मनूपानि यथागृह्णतिदाजकान्॥मंरुकेनगृहीतस्यचक्षुषीयनिवर्तक॥मृगनांरुयहीतस्यच
 दिहवनिदानुष॥रुद्रनयगृहीतस्यस्फुटोवाल्गिदाजकभाज्यमानगृहीतमुद्रुनलालीवमृकमि
 ॥मृष्टिकाप्रगृहीतमुमृष्टिविज्ञानमृकमि॥मारुकासंगृहीतमुद्रुनरुद्रसरुतथा॥जामिकासंगृहीत

रुनाहिनन्दनिसरुतो॥कामिनीप्रगृहीतमुद्रुसफसंपनादति॥नवगीयहीगृह्णमुद्रुजिज्ञादनेष्टयखादमि
 पूकताप्रगृहीतमुद्रुकाशरुनरुतथा॥मारुनद्रागृहीतमुद्रुविचित्रनूपमादिहत्तु॥कृतीप्रगृहीतस्यगन्ध
 प्रतिवाययक॥कृषाधीगृहीतस्यकक्षसंयजिनूधरु॥मुखमधुगृहीतमुद्रुहयविनूचिचरु॥जालवा
 प्रगृहीतमुद्रुहिक्तास्तालध्वजा॥रुद्रनूपमासख्यास्थयथाजामिनिदानकान्॥मंरुकागवमृधनमृगनाजाम
 रगायथा॥स्फुटकमाननूपन॥अयमानर्धगालवर्ग॥मृष्टिकाकोकनूपन॥द्रोगनूपनमारुका॥जामिका
 मृधन॥घाघनूपनकामिनी॥नवगीधननूपन॥कनूपनपूकता॥मारुनद्राविज्ञाननक्षकृतीपक्षिनुपिणी॥

कथयाधीकोर्कनडोलकमखमलिकाशाखलंकननयनगाम्नासनिदानकान्नाउगा४६७कुरुनाधाना४दा
 नकाधोर्यकना४॥उगा४समानयिष्ठासिस्त्रपासकविता४॥वन्दनानामगन्धर्वयक्षसनायनिर्मलान्नाकसा
 लखकमडाकदलाइयनपरवयत्ताउगा४समानहिलंगान्यकदलगहान्नाकनकल्हमाननीगायक
 वधनपीठिगा४॥कगाववीसहावका.लोकनाथकगाअलि४॥उगा४निगानिरुतानिवीडीनासक्रियाक्षिनी॥
 कयादधुपरदयासिलोकनाथस्यसमूर्वे॥यस्यानजायकपूजाजागवायस्यगच्छ॥लिकामधर्मवनरक्ष
 ४॥समीतवकुर्दधी॥वेर्त्यसंपूजयित्वाउसस्त्रागासुविहयिगा४॥सर्वयालिफधनधीपूष्यगन्धसमाकृसा४॥

पंचनंगलसूरुक्षगलीनांकाजयच्छकं॥अर्द्धनाथस्त्रिकालमद्रिकृत्वाउसर्वयान्नावक्रनिर्मितमित्वाइव
 कक्षाचयकलिंगा॥यानद्वादशवर्षाविमानागांधिनंकनी॥यद्धमांसमिकमविशासुर्ववक्रधनिर्मिता॥स
 फधास्यसूयामूर्द्धाजूर्द्धकस्यवमअनी॥स्यायथर्द्धांशंगवर्गहैरगरुवन॥४॥नन्दिविनन्दिमूनलिगिधि
 वनिगनूतिनूतिगिनिगवन्नलोचनवनाषन्नवलसनवनावनअलङ्कृ.अगरुवाअलङ्कृतलङ्कृपक
 र्षलिसादा॥क्षिप्यसिस्त्रगीगरु४सम्यग्बद्धकुंरुद्रिया॥गरुसुसखिनाशाकुमावनस्यकुजाकका४॥स
 सु४सक्रिस्तागरुकोलनपत्रिमचक॥नानानगाक्षिस्तालिअकगाग्गेनसर्वया४॥उगा४नकासमाख्यागा

[illegible]

अश्लिष्टगवन्ततमस्यमानाउच॥य४क॥श्चिरुदन्तरगवन्त॥वका॥४०॥दंमहासाहस्रयुमर्दनीसंरुंमद्गुनीया
ज्ञानयद्वावद्दृष्टयत्ययवायुयारुनवाङ्मनयाग४कनक्षीयावेत्ययुजायनक्षरविगवी॥अष्टम्याव४०॥
४०॥य४क॥द४०॥व४०॥ग४०॥द४०॥न४०॥व४०॥य४०॥क४०॥ला४०॥वि४०॥आ४०॥व४०॥रु४०॥यि४०॥त४०॥या४०॥॥क४०॥स४०॥या४०॥ष्ट४०॥म्या४०॥व४०॥रु४०॥
हानाज्ञानांयुज४०॥स४०॥म४०॥न्वा४०॥ह४०॥न४०॥कि४०॥ना४०॥म४०॥वा४०॥धा४०॥व४०॥य४०॥नि४०॥॥व४०॥रु४०॥द४०॥॥व४०॥रु४०॥धु४०॥म४०॥हा४०॥ना४०॥ह्रा४०॥य४०॥न४०॥क४०॥॥स४०॥म४०॥वा४०॥ह४०॥न४०॥कि४०॥ना४०॥
म४०॥वा४०॥धा४०॥व४०॥य४०॥नि४०॥॥य४०॥॥व४०॥रु४०॥द४०॥॥व४०॥रु४०॥धु४०॥म४०॥हा४०॥ना४०॥ह्रा४०॥य४०॥न४०॥क४०॥॥स४०॥म४०॥न्वा४०॥ह४०॥न४०॥कि४०॥ना४०॥सर्व४०॥स४०॥त्त४०॥दि४०॥गान४०॥क४०॥व४०॥गा४०॥य४०॥
र४०॥ग४०॥व४०॥रु४०॥॥व४०॥का४०॥य४०॥॥४०॥॥दं४०॥महा४०॥सा४०॥ह४०॥स्र४०॥यु४०॥म४०॥र्द४०॥नी४०॥सं४०॥रुं४०॥म४०॥द्गु४०॥नी४०॥या४०॥नि४०॥ध४०॥न४०॥य४०॥नि४०॥वा४०॥च४०॥य४०॥नि४०॥य४०॥य४०॥वा४०॥प्रा४०॥नि४०॥॥

सचरंदनकरगवधयश्चत्वा नामहानाजानक्षीवन्नपीधुयाकक्षयनाशनग्लानरुषयपनिष्कानेनीत्सुकंक
निष्णामशासत्कनक्षुरविष्यनिःसर्वसत्तेयुनूत्तकक्ष्मातिगक्ष्मपूजितक्ष्मनारुनाजनापाक्ष्मचरुविष्यति॥
अन्यकीर्तिकक्षमक्षवाक्षपनिवाङ्कोनायूक्षामिदुमक्षगगायिरुविष्यति॥नक्ष्मार्धनकुलपूषेधवाक
लइहिगावा॥विनारुदिकर्वा॥विनायन॥विनारुनक्षक्षयनाशनपकनक्षविष्णुधननक्षदक्षला
रुननक्षमिदुसंसर्गानरुदक्षवाक्षप्रयूक्तनरुदिकर्वा॥यस्याचरुगगदगदीरुस्यपूनरुक्ष॥रुदक्षमक्ष
साहस्रप्रमर्दनीसूर्यश्चावशिष्यति॥रुस्यचत्वा नामहानाजानक्षनक्षभवन्नक्षवन्नक्षगुर्धिसर्वविधस्यति॥

अवमर्दक्षिकंदनकरगवं महासाहस्रप्रमर्दनीसूर्यस्यापिगृहचकमपिनाक्षिदिवंवासंकल्ययिष्यति
रुस्यसंवत्सनयावदमन्थावगान्नलप्यति॥नमस्यनीयक्षुरविष्यति॥सर्वरुनगलस्यरुदक्षमहासा
हस्रप्रमर्दनीसूर्यश्चावशिष्यति॥रुस्यचत्वा नामहानाजानासूतमूयदर्शयति॥कमगयूननि
गनयक्षानाक्षसा॥रुक्तस्यरुक्तार्थकविज्ञाकविशार्सविधस्यति॥सत्त्वानीहितार्थाय॥रुमानिमनुपदा
निरुक्षान्नपवनक्षुरविषिष्टारुमानिगीरुनविपूलायमानानिइनावगन्नक्षजसाधानक्षरुयधर्मम
आमर्त्यरुस्यश्चादवनाक्षक्षवीयति॥पाञ्चलिस्तनमस्तुलास्तकनाथसमववीरु॥सूताविनारुय

रुगवतमनदवाव रुग्यानिमानिरुदकरुगकरुगवगायकमहामहासुखासिनापिनानि॥स्याथरधदं॥महासा
रुमुषमर्दनीमकुंमहामायुनीमहाभीभवतीमहाप्रसिप्तनामहामहासाधनलीधकि॥नानिचरुगवगायक
मिषपनिवर्जिनी॥दुर्दमववदुर्नयदिदयचमिषंससुष्ट॥रुगवयंरुगवन्कथंप्रकिययाम॥पूर्वमका
रुगुवांलीहिरुननदवाव रुग्यानिमानिरुदकरुगकरुगवगायकमहामहासुखासिनापिनानि॥स्याथरधदं॥महासा
रुमुषमर्दनीमकुंमहामायुनीमहाभीभवतीमहाप्रसिप्तनामहामहासाधनलीधकि॥नानिचरुगवगायक
मिषपनिवर्जिनी॥दुर्दमववदुर्नयदिदयचमिषंससुष्ट॥रुगवयंरुगवन्कथंप्रकिययाम॥पूर्वमका
रुगुवांलीहिरुननदवाव रुग्यानिमानिरुदकरुगकरुगवगायकमहामहासुखासिनापिनानि॥स्याथरधदं॥महासा
रुमुषमर्दनीमकुंमहामायुनीमहाभीभवतीमहाप्रसिप्तनामहामहासाधनलीधकि॥नानिचरुगवगायक
मिषपनिवर्जिनी॥दुर्दमववदुर्नयदिदयचमिषंससुष्ट॥रुगवयंरुगवन्कथंप्रकिययाम॥पूर्वमका

[illegible]

[illegible]

मि अ प क्रा मं तु म या य वि रु द्र वि रु नो द वि रु प न या ध रु ना ॥ सर्व य हा ॥ अ गा रा ना ॥ शृ ध रु म सो म्य वि रु
मे रु वि रु क ल्या न वि रु शृ ध रु म वृ द्ध ध र्म सं घा रि य न्ना ॥ न य था ॥ का लि क ला लि कू म्हा वि रु ॥ सी खि नि ॥ क म
ला कि ॥ हा नी कि रु नि का नि ॥ श्री म कि रु नि पि ग ल ॥ लं व य ल व ॥ का ल पा र ॥ य म इ ति ॥ य म ना रु ति ॥ रु रु य सु ति
यु ति रु ॥ थ र्म ग न्ध य र्थ व लि धू य रु क स्था मि ॥ न रु थ र्म म स र्व स त्वा ना य र्म र्म य ड व र्था जी व रु व र्थ
ह र्म य र्थ रु धी र्म ॥ सि द्ध रु म म रु य दा ॥ स्वा हा ॥ ॥ उ र्व म या रु म क स्मि न्म म थ रु ग वान्ना व र्था वि रु
न कि स्म ॥ ऊ र्व व न रु ना थ पि रु ध्या ना म म हा ति रु र्म ध न सा र्ध रु न र्व लू य न ॥ म म य न्ना व र्था रु व न रु ना

[illegible]

मिर्लमहि कृष्णमिदं नित्यं नवाकदरु नृणां शिवि न प्रवृत्तिता शिवि ज्ञाप्य संधनञ्च विहाय त १०० प्रवृत्तीयेन संसृ
 स्तार्य यथा कदा नृणां प्राप्य यमानां शिवे न मस्मात्प्रति न नृत्तु चिना हि नृत्तु नाम ह नृत्तु प्रत्येकं दक्षिणे
 यादीरुष्टं दक्षिणं सक्ता कदा याद गोपतिरुष्टं वा ह यमा शक्तिनी नयति दक्षिणं यमानां प्रत्येकं दक्षिणे
 यन्त्रं यं पदियं यमा प्रवृत्तिं कुरु गवायुष्यं कमानं ह मरुद वायुं यमा हृत्वा न नृत्तुं यमा गमयु नृत्तुं नृत्तुं यमा महा
 मायुं यमा निहा नृत्तुं यमा कति शर्म यमा सर्वशाला नृत्तुं यमा कान् नृत्तुं यमा यमा निहा नृत्तुं यमा कति शर्म यमा सर्वशाला नृत्तुं यमा कान् नृत्तुं यमा महा
 यमा यमा नृत्तुं यमा निहा नृत्तुं यमा कति शर्म यमा सर्वशाला नृत्तुं यमा कान् नृत्तुं यमा यमा निहा नृत्तुं यमा कति शर्म यमा सर्वशाला नृत्तुं यमा कान् नृत्तुं यमा महा

58

七

छिनावलिमपनय अर्द्धावदकमनायक मक्षिनागनाभागं मुखनागं कलभागं हृदागगलगदं क
 धूनं दकधूलरुदयधूलं यष्टधूलं पाध्वधूलं उदलं वस्तिधूलं मक्षिधूलं यानिधूलं पनेधूलं रुद्धधूलं यादधू
 लं अऊयष्टगधूलं वापनयना जोस्वस्तिदिवास्वस्तिमध्यदिनस्तिरास्वस्ति सर्वमदानार्थं सर्ववृक्षादिषा
 रुमगगयथागच्छति विडिकिडिदिडिमिडिनिडिअरुघाठइगाठरुनि। सिवगुठियाठुपिष्ठात्रिनिवर्षदि
 आनादिदिठुनादिदि। लमलकल। तिलमल। तिमशइमश। वृटिमिटिविरुप्रवयलविमल।
 इल्ल२ अर्द्धमुखि। कालि२ कला२ कनालिमहाकालि प्रकीर्णकक्षि। कूल२ वरूल२ काल२ वरूल२

वासा इवादा इवा इम इवा रगा लाया वला या यमि वला या यि ७२॥ हिलि हिलि हिलि हिलि हिलि हिलि हिलि हिलि
लिहिलि हिलि ॥ ५० ॥ मिलि मिलि मिलि मिलि मिलि मिलि मिलि मिलि मिलि मिलि ॥ ५० ॥ मिलि मिलि मिलि मिलि
मिलि मिलि मिलि मिलि मिलि मिलि ॥ ५० ॥ वल वल वल वल वल वल वल वल वल वल ॥ ५० ॥ मरु मरु मरु मरु
मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु मरु ॥ ५० ॥ ह्र ह्र ह्र ह्र ह्र ह्र ह्र ह्र ह्र ह्र ॥
५० ॥ वा वा वा वा वा वा वा वा वा वा ॥ ५० ॥ पा पा पा पा पा पा पा पा पा पा ॥ ५० ॥ जाल जाल जाल जाल जाल जाल जाल
जाल जाल जाल ॥ ५० ॥ दम दम दम दम दम दम दम दम दम दम ॥ ५० ॥ इ इ इ इ इ इ इ इ इ इ ॥ ५० ॥ नि नि नि नि नि नि नि नि नि नि ॥ ५० ॥

[illegible]

छिलासूक्तनवशामहामनसि नानित्यं गच्छेववमस्तिनाग कालकाष्पलालक्ष्णार्णवान्धामननकशादधिम
 श्चामधिरश्चैवपुत्रनीकादिष्ठापनिष्ठाकर्काटककर्णखपालकर्णवलास्वनावली ॥ १ ॥ नक्षत्रपित्रममेशीनागनाज
 पुनित्यलक्ष्मिनाकर्णकर्णकुलीनक्षत्रीनामागच्छेववसाडनगाधिपनकालनमेशीमअधिकनवराकथापुन
 लकच्छुनमेशीलकटमुखनवगाकालकनसूनदनवात्सीयुद्धमसदावाचलपुनममेशीमेशीलैव न क ८१
 नवगाजमानवाश्चयनागास्तथेवाकनमानवाशासृगिलक्ष्ममदानागामुनिलिन्दश्चविष्णुनाशाएधिवी
 चनावयनागास्तथेवजनतिष्ठनाशाज्जनाकचजायवयवमनसमासनाशाचकलीर्षाद्विधीर्षाहिमेशी

मनपुनित्यलक्ष्मिनाज्ज्यादकषममेशीमेशीमदिपदध्ववाचउस्यदधूममेशीवरुपदचामामज्यादकाहिसुर्माम
 महिस्तुद्विपादकाशासामवउस्यदाहिंस्तुर्मामहिंस्त्वर्वहपदाशासर्वनारगधूममेशीयनागाजलनिधिनाशासर्वरु
 कधूममेशीयकविरुपधिवीस्तिनाशासर्वलधूममेशीयसलाज्जुस्यवमाशासर्वसलासर्वशोभासर्वरुनाश्वक
 वलाशासर्ववैसुखिनक्षत्रसर्वसकुनिनासयासर्वरुडादियक्ष्मकुमाकश्चित्थायमागमन्ममेशीचिरुंसमासा
 यकनामिविषद्वर्षनकायनियहैवेवकरथेवयनिपालनानमाकुवृक्षायनमाकुवाधयानमाकुमुकायन
 मामुमुकायनमाकुआकयनमाकुआयनमाविमुकायनमाविमुकाययवाकधवाहिनयापधर्माय

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

धनदाशकं॥ रुचिमुविद्यनिमविस्वाह॥ स्याहयननानन्दअनासगनकालननमममयनह वरुवराभानाम
मयूननाकावहवति॥ नपूननदंष्ट्रय्य॥ कलस्यहगात्रहभवसकनकालननसमयनसूचधुवरासाना
ममयूननाकावहव॥ अस्या॥ अनन्दमहामाज्याविद्यानाह्वाजगहिहृदयमनवाख्यामि॥ नयथा॥ ६०
मिलिमिलिमिलिमिलिमिलिमिलि॥ मिलिमिलिमिलि॥ मिलिमिलि॥ मिलिमिलि॥ मिलिमिलि॥
॥ सुठंमार्तवासुवत्रमिकिसियहिन्नमठि॥ नभावदानां विलिकिसियान्नमूल॥ ॥ मिहानालाहिममूल
उवासुठंवाकृदिकूनदिकूकूनदिकिलकूकूनदिकूकूकवव्यायावयकुदवसमकननवमासांदशमासां

॥ मिलिमिलिकिलिमिलिकिलिमिलि॥ कठुमलदइंवसुदमाडिदलिमसकुवदवसवद॥ वसनरधनवकुद
केनकेलानकेलिम॥ खलिमधाषनविल॥ ॥ मिसकुलुठं वठुठं मज्जदनदियलदअननदअलमालवध
कुदवानवादकनसर्वक॥ समकननात्रायलियानायलिरुमिलिकूकालि॥ ॥ मिलिमिलिकिलिमिलि॥
लिमसिद्धाकडामिजमकुयदास्वाहा॥ ॥ सुदंमातदमहामाज्याविद्यानाह्वाजगहिहृदय॥ ॥ सुयवानन्दमहायून
विद्यानाह्वाजमगकनमनसिकरुवा॥ ॥ अनधगकनमनसिकरुवा॥ ॥ पथिगकनमनसिकरुवाडलथ
गकनमनसिकरुवा॥ ॥ नाजकुलमधगकनमनसिकरुवा॥ ॥ दोनमधगकन॥ ॥ मिमधगकनउदकमधग

[illegible]

यौयस्थानयामहाय योविशानाहानहयाहकयागुह्यायनिजाहानयनिग्रहपनिपालननहायाहस्य
यननदह्यनिहाननहहकयनिहाननहविषइषरहानविषनाहाननहीमावहधनधनहीवहधनधनक
विहवविहभयायसंक्रामह॥ देवावा देवीवा देवपुत्रावा देवइहितावा देवमहल्लकावा देवमहल्लिका
वा देवपार्षदावा देवपार्षदीवा॥ नारगावा नागीवा नागपुत्रावा नागइहितावा नागमहल्लकावा नागमहल्लिका
वानागपार्षदावा नागपार्षदीवा॥ असुरावा असुरीवा असुरपुत्रावा असुरइहितावा असुरमहल्लकावा असुर
महल्लिकावा असुरपार्षदावा असुरपार्षदीवा॥ मनुजावा मनुजीवा मनुपुत्रावा मनुइहितावा मनु

ह २

महल्लकावा मनुमहल्लिकावा मनुपार्षदावा मनुपार्षदीवा॥ गन्धवावा गन्धीवा गन्धीवा गन्धपुत्रावा
गन्धइहितावा गन्धमहल्लकावा गन्धमहल्लिकावा गन्धपार्षदावा गन्धपार्षदीवा॥ गन्धर्वावा गन्धर्वीवा
गन्धर्वपुत्रावा गन्धर्वइहितावा गन्धर्वमहल्लकावा गन्धर्वमहल्लिकावा गन्धर्वपार्षदावा गन्धर्वपार्षदीवा॥ कि
न्ननावा किन्नरीवा किन्ननपुत्रावा किन्ननइहितावा किन्ननमहल्लकावा किन्ननमहल्लिकावा किन्ननपार्ष
दावा किन्ननपार्षदीवा॥ महानगावा महानगीवा महानगपुत्रावा महानगइहितावा महानगमहल्लका
वा महानगमहल्लिकावा महानगपार्षदावा महानगपार्षदीवा॥ यक्षावा यक्षीवा यक्षपुत्रावा यक्षइहितावा य

33

पू० नावा पू० नीवा पू० न पू० शावा पू० न इ० हिगावा पू० न म० रु० लिकावा पू० न म० रु० लिकावा पू० न पा० ष० दावा पू०
न पा० ष० दि० वा० क० ठ० य० दू० नावा क० ठ० य० ट० नि० वा क० दू० य० न० पू० शावा क० दू० य० ट० न० इ० हिगावा क० दू० य० ट० न० म० रु० लिकावा
क० दू० य० न० म० रु० लिकावा क० दू० य० ट० न० पा० ष० दावा क० दू० य० न० या० ख० दी० वा० स्क्० च० वा० स्क्० भी० वा० स्क्० च० य० शावा स्क्०
च० इ० हिगावा स्क्० च० म० रु० लिकावा स्क्० च० म० रु० लिकावा स्क्० च० या० ष० दावा स्क्० च० या० ष० दि० वा० उ० मा० दी० वा० उ० मा० द० य० शावा
उ० मा० दू० ही० शावा उ० मा० द० म० लिकावा उ० मा० उ० म० रु० लिकावा उ० मा० द० या० ष० दावा उ० मा० द० या० ख० दि० वा० ऋ० था० वा० छ० थि०
वा० छ० य० य० शावा छ० य० इ० हिगावा छ० य० म० रु० लिकावा छ० य० म० रु० लिकावा छ० य० या० ष० दावा छ० य० या० ख० दि० वा० ऋ०

[illegible][illegible]

॥ अथ यन्त्रं दत्तं यन्त्रिंशत् नमस्तस्मै ॥ विष्णुं स्वर्गं विष्णुं नमस्तस्मै ॥ विष्णुं नमस्तस्मै ॥ विष्णुं नमस्तस्मै ॥
 श्रीवत्सलवर्णं सगं प्रसीदतु मलदासं ॥ नमस्तस्मै ॥ विष्णुं नमस्तस्मै ॥ विष्णुं नमस्तस्मै ॥ विष्णुं नमस्तस्मै ॥
 मानं ॥ स्वर्गं नमस्तस्मै ॥ स्वर्गं नमस्तस्मै ॥ स्वर्गं नमस्तस्मै ॥ विष्णुं नमस्तस्मै ॥ विष्णुं नमस्तस्मै ॥
 इष्टं विष्णुं नमस्तस्मै ॥ विष्णुं नमस्तस्मै ॥ विष्णुं नमस्तस्मै ॥ विष्णुं नमस्तस्मै ॥ विष्णुं नमस्तस्मै ॥
 दत्तं विष्णुं नमस्तस्मै ॥ विष्णुं नमस्तस्मै ॥ विष्णुं नमस्तस्मै ॥ विष्णुं नमस्तस्मै ॥ विष्णुं नमस्तस्मै ॥
 ॥ अथ यन्त्रं दत्तं यन्त्रिंशत् नमस्तस्मै ॥ विष्णुं स्वर्गं विष्णुं नमस्तस्मै ॥ विष्णुं नमस्तस्मै ॥ विष्णुं नमस्तस्मै ॥

५१

लव वाक न स्वस्ति र्व व सु सम न क र शा नून यामे दा मायू र्या वि शा ना रू क था ग र ला धि र या स्वा न हि क्षा म म
 सर्व स त्या ना थ न क्ता क र्व नु गु र्दि य वि शा र्थ य नि ग र्थ य नि या ल नं षा कि स्त स्त य नं द थ य नि दानं
 ष म्पु य नि दानं वि ष दू ष षा स्ति ष ना ष नं षी मा व न्ध न्ध न षी व न्ध न्ध क नू जी व नु व र्ध ष र्थ ष र्थ ष थु ष
 न दी ष र्थ षा थ वा नं द य क्षा मि दा य क्षा ४ स म्प द कू ल य नि व स न्ति वा य न स म्प नो य र्व क ना थ वा ना ष य व
 ना रू ष ॥ अ ट वी ष म दा ट वी ष न दी ष कू अ ष म दा कं ष षु य ष व र ष ष र्क अ र ग षु य ल्द ल षु गि नि नु
 दा ष म षा न ष म दा ष म षा न ष व ल न ष म दा व ल न ष ष ६ आ ट क ष न ग न ष म दा न ग न ष ग म ष धा

यकि सा यिसय १ स यो १ स शा का सा मा ल्य १ स स ना य कि १ स प्र ष १ स दू क १ स प्र व न १ स पा नि ष द १ न या
 म हा म हा मा य र्या वि द्या ना स्ता रु हि का १ म म स र्व स त्वा ना व न कौ क ना उ जी व उ व र्ष ष रं प ष १ उ ष
 न दी ष रं १ त य था १ व लू क १ अ मि रु द्या त नि व नू ष व कि सा म व रं व लू मा लि नि व लू नि यू षि क वा व नि व लू
 हा १ प ष्चि मा या मा नं द दि आ यो वि नू या द्वा ना म ना ग म हा ना आ प्र मि व स कि ॥ ना मा धि प कि न न क ना
 ग म र स र द्र प्र नि वा ना ना गा ना मा धि प र्यं का न य कि ॥ य १ प ष्चि मा दि षी न क कि य नि या ल य कि ॥ सा यि
 स य १ स यो १ स शा का सा मा ल्य १ स स ना य कि १ स प्र ष १ स दू क १ स प्र व न १ स पा र्श द १ अ न या म हा मा

२२

य र्या वि द्या ना स्ता रु हि का म म स र्व स त्वा ना व न कौ क ना उ जी व उ व र्ष ष रं प ष १ उ ष
 ॥ व इ नि १ व इ नी १ म टि क १ का टि १ वि यू म कि १ ॥ रु रु रु रु रु रु रु १ ॥ व व व व व व व १ ॥ व न १ ॥
 व व १ ॥ स्ता हा १ उ रु ना या मा नं द दि आ यो व ष म र षा ना म य रु म हा ना आ प्र मि व स कि य हा धि प कि न न
 क य रु ष र स र द्र प्र नि वा ना य हा १ मा धि प र्यं का न य कि ॥ उ रु ना दि षी न क कि य नि या ल य कि ॥ सा यि
 स य १ स यो १ स शा का सा मा ल्य १ स स ना य कि १ स प्र ष १ स दू क १ स प्र व न १ स पा र्श द १ न या म हा मा
 य र्या वि द्या ना स्ता रु हि का म म स र्व स त्वा ना व न कौ क ना उ गु कि य नि ग षी य नि य रु य नि या ल नं षा किं लू लू

यमं दद्यु यनि हानं क्षु यनि हानं विष दृष्यं विष नाक्षरं सीमा वन्धनं क्षी वन्धनं कथा कु जीव कु व ध
 क्षरं यक्षु क्षु क्षान दानं क्षरं क्षयथा ॥ सानि शनि निश्मक्ति २ हि निश्मक्ति हि नि नि मि नि नि हि नि निः पल २
 पि गलः बल २ यल २ वन्धनं मक्ति रु रं विषं नि रु रं विषं वंधु मक्ति स्त्रा र्णा यूर्वक्षधृ न नाद्य रु द कि क्षान १००
 वि नृ क ४ प क्षि धन वि नृ य रु ४ क व न र क्षा रु ना दि क्षं ॥ वत्सा न नृ क म हा ना जा य क्षा स्त्रि न ४ दि क्षा क्ष
 न प्र ४ य नि याल य कि म हा स न्या म हा व ला ४ प न य क्र प म थ ना इ ह वा अ य ना कि ना ४ ॥ अ द्वि म ना य
 कि म ना व र्धु व ना य क्षा स्त्रि न ४ ॥ द वा स न म पि र्म ग्र म म न रु व कि म ह र्दि का क्षा र्ण य न या म हा मा य

यो वि या ना क्षा म म सर्व स लानां च न क्षां कर्व कु यु पिं य नि गा क्षं य नि याल नं क्षा निं स्व स्त्राय नं द
 क्षु य नि हानं क्षु य नि हानं विष दृष्यं विष नाक्षरं सीमा वन्धनं क्षी वन्धनं कथा कु जीव कु व ध
 र्ध क्षरं यक्षु क्षु क्षान दानं क्षरं क्षयथा ॥ न ल म ल कि ल कि ल मि ल क्षि ल वा म इ इ व व य कु द व ४ म
 म न न हि नि २ मि लि २ लि लि २ रु म रु रु म् ॥ अ ट व ट य न म दू व ट व य रु द वा गु ठ गु ठ य रु म
 म न न अ उ क व लां ॥ अ र्क्षु न र्क्षु उ र्क्षु उ र्क्षु व र्क्षु व र्क्षु म क् ॥ अ नि डि मि नि डि नि नि डि पि नि
 डि हि नि पि नि डि नि डि ॥ हि हि हि हि ४ ॥ हि नि २ मि लि २ रु ल २ मि लि २ मि लि २ रु ल २ न न ल स्वा

का॥ उ॥ कृ॥ ल॥ मान॥ न॥ महा॥ य॥ रु॥ स॥ ना॥ य॥ ती॥ ना॥ मानि॥ य॥ ध॥ न॥ ध्या॥ य॥ नि॥ व॥ स॥ कि॥ ॥ क॥ य॥ था॥ य॥ ध॥ य॥ रु॥ ॥
 न॥ न॥ स॥ सं॥ क॥ य॥ न॥ न॥ वा॥ ह॥ न॥ ॥ मि॥ धि॥ ला॥ यो॥ पु॥ नि॥ व॥ स॥ कि॥ द॥ न॥ स॥ था॥ य॥ या॥ च॥ क॥ ॥ सा॥ य॥ न॥ या॥ म॥ हा॥ मा॥ य॥
 यो॥ वि॥ या॥ ना॥ कृ॥ म॥ स॥ सर्व॥ स॥ ला॥ नां॥ च॥ न॥ कृ॥ क॥ ना॥ उ॥ गु॥ कि॥ य॥ नि॥ ग॥ धं॥ य॥ नि॥ ग॥ द॥ य॥ नि॥ या॥ ल॥ न॥ ॥ कि॥ स्व॥
 ह्य॥ यं॥ द॥ यु॥ य॥ नि॥ हा॥ न॥ न॥ कृ॥ य॥ नि॥ हा॥ न॥ वि॥ य॥ इ॥ य॥ लं॥ वि॥ य॥ ना॥ ध॥ न॥ ती॥ मा॥ व॥ ध॥ न॥ धी॥ व॥ ध॥ कृ॥ व॥ नु॥ जी॥
 व॥ उ॥ व॥ य॥ ध॥ न॥ य॥ ध॥ रु॥ ध॥ न॥ दौ॥ ध॥ री॥ ॥ क॥ य॥ था॥ ॥ य॥ ल॥ व॥ ल्क॥ ल॥ मा॥ रं॥ गि॥ व॥ ध॥ लि॥ य॥ नृ॥ ष॥ धि॥ वि॥ वि॥ लि॥ नि॥ ॥ गो॥
 नि॥ ग॥ ध्या॥ नि॥ वं॥ ज॥ लि॥ मा॥ न॥ क्रि॥ पू॥ कृ॥ सि॥ मा॥ लि॥ नि॥ दि॥ लि॥ ॥ मि॥ लि॥ ॥ श्रा॥ ग॥ कि॥ ग॥ कि॥ ॥ गो॥ नि॥ ग॥ ध्या॥ नि॥ का॥ धि॥

१०१

का॥ व॥ व॥ नि॥ वि॥ ह॥ नि॥ दि॥ लि॥ ॥ य॥ था॥ स्था॥ हा॥ क॥ कं॥ चं॥ द॥ ॥ या॥ ट॥ लि॥ य॥ रु॥ ला॥ या॥ या॥ य॥ ना॥ कि॥ त॥ ॥ धी॥ ला॥ य॥
 द॥ य॥ न॥ य॥ रु॥ उ॥ रु॥ ना॥ यो॥ व॥ मा॥ न॥ व॥ धा॥ व॥ रु॥ या॥ धि॥ ना॥ रु॥ गृ॥ ह॥ गृ॥ ध॥ कृ॥ द॥ कृ॥ ता॥ ल॥ य॥ ॥ कि॥ कृ॥ त्व॥ ध॥ नृ॥ य॥ र्थे॥ ति॥
 मा॥ ग॥ ना॥ का॥ व॥ सं॥ ध॥ नां॥ ॥ म॥ हा॥ व॥ ला॥ म॥ हा॥ रु॥ जा॥ ॥ ध॥ न॥ या॥ रु॥ न॥ वि॥ कृ॥ म॥ ॥ ग॥ नृ॥ धा॥ वि॥ पू॥ ला॥ य॥ रु॥ धि॥ रु॥ यु॥ फ॥ ॥ सि॥
 नी॥ म॥ र्ख॥ ॥ ना॥ रु॥ गृ॥ ह॥ व॥ कृ॥ ला॥ य॥ क्षा॥ म॥ हा॥ से॥ न्या॥ म॥ हा॥ व॥ ल॥ ॥ का॥ ला॥ य॥ का॥ ल॥ की॥ य॥ की॥ व॥ स॥ रु॥ क॥ यि॥ ल॥ व॥
 रु॥ नि॥ ग॥ य॥ रु॥ जा॥ ना॥ मानि॥ र्ब॥ रु॥ ॥ धा॥ क॥ क॥ रु॥ म॥ हा॥ म॥ नि॥ ॥ क॥ ला॥ य॥ या॥ दा॥ वे॥ ना॥ यो॥ वि॥ ना॥ रु॥ ष॥ म॥ हा॥ ध॥ न॥ ॥
 ह्य॥ रु॥ म॥ कि॥ ध्या॥ व॥ स्था॥ सा॥ क॥ रु॥ सा॥ रु॥ ना॥ व॥ स॥ ॥ व॥ जा॥ य॥ ध॥ ध॥ वे॥ धा॥ ला॥ म॥ ल॥ ष॥ रु॥ नि॥ पि॥ रु॥ ल॥ ॥ या॥ ना॥ धा॥

[illegible]

लोटीनकयालिनकः सार्थनाहाधनधनशाजिरुक् यकूटदंष्ट्रावसरुद्रावस्थानिषुभाक्षिवशिव
 पुनाधानक्षिवरुद्रधनोपलभा ॥ रुद्रधनयकूटपुष्पककुडिलिनापुनः दानकोदानयनकपि
 लावसगिवर्धुषमाक्षिरुद्रावस्थानिषुभाक्षिवरुद्रावस्थानिषुभाक्षिवरुद्रावस्थानिषुभाक्षिव
 रुद्रावस्थानिषुभाक्षिवरुद्रावस्थानिषुभाक्षिवरुद्रावस्थानिषुभाक्षिवरुद्रावस्थानिषुभाक्षिव
 रुद्रावस्थानिषुभाक्षिवरुद्रावस्थानिषुभाक्षिवरुद्रावस्थानिषुभाक्षिवरुद्रावस्थानिषुभाक्षिव
 रुद्रावस्थानिषुभाक्षिवरुद्रावस्थानिषुभाक्षिवरुद्रावस्थानिषुभाक्षिवरुद्रावस्थानिषुभाक्षिव

स क ४ या ३ मा ३ न ॥ म ल य पूर्ण का य रु ४ क म ल ष्व कि न न ४ ॥ यो ३ य म द्य मा ली व य नि श न च र व
 ३ क ४ ॥ पि न रु ल्य पू स का ली न न रु व र्वा स र्वा व रु ४ ॥ ना सि क म द भा य रु आ स र ३ रु नू क रु क ॥ न
 दि क य पि ता न र वी न ३ क न हा ट क ॥ ल वा द न ४ क लि र ग ष्वा क्ष ली च म हा उ रु ४ ॥ स्व सि क रु
 क व न वा स्थां न याल क ४ रु डि स्की र ध रु ड क रु ४ ३ य द न च ध ना प र ४ ॥ ध ना म क व ला य रु न व र्वा
 पि य र र्वा न ४ ॥ मा म र्वा न बि र व ३ व दि र व ली पि य ४ ॥ रु या का न व रि क क मि पू र्या म क न
 न म ४ ॥ न क रु वि षा ला हा उ उ क ३ उ इ म्ब न ॥ म ना रा ग ३ व र्वा ली ३ नि व र्वा वि ना व र ४ ॥

१०३

अ दि रु रु व नि रु क ४ का पि ल क पि ल रु था ॥ व कू ल र ३ ॥ रु रु य नां म धु र्वां पू र्ण क रु था ॥ ने ग
 म ३ ॥ या ३ ॥ ली य म र रु ना रु सा रु य ॥ व नू ३ ॥ यी ह र नू यो धि य व य न रु य ४ ॥ क नू रु व य र
 र न रु कू रु ना रु क ॥ य नी र्वा ना व रु र्वा म हा ल र व ल म र्वा ला ॥ य नि य नि न ४ सि द्वा र्वा आ य
 नी व नी वा सि न ४ ॥ सि द्वा र्वा रु था ३ ॥ रु रु ला या रु ल न व व ॥ य रु सि र्वा व ली यी रु सि रु वा य रु ला
 व ली ॥ का टी व र्वा म हा स न रु था प न य न रु य ४ ॥ पू र्वा द न रु व म्वा र्वा मा ग रु ३ ॥ मि नि व रु रु ॥ ३
 र मा र ग य र्वा य रु ४ ॥ रु रु व र्वा व ना ग न ॥ वी न वा रु रु सा रु रु कार्क या रु रु र्वा व रु ४ ॥ का रु र्वा

वायनायासारुदिकायांवरुदिकशायदःपाटलियुवनाम्नाहमस्वसुथाभूषकश्चैवकांवीषुं
 वधयुक्तंकरुणाहनुकद्वयसिद्धार्थमन्दकश्चाजिगृह्य॥अग्रादकम्अकलःसंभवमक्षिकान
 नशाविकटकंगश्रययदावसक्तकपिलवासुनिगागाश्चानकारेककिंकाद्यानकानिलयाध्ववशायाका
 मध्यमकीयश्चसौरुदयामहाभक्ष्यावेनाटकः॥नयूनरुक्कामनूरुमिषु॥यदाचंदकटव्यागस्त
 थाविकटः॥यथिवमानिकादवधमदिनदधुवर्मदत्र॥यहृन्नश्चकष्मीनवम्यकश्चकटापूना
 यात्रिकः॥किनाम्नायुवसक्तसिद्धसुश्रियुपययुष्यलगायस्यमहासन्ध्यामहाबला॥अस्ययुगः॥

१०३

चिकस्यवसक्तचीनरुमिषु॥स्वश्चाहृकिनाम्नायुमहावीर्यामहाबलः॥विक्राताशोवसगाकः॥सकागा
 कोलिकवसक्तउपपादः॥कलिगघमशुलामशुलामनगालकश्चनश्चकापिस्थामाजीवीनामकारुयी॥
 धर्मपालश्चरवा॥षुवाकायेवमहारुक्॥जिनघराजायुगृहीमाचैववत्सत्मजश्चायककाटीयानि
 वृत्तसुखानयनिवासिकः॥सागामिनिहमवकोवधनः॥सिद्धसागत्रिभूलपालिन्निपूनकलिगघुय
 मदनशाप्यवालर्गजदमिठमिहल्लभधनश्चनशा॥कमस्वश्चादवीयागालकिंकनावमनगपुलाश्च
 नः॥पुन्रीकक्षमिलश्चमहापुलगायुरुक्कनश्चदनदधुयिगलावलिभवसक्तवचैववचैवजधान

क य निरु न विष इ व र्ण विष ना ध न सी मा व च च न धी व च क क नू थ जी व रु व र्ष ध र्ण य ष्य उ ध न र्द ण र्ण
व्या हा ॥ उ रु क च मा न द अ ह्मा विं ष ती नां म हा य रु स ना य ती नां ना मा नि य द षा दि र षा न रु कि य नि या ल य नि
या य र्ण या मा न द दि षा यां व त्वा ना म हा य रु स ना य त य १ पु कि व स कि १ य पु र्वा दि षं न रु कि य नि या ल य
कि रु य था ॥ दी र्घ ४ म न उ ४ पु र्ण क ४ क षि ल र ष्य कि ॥ क य न या म हा मा य र्ण वि श ना क्ता म म स र्व स त्वा
ना क न क्तां क र्व रु गु फि य नि षा र्ण य नि ग र्द य नि या ल न षा कि स्त स्य य न द धु य नि हा न ष रु य नि हा
न वि ष इ व र्ण वि ष ना ध न सी मा व च च न धी व च क क र्व रु जी व रु व र्ष ध र्ण य ष्य उ ध न र्द ण र्ण ॥ द दि षा

१०६

या मा न द दि षा यां व त्वा ना म हा य रु स ना य त य १ पु कि व स कि १ य द दि षा दि षं न रु कि य नि या ल य नि
ना ग य था ॥ सिं ह उ प सिं ह ४ र्ण वि मा न द ष्य ॥ क य न या म हा मा य र्ण वि श ना क्ता म म स र्व स त्वा ना य
न क्तां क र्व रु गु फि य नि षा र्ण य नि ग र्द य नि या ल न षा कि स्त स्य य न द धु य नि हा न ष रु य नि हा न
वि ष इ व र्ण वि ष ना ध न सी मा व च च न धी व च क क र्व रु जी व रु व र्ष ध र्ण य ष्य उ ध न र्द ण र्ण ॥ य षि
मा या मा न द दि षा यां व त्वा ना म हा य रु स ना य त य १ पु कि व स कि १ य य षि मा दि षं न रु य नि या ल
य कि ॥ ग य था ॥ दि नि र क ष ४ पु रु ४ पिं ग ल ष्य क य न या म हा मा य र्ण वि श ना क्ता म म स र्व स त्वा ना य

न कौकुर्वन् जीवतु वर्षं यत्पुण्यं न दंष्ट्रं ॥ उरु नाया मानं ददिष्वा यौ वत्सा भामहा यद्गमना पया
४ यत्किं वसति ॥ य उरु नादिर्हं न कृत्ति य निपालयति ॥ कथं ॥ धनं नानं द उ या ग पा ला विष्णु
॥ कथं नया महा मायू र्या विशा न्ना म म सर्व सत्त्वा नाध न कौकुर्वन् गुफि य निशर्प य निगृह्य नि
या लनं ॥ किं स्वस्व य नंदं प निह नं ध मु प निह नं विष दू षर्ष विष ना धनं सी मा वन्ध न जीव
ध श कृ वन्तु जीवतु वर्षं यत्पुण्यं न दंष्ट्रं ॥ वत्सा न कृ म आ नंद म हा य द्गम ना प य या य वि
दिष्वा स्त यत्किं वसति ॥ य विदि र्वा न कृत्ति य निपालयति ॥ कथं ॥ पात्रिक ४ या वत्सल गध

१०८

४ सा गा गि निह म वत् ॥ कथं नया महा मायू र्या विशा न्ना म म सर्व सत्त्वा नाध न कौकुर्वन् गुफि
य निशर्प य निगृह्य निपालनं ॥ किं स्वस्व य नंदं प निह नं ध मु प निह नं विष दू षर्ष विष ना
धनं सी मा वन्ध न जीव न्ध श कृ वन्तु जीवतु वर्षं यत्पुण्यं न दंष्ट्रं ॥ वत्सा न कृ म आ नंद म हा य
द्गम ना प य या ध न ध्या यत्किं वसति ॥ य ध न धी ग ना न्त्वा न कृत्ति य निपालयति ॥ कथं ॥ रु म
४ म रु म ४ काल उ प काल ॥ कथं नया महा मायू र्या विशा न्ना म म सर्व सत्त्वा नाध न कौकुर्वन्
गुफि य निशर्प य निगृह्य निपालनं ॥ किं स्वस्व य नंदं प निह नं ध मु प निह नं विष दू ष

कशा मया हा निधी कशा खटा हा निधी कशा रक्षणा हा निधी कशा सिंहा नका हा निधी कशा वा नका हा निधी कशा विनि
 का हा निधी कशा अथवा हा निधी कशा स्या दिनि का हा निधी कशा नको कर्तु मम सर्व सत्या नाश करु या
 कर्म का र्वा ई कि नका कशा हव ना कशा हव ना कशा उ मर्द ना कशा हव ना कशा व ना कशा विज्ञा कशा
 यष का नशा इरु का कशा इष्टु दिरु इष्टु या इष्टु दिरु इष्टु रि विरु ई लघि ना वध ना कशा उ न्ना दा क उ क
 सा कशा असा नका कशा अयसा न ना विना स ना न कुरु ॥ ना कुरु या कशा अना कुरु या कशा अग्नि कुरु या कशा
 उद कुरु या कशा यन कुरु या कशा इहि कुरु या कशा असनि कुरु या कशा अकाल मरु कुरु या कशा धन कशा

१११

कर्म कुरु या कशा धनिक कुरु या कशा वधु मृग कुरु या कशा अमि कुरु या कशा वध कुरु या कशा अथ अधिक कुरु या
 कशा अथ मि कुरु या कशा म न कुरु या कशा सर्व कुरु या कशा नको कर्तु मम सर्व सत्या नाश करु कुरु कि
 टि मरु गन्द ना रणा ग लु पि ट कया मा वे स र्य ला ह लिं ग कुरु या कशा अपन य कुरु धि ना लिं म हा विरु द
 कम नाच कम दि ना गं ना सा ना गं मूख ना गं क लु ना गं हृदा गं ग लु ग रं क लु मूल हृदय मूल पा
 र्श्व मूल य मूल उद न मूल ग लु मूल वसि मूल गुद मूल शानि मूल य ऊ न मूल उ न मूल ऊ र्ध्व मूल
 ली हस्त मूल पाद मूल अक्षय मूल कन मय न य नु ॥ का हि कं छा हि कं ना हि कं ना उ र्ध्व कं सका हि

कमहमासिकं मासिकं देवसिकं मोहूर्तिकं निर्यतनमिषमहनं रूकनं यरुनं मानुषरुनं शुमानु
 षरुनं वातिकं धैरिकं क्षत्रिकं सान्निषातिकं दुरुकं सर्वकनं मथाजीर्णं सर्ववार्धिसर्वगुहं सर्वगर्जस
 र्वविषयार्थसर्वदृश्यसर्वरूपयवनाक्षयकुममसर्वसत्त्वानाश्रयाहा॥ द्वादशमात्रा नंदमहापिष्ठा
 ध्यायारिर्वाधिसत्त्वामाहुः कृद्दिगगानदिगाजायमानानदिगाजायापिनदिगमा॥ पुनः करमाद्वाद
 ॥ गयथा॥ लंवाविलंवायलंवाअलंवाहानीहानिकधीरुनियिज्जलाकालीकनालीकमृगीवाकाकीक
 ल॥ दनीनकि॥ ॐ ह्यगाद्वादशमहापिष्ठा ध्यायारिर्वाधिसत्त्वामाहुः कृद्दिगगानदिगाजायमानानदिगाजायापिनदिगमा॥ पुनः करमाद्वाद

११२

पिसंयाममनूरवकिमहूर्दिका॥ गायनयामरुमायूर्याविशानाहाममसर्वसत्त्वानाश्रयानां कवकुवकु
 फियनिगार्धयनिगुहयनियालनं धाकिं सत्त्वयनंदधुयनिहानं धाकृयनिहानं विषदूषर्धविषनाशः
 नैसाभावध्वनधीवध्वश्चकवकुजीवकुवर्षधममध्वकुधनदीधम॥ ॐ मानिवाकुमनुयदानिमन
 सिकरु ध्यानि॥ गयथा॥ रुनखनखनममिलमल॥ मर्दयनिमरुकिमरुमष्टिकिक॥ हलहलहलहल
 लहलहलहलहलहलहल॥ १०॥ ललललल॥ ८॥ सिद्धिसिद्धिसिद्धिसिद्धि॥ ४॥ स्वाहकिहा॥ सर्वसत्त्वा
 नाश्रयाहा॥ स्वस्तिस्वस्तिस्वस्तिस्वस्ति॥ ४॥ स्वाहकिहा॥ मिठिमिठिमिठिमिठि॥ ४॥ सर्वसत्त्वानाश्रयाहा॥

अष्टविमाज्ञानदमहाविष्णुव्यामांसरक्षाक्षिकारिकाशामनूष्याक्षं विरु० कायारिर्वाधिसत्त्वामाहु० कृत्तिग
 नानद्विगाजायमानानद्विगाजायापिनद्विगशागायून० करमा० गयथा॥ मदासदनामदाकटा० उपमदाय
 तीडाकाहानिनी॥ असनीयसनीयति॥ ॐ ह्यनाशुष्टोमहाविष्णुव्यामांसद्विर्मयायुकिर्मयावर्धुवयायक्षि
 न्य॥ दवास्तनमपिसंयममनरुवकिमरुद्विकाशागा० यनयामहामाययीविद्यानाक्षममसर्वसत्त्वाना
 च० नदीकंवेकुगुर्किपनिशर्लपनिग्रहंयनियालनं० निंस्वस्वयमंदधुयनिहानं० क्षुपनिहानं० विष
 द्रवर्लविषनाभनंसीमावधधनलीवध० कवेकुजीवकुवमं० गीयक्षुक्षुनदाक्षर्ग॥ गयथा॥ रुनरवम

११३

खनमलमिलमूलमर्दयनिमरुकिमरुमन्त्रितिक॥ हलरुलरुलरुलरुलरुलरुलरुलरुलरुलरुलरुल० ललललल
 मठिमठिमठिमठि० सिद्धिसिद्धिसिद्धिसिद्धि० स्वागृहिका० सर्वसत्त्वानाच० स्वाहा॥ स्वस्तिस्वस्तिस्वस्तिस्वस्ति
 ०॥ स्वागृहिका० सर्वसत्त्वानाच० स्वाहा॥ ॐ मा० पुननानंदसफमहाविष्णुव्यामांसरक्षाक्षिकारिकाशामनूष्याक्षं वि
 रु० कायारिर्वाधिसत्त्वामाहु० कृत्तिगनानद्विगाजायमानानद्विगाजायापिनद्विगशागा० यूनकरमा० गय
 था० अष्टादिकानद्विगिकाविषयिष्णुविकायु० रुदिका० अग्निनद्विगिका० मित्रकालिका० मयिनद्विगि
 कावति० ॐ ह्यना० सफमहाविष्णुव्यामांसद्विर्मयायुकिर्मयावर्धुवयायक्षिन्य॥ दवास्तनमपिसंयमम

नरुवनिमरुद्धिकाशागाश्यानयामहायूयाविशानाकाममसर्वसत्त्वानाश्चनकांकुगुफिंपनिगर्धपनिगर्द
पनिपालनं॥किंस्वस्वयनंदधुपनिहानं॥कुपनिहानंविषदूषर्धविषनाशनंसीमावधधनधीवधध
कुर्वकुजीवकुवर्षधर्गपधकुधर्गधर्ग॥गयथा॥रुनखनखनमलमिलमल॥मर्दयक्तिमरुक्तिमरुमधि ११४
मिक॥रुलरुलरुलरुलरुलरुलरुलरुलरुलरुल१०॥लललल४॥मठिमठिमठिमठि४॥सिद्धिमिद्धि
सिद्धिमिद्धि४॥स्वाकृति४॥सर्वसत्त्वानाश्चस्वाहा॥स्वक्तिस्वक्तिस्वक्तिस्वक्ति॥४॥ममसर्वसत्त्वानाश्चस्वाहा॥म
क्तिपुननानदयचमहानाकृष्णामीसखाधिरहाजिकामनुया॥विह०कायातिर्वोविमत्तामा४८कृदिग

नक्तिगाजापमानाजागापिनक्ति॥शागा४पुनकनमा४यच॥गयथा॥कृष्णनिकृष्णमंदाविक्रकपि
लावेकि॥४४४४गा४यचमहानाकृष्ण॥मद्धिमयायुक्तिमयावर्धुवयाय॥सिन्धु॥देवाहममयिसंग
ममनरुवनिमरुद्धिकाशागाश्यानयामहायूयाविशानाकाममसर्वसत्त्वानाश्चनकांकुर्वकुगुफिंपनि
गर्धपनिगर्दपनिपालनं॥किंस्वस्वयनंदधुपनिहानं॥कुपनिहानंविषदूषर्धविषनाशनंसीमाव
धधनधीवधधकुर्वकुजीवकुवर्षधर्गपधकुधर्गधर्ग॥गयथा॥रुनखनखनमलमिलमलमर्दय
क्तिमरुक्तिमरुमधिमिक॥रुलरुलरुलरुलरुलरुलरुलरुलरुलरुल१०॥लललल४॥मठि२मठि२

सिद्धिसिद्धिसिद्धिसिद्धि ४ ॥ स्वा क र्ति का १ सर्वसत्त्वानां च स्वा हा ॥ स्वस्ति स्वस्ति स्वस्ति स्वस्ति ४ ॥ मम सर्वसत्त्वानां
 च स्वा हा ॥ ग शा विमानानंदमहा ना कृष्णामास ॥ १ ॥ तिरुसा जि का १ म नृया ॥ विरु ० काया रि वा धि सत्त्वा
 मा ३ ॥ कृष्णि गता न जि गा जा य मा ना जा ना यि न हि क १ ॥ ना १ पु न १ क र मा अ ३ ॥ न य था ॥ मा हा स सा मा कृ ॥
 ली क णि नी का वा जी स न ग ला रि ता ली का व ना व कि ॥ १ ॥ मी मा अ ३ म हा ना कृष्णामास ॥ १ ॥ तिरुसा जि का १ म
 नृया ॥ विरु ० का १ ॥ रु न कि म्नी पु नृष दान क दानि का १ ॥ अ पि १ ॥ रि का कृ लानि स वे न ॥ १ ॥ नृया ग म न च र
 म १ ॥ य हा वा ग च्छु न म ग च्छु नि ॥ १ ॥ द प य नि म नृया ॥ १ ॥ मा जा रु न कि म हा न्ने स्वा १ ॥ न ता सा म सि का नृया स

११५

य कि न मा नृया पु जा ॥ १ ॥ रु य गा अ ३ म हा ना कृष्णामास ॥ १ ॥ तिरुसा जि का १ म नृया ॥ विरु ० काया रि वा धि सत्त्वा
 नमयी तं ग म म नृ रु व कि म रु चि का १ ॥ ना १ ॥ य न या म हा मा पू र्या वि शा ना कृ म म सर्वसत्त्वानां च न कं व
 र्च कु गु फिं य नि जा लं य नि गु रं प नि पा ल नं ॥ किं स्व स्य य नंद लु य नि हा नं ॥ रु य नि हा नं वि श्व दू र्वा वि
 ष ना ध न सी मा व न्य न नी व च च कृ र्च कु जी व रु व ष ण र्णी य ॥ १ ॥ रु हा न दं ध र्णी य ग य था ॥ १ ॥ रु न र व न र व न म
 ल मि ल म ल ॥ म र्द य कि म रु कि म रु मा धि रि का ॥ १ ॥ रु ल रु ल रु ल रु ल रु ल रु ल रु ल रु ल रु ल १ ॥ ल
 ल ल ल ४ ॥ म ठि म ठि म ठि म ठि ४ ॥ सिद्धिसिद्धिसिद्धिसिद्धि ४ ॥ स्वा क र्ति का १ सर्वसत्त्वानां च स्वा हा ॥ स्वा

[illegible][illegible]

विद्याधनानामनादसी॥धनूधनानामनादसी॥धनधनानामनादसी॥असिधनानामनादसी॥रुलध
नानामनादसी॥वक्रधनानामनादसी॥वक्रवाजानामनादसी॥विहीषधनानामनादसी॥ ॥००॥
दधमलानादसी॥मद्विमयाश्रिमयावर्धुवयायधस्त्रिना॥दवासनमयिमंयाममनरुवकिमरु
द्विका॥ना३॥यनयामरुमायूयविशानादसी॥ममसर्वसत्त्वानादसी॥नर्दाकुर्वन्कुर्गुर्गियनिगर्दीषनिगर्दी
पनिपालनं॥किंस्वस्वयनंदं॥यनिहानं॥मृयनिहानं॥विषदुषर्ष॥विषनाशनसीमावन्धनधी
वन्धनकूर्वन्कुजीवन्कुवर्षणपण्यकुजनदाशन॥गद्यथा॥रुनखनखनमलमिलमलमदयक्तिम

कृतिमरुमष्टिकिक॥रुलरुलरुलरुलरुलरुलरुलरुलरुलरुल१०॥लललल४॥मठिमठिमठिमठि
४॥सिद्धिसिद्धिसिद्धिसिद्धि४॥स्वार्त्तिका४सर्वसत्त्वानात्रस्वाहा॥स्वस्तिस्वस्तिस्वस्तिस्वस्ति४॥ममसर्वसत्त्व
नीवस्वाहा॥द्वादश६६माअर्नदमारुनायाहिर्वाधिसत्त्वामाहु४कृद्भिगगानक्षिगाजायमानाजागापिनक्षिग४॥
या४सत्त्वानयदवन्तिउक्तसमन्तिविह०यन्ति॥गा४यून४करमाद्वादश॥नयथा॥वाक्कीनोडीकोमाजीव
प्रवीउदीवानाहीकोवनीवागुणीयाम्यावायवाअरग्नयीमाहाकालीवन्ति॥गा४यनयामहामाययावि
द्यानाहाममसर्वसत्त्वानीव नक्षोक्वक्तुगुर्दिपनिगर्धपनिगुहयनिपालनैर्गार्त्तिस्वस्त्ययनदधुय

मानासनाक्षसी ॥ महिषीनामनाक्षसी ॥ मानिकानामनाक्षसी ॥ नाडिकानामनाक्षसी ॥ कलनीनामनाक्षसी ॥ कल
सीनामनाक्षसी ॥ विमलानामनाक्षसी ॥ रुत्रिवंशानामनाक्षसी ॥ धनधीनामनाक्षसी ॥ नाहिषीनामनाक्षसी ॥
मानीवीनामनाक्षसी ॥ रुतासनीनामनाक्षसी ॥ वावूक्षीनामनाक्षसी ॥ कालीनामनाक्षसी ॥ कोत्रीनामनाक्षसी ॥ ११२
गुलानामनाक्षसी ॥ उत्पलानामनाक्षसी ॥ वलानामनाक्षसी ॥ ग्रसनीनामनाक्षसी ॥ कनालीनामनाक्षसी ॥ प
रिगनामनाक्षसी ॥ रिगलानामनाक्षसी ॥ विडनानामनाक्षसी ॥ रगनीनामनाक्षसी ॥ गन्धानीनामनाक्षसी ॥
कृष्णीनामनाक्षसी ॥ काङ्गीनामनाक्षसी ॥ नावधीनामनाक्षसी ॥ मदनीनामनाक्षसी ॥ असनीनामनाक्षसी ॥

गर्हाक्षिणीनामनाक्षसी ॥ नूधिनाक्षिणीनामनाक्षसी ॥ दलुनामनाक्षसी ॥ उलुसनीनामनाक्षसी ॥
वाक्कीनामनाक्षसी ॥ गजगपालिनीनामनाक्षसी ॥ वरुधनामनाक्षसी ॥ स्कन्धानामनाक्षसी ॥ कप
नीनामनाक्षसी ॥ वर्षधीनामनाक्षसी ॥ गर्जनीनामनाक्षसी ॥ रुदनीनामनाक्षसी ॥ विशाकनीनामनाक्ष
सी ॥ रुक्मनामनाक्षसी ॥ उल्कासूरीनामनाक्षसी ॥ वसुधनामनाक्षसी ॥ कलनाक्षीनामनाक्षसी ॥
यमदूरीनामनाक्षसी ॥ अमलानामनाक्षसी ॥ सुवलानामनाक्षसी ॥ उद्वेजनामनाक्षसी ॥ धरुधीना
नामनाक्षसी ॥ धरुवाहनीनामनाक्षसी ॥ धरुनगनामनाक्षसी ॥ धारुनीनामनाक्षसी ॥ मर्दनीनामनाक्ष

हिक्कामिकविक्र॥ हन ३ धन २ रुन २ रुन २ चल २ चल २ स्वाहा ॥ पाष्ठा नंद ह मिवना नाकृष्ण मरुर्द्विकाम
 हावलासासानामानिकीरुपियामि ॥ वदगस्तानिमल्लु नंदमसुनंदवपूतनावक्रिलानथाविष्णु
 लाकृष्णमावेवधर्मावनानाकृष्ण ॥ कामनिकावेवनाकृष्ण ॥ सुनंदवपसावेवभौददतावनानाकृष्ण ॥
 पृष्णगन्धावपृष्णवपृष्णमालावनानाकृष्ण ॥ अशोविह ० कावेववर्धिकावेवनाकृष्ण ॥ नकाकीपृथुला १२१
 वेवनाकृष्ण ॥ वल्लाननमिगावनन्दनापिवनाकृष्ण ॥ पिकृलावविष्णुलावसुधर्माववठुनानुवका
 गिनी ॥ आयुमगयनाहपिलानंदानाकृष्ण ॥ कूपक ० वकषीवर्धरामालावनानाकृष्ण ॥ महाहिकामक

कादनागदलायल्लिकालवृहिसिद्धीपपूतनावधनावनापृष्णदनावदंतीवायारक्षाकापउमा
 वगीकपिलधावलावावसिवदक्षीयरक्षाधनागिदिमिगारउनुहाधूपेकर्षुमहासुसाविष्णुलाकाकदकाव
 कक्षीनीलारिनाहिका ॥ मऊससीमाकाष्णीकूमिगावेवनाकृष्ण ॥ कामावरुक्रमलुनविविकावेवनाकृ
 णीकृतीवधनाकृष्ण ॥ यडमानामगन्धानीमनलानामवल्लल ॥ महानाष्णवकक्षीनअविष्णुनवकृष्ण
 भुवदावमधुनायांआकरुकुनवाकृष्ण ॥ नुददकागदगिलसूर्यकर्षुवक्षकल ॥ रुषिदीवानायांकविवाय
 वविंवषी ॥ कपिवायाम्पृष्णदनीमिहिलानगनरुक्मिगा ॥ विष्णुलानामदशपृउरुपन्याश्रपिकृला ॥ विहि

कामगुष्माभूवायानुनिवासिनी॥ नंदकजाधनायाश्चवासावसनिनाक्षसी॥ गहोनिनूयनूटनीतीमाक्षसी
 तिः सदाधूतामपणवचमधववद्वेमाननिवासिनी॥ उधजवकुपजवकुठिगधनिवासिनः॥ अस्वका
 नाक्षसीतीमापिकलानामकथ्यन॥ यश्चपुष्पलनः॥ साक्षेसर्वामाधनियादिनी॥ कस्यत्वनक्षितापुणकस्य
 रुमदनादक॥ उच्छिष्टारुवन्नकीरुक्कसावविद्यनगच्छमालाभिनाह्लाविमर्षोश्चविवर्धिका॥ विटका
 लाहलिकाश्चरुनक्षीर्जासिदहिनी॥ वगाः॥ पाक्षरुनालाकसदासलाश्चनकिरु॥ सत्वानामपद्यानायपइष्ट
 ममवगसा॥ यात्रिकस्यनयागार्यादानीगीतामविधुता॥ यश्चरिइदिगाक्षरुक्लिष्टरुयनिवागिना॥ य

१२२

चक्षमाहृषनः॥ यश्चपुष्पलनः॥ यनिवृत्त॥ पुनस्कृतावसानिर्यं पश्चरिमुषिकाक्षरु॥ विमानसर्वगाहृद
 धुविगरधनगनपाटलिपुष्पववनदरु॥ निवासिनी॥ वगाः॥ सर्वाश्चनक्षसामहर्दिकासदावलाक्षवसकि
 दक्षदरुषुपुथक्कलालयपुव॥ याहलानमक्ककिष्टुवर्दनाक्षसीगर्भ॥ सयध्वासाहृदमृद्धोअर्जकस्य
 वमअनी॥ नमः॥ सर्ववृक्षानीस्वाहा॥ पुष्पकवृक्षानीस्वाहा॥ अर्हणीस्वाहा॥ मेधयस्यवाधिसत्वस्यमदा
 सत्वस्यस्वाहा॥ सर्ववाधिसत्वानीस्वाहा॥ अनागामिनीस्वाहा॥ सक्कदागामिनीस्वाहा॥ रक्षागापनानीस्वा
 हा॥ सम्यग्जगानीस्वाहा॥ सम्यक्कतिपनानीस्वाहा॥ वक्ररुक्षस्वाहा॥ यजापनयस्वाहा॥ क्षीक्षानायस्वाहा॥

मनसस्वादा ॥ वायवस्वादा ॥ वनूष्मयस्वादा ॥ कुवेनायस्वादा ॥ यमायस्वादा ॥ उयंदायस्वादा ॥ वेधुव
दायस्वादा ॥ धृगनायस्वादा ॥ गधर्वाधियतयस्वादा ॥ विनूटकायकुम्भाधुधियतयस्वादा ॥ विनूपा
दायनागधियतयस्वादा ॥ दवातीस्वादा ॥ नागतीस्वादा ॥ अमृतातीस्वादा ॥ मनुतातीस्वादा ॥ गनुज
नीस्वादा ॥ गधर्वातीस्वादा ॥ किन्नरातीस्वादा ॥ महाजगातीस्वादा ॥ यक्षातीस्वादा ॥ नाक्षत्रातीस्वादा ॥
धुतातीस्वादा ॥ पिशाचातीस्वादा ॥ रुतातीस्वादा ॥ कृतातीस्वादा ॥ यतनातीस्वादा ॥ कटपूरनातीस्वादा ॥
स्वैधनातीस्वादा ॥ उन्मादनातीस्वादा ॥ द्युयानातीस्वादा ॥ अयस्मातातीस्वादा ॥ अस्मानकातीस्वादा ॥ नृदातीस्वादा ॥

१२३

नरुगातीस्वादा ॥ आनिषातीस्वादा ॥ गहातीस्वादा ॥ मपीतीस्वादा ॥ सिद्धवतातीस्वादा ॥ सिद्धविद्यानां
स्वादा ॥ रगेनीयस्वादा ॥ राक्षानीयस्वादा ॥ काकुलीयस्वादा ॥ अमृतायस्वादा ॥ अमृतायस्वादा ॥ अमृतायस्वादा ॥ अमृतायस्वादा ॥ अमृतायस्वादा ॥
नीयस्वादा ॥ मातङ्गीयस्वादा ॥ वापटीयस्वादा ॥ दामिजीयस्वादा ॥ धवनीयस्वादा ॥ अधर्वधननीयस्वादा ॥
यधुलीयस्वादा ॥ मातङ्गीयस्वादा ॥ नागद्वयायस्वादा ॥ गनुउद्वयायस्वादा ॥ मनुस्त्रिभुवादा ॥ मा
नसीयस्वादा ॥ महामानसीयस्वादा ॥ वउद्वनीयस्वादा ॥ माहिरदायस्वादा ॥ यधुलदायस्वादा ॥ समन
रुदायस्वादा ॥ महासमनरुदायस्वादा ॥ समयायस्वादा ॥ महासमयायस्वादा ॥ यकिरनायस्वादा ॥ महा

प्रकृतक्षलं उन्नक्षलं ऊर्ध्वक्षलं रुक्क्षलं पादक्षलं अंगयत्नक्षलं रुक्क्षलं सर्वगुहाः सर्वपापः सर्ववि
 षाः सर्वबाधयः स्वस्तिर्वक्तुमम सर्वसत्त्वानां च नाशो स्वस्तिदिवा स्वस्तिमध्यदि नस्ति ॥ स्वस्ति सर्वमहानाथ
 सर्ववृद्धादिभक्तुवशां नमामुवृद्धाय नमामुबाधय ॥ नमामुमूकाय नमामुमूकाय नमामुष्णाय नमामु
 षाकय ॥ नमामुविमूकाय नमामुविमूकाय ॥ अवाक्कृष्णवाहिरपापधमोयस्विताः सत्वहिताय नि
 र्दय ॥ शुक्लवर्णाः कानि समाधियुक्तास्त्वक्कृष्णानयिर्दुर्ममार्थाः ॥ कृष्णानमस्तु च मां सर्वसत्त्वानां ध्वजनि
 पालयन्तु ॥ स्वस्ति मातुः स्वस्ति पितुः स्वस्ति गुरुभ्यः ॥ स्वस्ति द्विपदानां स्वस्ति वक्तुव्यायदानां स्वस्ति वक्तुव्यायदानां

१२५

नां ॥ स्वस्ति त्रिवर्षयानां स्वस्ति सुमम सर्वसत्त्वानां च स्वाहा ॥ उद्भूतमानंदनागनाकां नानामि ॥
 रुक्क्षलं वृद्धारुगवाधर्मस्वामिनागनाका ॥ वक्रानागनाका ॥ महावक्रानागनाका ॥ उद्भूतानागनाका ॥
 उद्भूतानागनाका ॥ मरुद्भूतानागनाका ॥ समुद्भूतानागनाका ॥ समुद्भूतानागनाका ॥ सागनागनाका ॥
 सागनागनाका ॥ मकनानागनाका ॥ मकनानागनाका ॥ नैदानागनाका ॥ उद्भूतानागनाका ॥
 जा ॥ नलानागनाका ॥ उद्भूतानागनाका ॥ सुदर्शनागनाका ॥ वासुकिनागनाका ॥ नक्षत्रानागनाका ॥
 जा ॥ अनुरागनागनाका ॥ वनुरागनागनाका ॥ यक्षानागनाका ॥ पांडुकागनाका ॥ शान्तिनागनाका ॥

नाजा ॥ श्रीमातागनाजा ॥ श्रीक^{१८४}नागनाजा ॥ श्रीवर्धनागनाजा ॥ श्रीरुद्रनागनाजा ॥ श्रीवल्लभागनाजा ॥ श्री
 त्रिवल्लभागनाजा ॥ श्रीसमकागनाजा ॥ श्रीसवल्लभागनाजा ॥ श्रीभल्लभागनाजा ॥ श्रीसुवाहनागनाजा ॥ श्रीग
 वारुनागनाजा ॥ श्रीसमननागनाजा ॥ श्रीसूर्यप्रभागनाजा ॥ श्रीवन्द्यप्रभागनाजा ॥ श्रीरुद्रकागनाजा ॥ श्रीन^{१२६}
 दनागनाजा ॥ श्रीनन्दनागनाजा ॥ श्रीगर्जनागनाजा ॥ श्रीअदनागनाजा ॥ श्रीविश्वनागनाजा ॥ श्रीसु
 नागनाजा ॥ श्रीवर्षागनाजा ॥ श्रीविमलनागनाजा ॥ श्रीअलकशीर्षागनाजा ॥ श्रीवलिकशीर्षागनाजा ॥
 श्रीअश्वशीर्षागनाजा ॥ श्रीगवयशीर्षागनाजा ॥ श्रीमृगशीर्षागनाजा ॥ श्रीननसिंहनागनाजा ॥ श्रीअदवलि

कागनाजा ॥ श्रीनन्दनागनाजा ॥ श्रीरुद्रनागनाजा ॥ श्रीविश्वनागनाजा ॥ श्रीविश्वरुद्रनागनाजा ॥ श्रीनम
 दिनागनाजा ॥ श्रीरुद्रनागनाजा ॥ श्रीमन्त्रिलिङ्गनागनाजा ॥ श्रीमहामन्त्रिलिङ्गनागनाजा ॥ श्रीनाथनागनाजा
 ॥ श्रीनावरुद्रनागनाजा ॥ श्रीरुद्रनागनाजा ॥ श्रीगिरिकानागनाजा ॥ श्रीगिरिनागनाजा ॥ श्रीलवकागनाजा ॥
 श्रीमिनागनाजा ॥ श्रीअनूनागनाजा ॥ श्रीअनूनागनाजा ॥ श्रीकनकागनाजा ॥ श्रीरुद्रकनकागनाजा ॥
 श्रीपाञ्चकागनाजा ॥ श्रीपिङ्गलागनाजा ॥ श्रीलपङ्गनागनाजा ॥ श्रीपङ्कनागनाजा ॥ श्रीश्वानाग
 नाजा ॥ श्रीअपल्लानागनाजा ॥ श्रीकालकागनाजा ॥ श्रीउपकालकागनाजा ॥ श्रीवल्लदेवागनाजा ॥ श्रीना

परल्लनागनाजा॥कचलानागनाजा॥रुष्टीनागनाजा॥रुष्टीसूनागनाजा॥शीशनागनाजा॥विहीषरक्ष
नागनाजा॥नाकसागनाजा॥रुषेलवाहनागनाजा॥गंगनागनाजा॥सिन्धुनागनाजा॥वकुनाग
नाजा॥सीनानागनाजा॥अध्वनागनाजा॥मरुल्लानागनाजा॥अनवरुफानागनाजा॥सुय
किष्टिनागनाजा॥उनावरल्लनागनाजा॥धनधीनानागनाजा॥निमिधनानागनाजा॥युकिन्ध
नानागनाजा॥रुडानागनाजा॥वैसरुडानागनाजा॥वसुहडानागनाजा॥वलरुडानागनाजा॥मलिनानाग
नाजा॥मलिनानागनाजा॥मलिकारल्लनागनाजा॥क्षीकालकोनागनाजा॥क्षीपीरक्षीनागनाजा॥क्षीलाहिन

१२५

कोनागनाजा॥क्षीरक्षीकोनागनाजानो॥मालिनानागनाजा॥नकमालिनानागनाजा॥वन्शानागनाजा॥रुड
पदानागनाजा॥इन्द्रिनागनाजा॥इयइन्द्रिनागनाजा॥आमुकीर्थिकानागनाजा॥मलिसूतानागना
जा॥धूमनाकुतानागनाजा॥विमृष्टकानागनाजा॥विमृष्टकानागनाजा॥वैधवरल्लनागनाजा॥क्षीक
टमरवानागनाजा॥वीथयकानागनाजा॥रुषीकमानागनाजा॥यीवालानागनाजा॥यश्वरुषीनाग
नाजा॥यश्वरुषीनागनाजा॥विंइनागनाजा॥उयविंइनागनाजा॥अलिकानागनाजा॥कालिकाना
गनाजा॥वलिकानागनाजा॥आटवकानागनाजा॥वलकानागनाजा॥किक्कनीनागनाजा॥किक्क

नकागनाजा ॥ कारणागनाजा ॥ उयकारणागनाजा ॥ विश्वकागनाजा ॥ कुरुगोमनाग
 नाजा ॥ मानुषागनाजा ॥ सुमानुषागनाजा ॥ मूलमानुषागनाजा ॥ उरुमानुषागना
 जा ॥ यवैरगागनाजा ॥ अमानुषागनाजा ॥ अइकागनाजा ॥ उरुमानागनाजा ॥ उरुम
 कागनाजा ॥ वल्लुकागनाजा ॥ अल्लुकागनाजा ॥ पल्लानागनाजा ॥ पल्लवरुणागनाजा
 ॥ मन्वालागनाजा ॥ मनवालागनाजा ॥ मनस्वीगनाजा ॥ ककीटकनागनाजा ॥ कयि
 लानागनाजा ॥ रवीवलागनाजा ॥ उत्पलकागनाजा ॥ गङ्गाकागनाजा ॥ वड्डमानकागना

१२८

गनाजा ॥ भाङ्गाकागनाजा ॥ वृद्धिकागनाजा ॥ यभाङ्गाकागनाजा ॥ कंवलासुगनागनाजा ॥
 पुलभलोनागनाजा ॥ नैदायनैदीनागनाजा ॥ अट्टिलानागनाजा ॥ अयुगनागनाजा ॥ अल्लनाग
 नाजा ॥ महासुदर्शनागनाजा ॥ यनिकालानागनाजा ॥ यनिकीटानागनाजा ॥ सुभूखानागनाजा ॥ अ
 दर्शसुखानागनाजा ॥ यल्लुकागनाजा ॥ गङ्गागनाजा ॥ सिंहालानागनाजा ॥ दमिअनाग
 नाजा ॥ दीक्षुकागनाजा ॥ दीक्षुकागनाजा ॥ दाव्यक्षुकागनाजा ॥ १८८ ॥ वृद्धकागना
 यवानैदनागनाजा ॥ यशस्विनीमण्डलनकालनकालविशयनिकि ॥ कालनकालविषयनिकि ॥

काशिनकालं सुस्यानि ध्यादयन्ति ॥ वृद्धदक्षिणागदीकविद्याय ध्यामि नमः गणादीद्योयः ॥ कल्प
स्यैतन्मन्त्रं निर्मलागमं उक्तं यागशास्त्रे गिरिवाले गुरुयागः ॥ नाककर्मरुयागः ॥ धनधीकर्मरुयागः ॥ ध
ननिधनामदानं तत्र विमानवासिनामदानं ॥ आख्यामदानं ॥ द्विजामदानं ॥ वासुदेवामदानं ॥ गणमदानं ॥ यनिवाजाशास्त्रं
वलपुरुः ॥ अकाशाभिमन्त्राश्च निमन्त्रावधुवनाय ध्यामि नमः ॥ द्वाभ्यं नमः ॥ यिर्मं गाममनुरुवन्ति मरु ॥ १३६
द्विजाः ॥ १३७ ॥ सातनागनामानः ॥ सपुत्राः ॥ सयोगाः ॥ सयानवः ॥ समानाः ॥ सानुवनाः ॥ ससनायनः ॥ स
गाः ॥ सध्याः ॥ सप्रवनाः ॥ सपार्थदाः ॥ नयनयानां मायुर्विद्यानाम् ॥ समसर्वसत्त्वानां ॥ नमः ॥ कुरुवे

कुमुदिपनिगनं यत्रियरूपं यत्रियालनं ॥ किंस्वस्वयनंदधुयत्रिहानं धनुयत्रिहानं विषद्वयं
विषनाशनं सीमावधधनधीवधकुरुवन्तु जीवतुवर्षगतं यत्रिहानं दक्षिणं ॥ स्वकिरुवरुवतु
समसर्वसत्त्वानां ॥ उच्चिष्टस्यानृष्टिष्टस्य महत्स्य पुमरुस्य गच्छुर्गतिरुक्तानि यत्नं ॥ स्यानि यत्र
स्यध्यानस्य जाग्रतः ॥ जाग्रतस्यानागतस्य स्वप्तिनाकुरुयागः ॥ सोमरुयागः ॥ अग्निरुयागः ॥ उ
दकरुयागः ॥ अग्निरुयागः ॥ वधकरुयागः ॥ यत्नं ॥ कुरुयागः ॥ उक्तावहयागः ॥ यत्नं ॥ मिदु

यागशाडकात्कटरयागशाडनादरयागशाडनचकरयागशाडरिंकरयागशाडकालमृत्करयागशाडधन
धीकम्यरयागशाडधुमृगरयागशाडस्वस्तिदवरयागशाडनागरयागशाडअनरयागशाडमनूरुकरयागशाड
गनूडरयागशाडगधर्वरयागशाडकिन्नरुयागशाडमहानगरयागशाडयदरयागशाडनारुसरयागशाड १३०
धनरयागशाडपिष्ठावरयागशाडहरुकरयागशाडकृष्णधुरयागशाडपूरुनरयागशाडकटपूरुनरयागशाडस्कन्धर
यागशाडद्वारयागशाडअयस्मानरयागशाडअस्मानकरयागशाडस्वस्तिज्ञानाकर्मक्षकारवादेकिन्नक्षत्रगात्र

विचयषकदुरुकाडधुर्दिगदधुयादपकिन्नदूर्तिखिन्नदूर्तिखिनावधुकरयागशाडस्वस्तिददकिटिर
कूरुकरधुपिटकपाभावसर्पलाहर्लिंगरुगन्दनरक्षाषेउक्तसरयागशाडस्वस्तिददरयरास्वस्तिदद
विषयस्रवापदवत्यशाडनाशस्वस्तिदिवास्वस्तिमध्यदिनहिरुशास्वस्तिददमहानाशसर्ववृद्धादिक्ष
कुबशाडनमासुवृद्धायानमासुवाधयानमासुमूकायानमासुमूकयानमासुक्षानायानमासु
भाकयानमासुविमूकायानमासुविमूकयानमासुवक्रक्षवाहिरयापधर्माथवहिरनासुवहिरनायनि

929

विह्विह्वि॥म्वि२म्वि२कुवि२कुवि२स्वाहा॥ॐ यक्ष नन्दमहाभायूनीविद्यानाह्नीमिखिना
सम्यक्वृद्धनरायिनावाहनमादिगाव॥गयथा॥ॐ टिमिटिखत्रविखत्र॥हिलिहिलिहिलि
हिलि॥४॥मिलिमिलिमिलिमिलि॥४॥ककुमलजम्बनजम्बनावनिदहिलिबनइषियाद
म्वाहिलि२कुवि२म्वि२स्वाहा॥ॐ यक्ष नन्दमहाभायूनीविद्यानाह्नीविश्वगुवासम्यक्व
द्धनरायिनावाहनमादिगाव॥गयथा॥मानि२कवटिमष्टिमिकरुन२खन२घन२हल

[illegible][illegible]

[illegible][illegible]

दिगाच॥ जानन्दहि कुशाखारुर्हि का ईष्टस्य स्वस्वयनं कर्म॥ उवम्ममसवसत्तानां च न हो कमाकुगुः
किंय निशार्थय निगुहं य निपालनं॥ किं स्वस्वयनं दधुय निहानं॥ य निहानं विषना॥ न सी
मावधनधीवधकमाकुजीवकुवर्षकं य धुह न दाहकं॥ इष्टं वानन्दमहायूनी विद्यानाही
मकुय दवाधिसत्वनमहा सत्वनता विगाचाय नूमादिगाच॥ कथथा॥ क्षिप्रिश्क्षिप्रिश्चक्षुः क्षातिः
रुप्रक्षानि निदिक्षि वलक्षि वधूलयानि नी॥ वाधिश्वाधिश्वाधिसत्त्ववाधिय निवानि सीयत्वा

[illegible]

ऊहं विषं ॥ ऊहं विषं ॥ ऊहं विषं ॥ ऊहं विषं ॥ ऊहं विषं ॥ ऊहं विषं ॥ ऊहं विषं ॥ ऊहं विषं ॥
 सुनमायाहं विषं ॥ नागविद्याहं विषं ॥ नृदधूलहं विषं ॥ कृष्णहं विषं ॥ मदासायू
 याविद्यानाहं विषं ॥ हस्मासं कामं उहं विषं ॥ स्वाहा ॥ स्वस्ति ॥ वकुममसर्वसत्त्वानां सर्व
 विषाग ॥ वंसनाहं विषाग ॥ हलाहल विषाग ॥ कालकूट विषाग ॥ दंष्ट्र विषाग ॥ मूल विषाग ॥
 विशा विषाग ॥ वृक्ष विषाग ॥ दृष्टि विषाग ॥ विद्युद् विषाग ॥ मधुसूक्त विषाग ॥ सूर्य विषाग ॥ स

१३५

धिक विषाग ॥ कीटलककर्तृहमशुकमसिकाशुमत्रवनटहृमृकर्तृलाटक विषाग ॥ गल विषा
 ग ॥ मनषा विषाग ॥ अमनषा विषाग ॥ वृष्टि क विषाग ॥ अघधी विषाग ॥ विशा विषाग ॥ स्वस्ति
 सर्व विषय ॥ मम सर्व सत्त्वानां सर्व स्वाहा ॥ ऊहं यश्च नन्दमहामायूनी विशा नाहं कृष्ण दवानामि
 दधना विषाग ॥ नृमादिताव ॥ गयथा ॥ ऊल ऊल माला ऊल ॥ वापटि ऊल ॥ मथ निद्या क
 नियसनिह निमिनिधु कि नि नि ॥ गनू रक्षवति ॥ हा हा हा हा ॥ सिंह धिनि विधि निम नि कून

सवनवनसपसत्र॥उट२सि॥उट२सि॥सिलि२निलि२कपिलमूलहादीरुसर्वइवयुइरु॥
रुनैकनामि॥हस्तपादाङ्गप्रत्यङ्गनियुर्दकनामि॥सहजिद॥हृदिदवहि॥उदिकिनिमनय
मिवर्लि॥वज्र२वज्र२वज्रयकयत्वाहा॥५०॥यश्चभनन्यमहामायूनीविद्यानालीचकुहिर्महा १३५
नाईश्वरापिनावात्यनूमादिगात्र॥कशश्च॥कल२न॥कय२न॥धम२न॥मथ२न॥भन२सि॥
किटि२कूटि२मूटि२मिटि२पिटि२सम२मम२रुन२रुन२निजि२टाटाटा॥दादादादा

दादादादादा॥ १० ॥वावावावावावावावावा॥ १०॥रुलरुलरुलरुलरुलरुलरुलरुलरुलरु
लरुल॥ १०॥सिद्धिसिद्धिसिद्धिसिद्धि॥ ४ ॥स्वस्तिस्वस्तिस्वस्तिस्वस्ति॥ ४ ॥ममममम
त्वानाचस्वाहा॥स्वस्तिस्वस्तिस्वस्तिस्वस्ति॥कालयागा॥मृकदधुग॥वृकदधुग॥
धुनदधुग॥मृषिदधुग॥दवदधुग॥नागदधुग॥जसूजदधुग॥मनूजदधुग॥गनूज
दधुग॥गन्धर्वदधुग॥किन्नरदधुग॥महानगदधुग॥यक्षदधुग॥नाकसदधुग॥यकद

[illegible]

उरुद्र नदीनां नामानि ॥ तथैव ॥ गङ्गा नदीनां नामानि ॥ सिन्धु नदीनां नामानि ॥ वरुण नदीनां नामानि ॥ सी
ता नदीनां नामानि ॥ सत्रपु नदीनां नामानि ॥ जजिनवती नदीनां नामानि ॥ यमुना नदीनां नामानि ॥ कृष्णा नदीनां नामानि ॥ विरस्ता नदीनां नामानि ॥
॥ शतद्रु नदीनां नामानि ॥ पिपासा नदीनां नामानि ॥ चन्द्रावती नदीनां नामानि ॥ सत्रध्वती नदीनां नामानि ॥ न
र्मदा नदीनां नामानि ॥ कच्छी नदीनां नामानि ॥ ययायी नदीनां नामानि ॥ कावरी नदीनां नामानि ॥ गाम्पथी नदीनां नामानि ॥ मधुस
नी नदीनां नामानि ॥ श्रवती नदीनां नामानि ॥ श्रुमती नदीनां नामानि ॥ रगमती नदीनां नामानि ॥ वर्मध्वती नदीनां नामानि ॥ सोमि

ज्ञानदीनाक्षी॥विष्णुमिथानदीनाक्षी॥जूमनानदीनाक्षी॥गामनानदीनाक्षी॥यक्षलानदीनाक्षी॥सुवामु
 नदीनाक्षी॥यहदिकानदीनाक्षी॥गयादानदीनाक्षी॥विमलानदीनाक्षी॥नेत्रनानदीनाक्षी॥दिनधवतीन
 दीनाक्षी॥रगदावनीनदीनाक्षी॥वाहूदानदीनाक्षी॥विपूलानदीनाक्षी॥नथस्मानदीनाक्षी॥ ॥४४॥ १३८
 गांध्यान्ध्यानन्दनधास्मिन्पृथिवीमधुलपुष्पवनिगासुसर्वास्तनदीषुयदवानागाजसूनामनूगाग
 जशकिन्ननामहानगायकाजाकसाऽथगाऽपिगावाहगाऽकूमाऽऽऽयूतगाऽकटयूनाऽस्कन्धाऽउनादाद्या

याग्रूपस्मानाऽस्तानकागर्गाहानाग्रुधिनारुनामानाहानाऽमदाहानाऽवसाहानाऽमज्ञाहानाऽऊ
 नाहानाऽजीविताहानाऽवल्गाहानाऽमालाहानाऽगन्धाहानाऽधूपाहानाऽपुष्पाहानाऽरुलाहाना
 ऽऽसीस्याहानाऽआरुह्याहानाऽपूपाहानाऽविष्ठाहानाऽमज्जाहानाऽखटाहानाऽक्षुब्धानका
 हाऽमिंदानकाहानाऽउच्छिष्टाहानाऽवानाहानाऽअशुचाहानाऽसीदिनिकाहानाऽना
 नानूपाविनूपावहनूपाऽअर्नरनूपाऽकामनूपाविनूयनूपाऽनवाप्तिकाऽप्रमिवसक्तिऽगणनयाम

हमायूर्योविद्यानाहममसर्वसत्त्वानाश्चनक्षत्रकुर्वन्तुगुण्यंयन्निजाहंयन्निगुहंयन्निपालनंनक्षत्रिंस्वस्वय
नंदधुपनिहानंनक्षत्रयनिहानंविषद्वयविषनाशनंसीमावचनक्षत्रवचनक्षत्रकुर्वन्तुजीवन्तुवर्षेन
यक्षकुक्षनक्षत्रं॥३॥कलमानंदयवर्गनाहंनामानिगद्यथा॥सुभनूपवर्गनाजा॥दिमवान्यवर्ग॥१२॥
नाजा॥गन्धमादन॥यवर्गनाजा॥गन्ध॥यवर्गनाजा॥खदिनक॥यवर्गनाजा॥सुवर्ष॥यवर्ग
नाजा॥युग्मिधन॥यवर्गनाजा॥निमिधन॥यवर्गनाजा॥वक्रवात॥यवर्गनाजा॥महावक्रवात॥यवर्गना

जा॥॥३॥दुर्बल॥यवर्गनाजा॥वक्रालय॥यवर्गनाजा॥धीमन्त॥यवर्गनाजा॥सुदर्शन॥यवर्गनाजा॥विप्ल
॥यवर्गनाजा॥नलाकन॥यवर्गनाजा॥किमिल॥यवर्गनाजा॥मधिकूट॥यवर्गनाजा॥वमविप॥य
वर्गनाजा॥वजाकन॥यवर्गनाजा॥असूनपागान॥यवर्गनाजा॥रुन्मन्त्रि॥यवर्गनाजा॥विद्युत्पूर॥यव
गनाजा॥अध्वरू॥यवर्गनाजा॥वदयूर॥यवर्गनाजा॥रुद्र॥यवर्गनाजा॥सुवर्ष॥यवर्गनाजा
विन्दु॥यवर्गनाजा॥विन्ध॥यवर्गनाजा॥विशुकूट॥यवर्गनाजा॥वक्र॥यवर्गनाजा॥मलय॥यवर्ग

नाजा॥सुवर्ण॥४॥पर्वतनाजा॥पात्रिपारः॥पर्वतनाजा॥सुवाह॥पर्वतनाजा॥मधिमनपर्वतनाजा॥सुव
धपर्वतनाजा॥वक्रदधुपर्वतनाजा॥वदगच्छ॥पर्वतनाजा॥रगकधु॥पर्वतनाजा॥माल्यविह॥पर्वतना
जा॥खवक्र॥पर्वतनाजा॥गायन॥पर्वतनाजा॥अञ्जन॥पर्वतनाजा॥मञ्जु॥पर्वतनाजा॥नून॥४॥प १४०
र्वतनाजा॥दर्द॥पर्वतनाजा॥केला॥पर्वतनाजा॥महदु॥पर्वतनाजा॥सुख॥पर्वतनाजा॥का
लिजन॥पर्वतनाजा॥अयासिह॥पर्वतनाजा॥रगपगिनि॥पर्वतनाजा॥वन्दनमाल॥पर्वतनाजा॥

वल्लनगर॥पर्वतनाजा॥काकनाद॥पर्वतनाजा॥भासनाद॥पर्वतनाजा॥ ॥४॥खनवासिंरुथि
वीमधुलपर्वतनाजान॥रुयदवानागमञ्जुनामनूनागनूजा॥किन्ननामदानगयक्षानाक्षसा॥पु
षा॥पिष्ठावाहगा॥कृष्णाधु॥पुनना॥करपूना॥स्कधाउनादाद्याअपमानाउास्मानका॥सिद्धवि
द्याधननाजान॥सपनिवानानेवासिका॥पतिवसक्ति॥रुयनयामहामायूयाविद्यानाऊममस
र्वसत्त्वानावनकांकुवकुजीवकुवर्ष॥पक्ष॥रुयनदी॥पक्ष॥सर्वपायान्यपनयनुकल्या॥४॥प

संदृष्टुं कुञ्जकल्याणं यमि वाधयन्तु ॥ अर्थं संदृष्टुं कुञ्जकल्याणं यमि वाधयन्तु मम सर्वसत्त्वानां कर्त्तृ
शक्तिरिति वास्तविकमर्थं न सिद्धं ॥ स्वस्ति सर्वमहानां सर्ववृद्धादिषु वरुणादां ॥ ३ ॥ कुञ्जकल्याणं
दनकृपाणां नामानि यै गगनविवक्ति ॥ अत्र लक्षयन्ति ॥ गगनं ॥ कलिका नादिनी वैवस्वतगिनी ॥ ४ ॥
जायते सर्वसृष्ट्या मम फलसम्यक्ता ॥ ५ ॥ अत्र लक्षयन्ति सफली ॥ ६ ॥ अत्र लक्षयन्ति सफली ॥ ७ ॥ अत्र लक्षयन्ति सफली ॥ ८ ॥
स्तिता यथा पूर्वादिर्गन्तव्यं न कृत्वा निषालयन्ति ॥ गगनया मम लक्षयन्ति विद्यानां मम सर्वसत्त्वानां

अत्र लक्षयन्ति कुञ्जकल्याणं यमि वाधयन्तु ॥ अर्थं संदृष्टुं कुञ्जकल्याणं यमि वाधयन्तु मम सर्वसत्त्वानां कर्त्तृ
शक्तिरिति वास्तविकमर्थं न सिद्धं ॥ स्वस्ति सर्वमहानां सर्ववृद्धादिषु वरुणादां ॥ ३ ॥ कुञ्जकल्याणं
दनकृपाणां नामानि यै गगनविवक्ति ॥ अत्र लक्षयन्ति ॥ गगनं ॥ कलिका नादिनी वैवस्वतगिनी ॥ ४ ॥
जायते सर्वसृष्ट्या मम फलसम्यक्ता ॥ ५ ॥ अत्र लक्षयन्ति सफली ॥ ६ ॥ अत्र लक्षयन्ति सफली ॥ ७ ॥ अत्र लक्षयन्ति सफली ॥ ८ ॥
स्तिता यथा पूर्वादिर्गन्तव्यं न कृत्वा निषालयन्ति ॥ गगनया मम लक्षयन्ति विद्यानां मम सर्वसत्त्वानां

कि॥ कथनयामहायूयौ विशानाहाममसर्वसत्त्वानां न कर्तुं जीवतु वर्षेणं पञ्चकुण्डनदीर्घां ॥
धनिष्ठा नगरि वावेन उरुताडपदं ॥ नवगीवाधिनीवेवरुनदीरवतिसफमी ॥ ४४ ॥ यत्सफनक
ताडरुनद्यानिकास्त्रिणा ॥ यउरुनादीर्घं न कनियत्रियालयति ॥ कथनयामहायूयौ विशाना ॥ ४५ ॥
हाममसर्वसत्त्वानां न कर्तुं जीवतु वर्षेणं पञ्चकुण्डनदीर्घां ॥ उरु कलमानदयहाहं नानामानि
ययहानकृष्णवृत्तनाकासवृद्धिस्त्वइ ४४ ॥ र्वस्त्रिहृदइरिहृकनिवदयति ॥ नयथा ॥ सूर्यो गुरुश्च द्यौश्च

रु४। वरुम्यति ४४। कुकाग्ररु४। ननेष्टुभाग्ररु४। अज्ञानग्ररु४। वृधाग्ररु४। नाहृनरु४। नदीय
रु४। धूमकडुग्ररु४। मृष्टविंशतिनकृशा ४४। सफसफदिहस्त्रिणाथनाग्ररु४। कथापचरुनाहृक
उष्ट्रसफम४। सूर्यो वन्द्यमसौ वेवसफर्षिं ४४। दन्तकाशा ४४। उदयास्तु क्रमस्तु नवक्रसंमत्तायुधा
रु४। यवृद्धिकनालाकमलनजामरुद्धिका ४४। विशामनूमादस्तु सप्त सप्त चतसरा ॥ कथनयाम
हामायूयौ विशानाहाममसर्वसत्त्वानां न कर्तुं जीवतु वर्षेणं पञ्चकुण्डनदीर्घां

॥ उरु कृत्स्नानन्द यो नात्मा मरु घातानामानि सिद्धवतानां ॥ कृष्णानामानि सिद्धवतानां सिद्ध
विद्यानां दीप्यमानां नदीयव वासिनां सायान् यद्वसुमर्था नाम गुरुयसा मन्त्रि मनीषवा
रिहानां वेदाय सगामिनां ॥ कृष्णानामानि कीरु यिष्यामि ॥ कथथा ॥ अरु मका नाम महर्षि १४३
॥ वामका नाम महर्षि ॥ वामदवाना नाम महर्षि ॥ मानीवाना नाम महर्षि ॥ मार्क १५५ नाम महर्षि
॥ विश्वामित्रा नाम महर्षि ॥ बलिहाना नाम महर्षि ॥ बालीका नाम महर्षि ॥ काश्याना नाम

महर्षि ॥ वृद्धकाश्याना नाम महर्षि ॥ रुगुनां नाम महर्षि ॥ रुक्मीना नाम महर्षि ॥ अङ्गिनशाना नाम
महर्षि ॥ रुगीना नाम महर्षि ॥ रुगीन १५५ नाम महर्षि ॥ अङ्गीनजाना नाम महर्षि ॥ आश्वयान
महर्षि ॥ पुलस्त्याना नाम महर्षि ॥ रूलनिनाना नाम महर्षि ॥ यमदग्निना नाम महर्षि ॥ द्वेय
यनाना नाम महर्षि ॥ कृष्णदेयायनाना नाम महर्षि ॥ हानीकाना नाम महर्षि ॥ हानीगायनाना नाम
महर्षि ॥ समङ्गिनाना नाम महर्षि ॥ उरुना नाम महर्षि ॥ समुद्रना नाम महर्षि ॥ हानिक

दीनाममहर्षिः॥ कीर्तिनाममहर्षिः॥ सुकीर्तिनाममहर्षिः॥ गुनूनाममहर्षिः॥ धनराजनाममह
र्षिः॥ मदनाममहर्षिः॥ पागलनाममहर्षिः॥ अश्वलायनाममहर्षिः॥ हिमवानामम
हर्षिः॥ लाहिनाममहर्षिः॥ वेसीयायनाममहर्षिः॥ इर्वासानाममहर्षिः॥ पुण्डरीकनाम १८६
महर्षिः॥ भुक्तानाममहर्षिः॥ चरुस्थानाममहर्षिः॥ अमृतनमनाममहर्षिः॥ गनेश्वरानाम
महर्षिः॥ वरुणानाममहर्षिः॥ जीर्णालिनाममहर्षिः॥ गन्धानाममहर्षिः॥ एकशतनाम

महर्षिः॥ अविष्टानाममहर्षिः॥ गरुडानाममहर्षिः॥ गार्ग्यनाममहर्षिः॥ गंजायनाममह
र्षिः॥ कात्यायनाममहर्षिः॥ कौश्यायनाममहर्षिः॥ लीयानाममहर्षिः॥ लक्ष्मणानाममहर्षिः॥
महर्षिः॥ कपिलानाममहर्षिः॥ गोतमानाममहर्षिः॥ मातंगानाममहर्षिः॥ नोहितामहर्षिः॥
नाममहर्षिः॥ सुनयानाममहर्षिः॥ सुनयनाममहर्षिः॥ अमिनाममहर्षिः॥ बालिविनाममहर्षिः॥
नाममहर्षिः॥ नावदानाममहर्षिः॥ पर्वतानाममहर्षिः॥ क्रिमिनानाममहर्षिः॥ ॥ १८७

१४५

५४० ह्यन्यात्

दमहात्मानः प्रजापतयः स्ववने ऊक्तं तस्य ह्यग्न्यामस्य नकार्थं व्यवहृताः ॥ न च नयामहा
मायूया विद्याह्नाममसर्वसत्त्वा नाक् न कौ कूर्वन्तु वर्षाकं च ध्वजुषानदीधर्मः ॥ ४० ॥ मन्त्र
पदेन प्रणिहन् न कौ कूर्वन्तु स्वाकर्हिष्ठाः ॥ अथ ॥ हिनिः खिनिः मिनिः सतिनिः सिलिः
उरुः उरुः शसनिः मथनिः घातनिः पवनिः पावनिः दहनिः दहः दालनिः पाटनिः भारुनिः
ऊरुनिः ऊरुः मियस्वाहा ॥ उरुः खमानं दमहा विद्यानामानि ॥ अथ ॥ अरुः नापुना

कनकाकयूनाहकृमाहकृपति.विन्दुपति.सिन्धुपति.रजपति.रजाग्रपति.यक्षपति.य
क्षपति.अनजगनजग.नननजग.दनाजहाडाजाहाजलामलारुलागुहानूचिनादल
नाभृत्रिकिविका.किनिकिविका.कम्पाधतकृना.विपुलिनकूलिकिनिधि.ननजात्रिष्ट
आम्रमति.अम्रमति.मधूमति.कमलविमल.कधुल.अहिउहिइहिवकवकइर.व
सनाहामहागन.उलम्ब.सुलम्बस्वाहा.रुद्रमहाविष्णुप्यनयामहामाय्याविशाना

दितावः। वक्रावावसहायगिनाहावितावाह्यनूमादितावः॥ अर्कवद्वानामिन्द्रावावाह्यनू
मादितावः॥ वक्रुर्हिर्महानाऊरावितावाह्यनूमादितावः॥ धृतनाष्टगन्धर्वमहानाऊन
रावितावाह्यनूमादितावः॥ विनूटकनकूलाद्युमहानाऊनरावितावाह्यनूमादितावः १४८
विनूपाऊधनागमहानाऊनरावितावाह्यनूमादितावः॥ वेधुवलनयकमहानाऊनरावि
तावाह्यनूमादितावः॥ अष्टविंशतिरिष्टगन्धर्वसनापतिरिष्टा॥ अष्टविंशतिरिष्टकूलाद्यु

सनापतिरिष्टा॥ अष्टविंशतिरिष्टनागसनापतिरिष्टा॥ याविरुक्तायकसनापतिनाहनीत्या
वयश्चपूगणनयनिवानरावितावाह्यनूमादितावः॥ अष्टयवार्तदमहामायुनीविशानाहं
अनकिजसदीया॥ दवग्रहसः नागग्रहसः अमृजग्रहसः मनुग्रहसः मनुउग्रहसः गन्धर्व
ग्रहसः किन्नरग्रहसः महानगग्रहसः यक्षग्रहसः नाक्षत्रग्रहसः धनुग्रहसः पिशाचग्रहसः
रुद्रग्रहसः कूलाद्युग्रहसः पूननग्रहसः कटपूतनग्रहसः स्रग्धग्रहसः उन्मादग्रहसः द्यूया

गुरुः। अथ स्मान गुरुः। अस्मान क गुरुः॥ ॥ अथ नमिक मलीया सर्व गुरु नमिक मलीया स
र्वाहा निष्ठा हि ॥ गुरु हा निष्ठा ॥ नृपि नाहा निष्ठा ॥ वंशाहा निष्ठा ॥ मांसाहा निष्ठा ॥ मदाहा निष्ठा
मर्जाहा निष्ठा ॥ जगाहा निष्ठा ॥ जीविनाहा निष्ठा ॥ वत्याहा निष्ठा ॥ माल्याहा निष्ठा ॥ गन्धहा नि
ष्ठा ॥ पृष्ठाहा निष्ठा ॥ धूयाहा निष्ठा ॥ रुन्नाहा निष्ठा ॥ सखाहा निष्ठा ॥ आरुहाहा निष्ठा ॥ य
जाहा निष्ठा ॥ विष्ठाहा निष्ठा ॥ मूयाहा निष्ठा ॥ खटाहा निष्ठा ॥ मिथानकाहा निष्ठा ॥ उच्छिष्ट

[illegible]

दकनानाचकन॥ अकिनागधमनागधक ४ नागधकदयनागध॥ गलशहधकधूलनदकधू
लन॥ याध्वधूलन॥ यधधूलन॥ उदजलनगधधूलन॥ वलिधूलनया निधूलनयजनधूलन
उनुधूलनजंघाधूलनरुधूलनयादधूलन॥ अक्रयधूलन॥ अनतिकमधीयाददकधु ११०
किटिरुकृरुगन्धनगधुपिटकपासावेस्यलाहलि॥ अनतिकमधीया॥ सर्वयाधिसि
॥ सर्वविष॥ सर्वदृष्ट॥ सर्वरथ॥ सर्वकलिकलहापदवापस॥ र्गोपायासे॥ यश्चमानंदमहा

मायत्रीविद्यानास्तीमनतिकमरुस्यवजयाधि॥ सफधामुद्धीतमर्जकस्यवमअनीसुटपिष्यमि॥ स
र्ववृद्धवाधिसत्त्वयधकवृद्धध्रावकानाकजमानधूलाकनधुवनन॥ आर्ययूकलाकनविषवादिना
रवय॥ वला नामहाजाजानश्चेनं नययके॥ मर्महाकैव्यसनमायादथय॥ धकध्रास्यदवा
नामिन्द्रमिदधगधपनिवृतावजधमर्जानमहिर्हिशा॥ वक्रकजसावासाविहकिहस्मिगधु
अनमावानंदमहा माय्याविद्यानास्तीस्यनकाकिमेगसूर्ययगिसनावाधन॥ सर्वध्रास्य

नंददरुनमाश्रुतं ॥ दधुहं १५ हाननधपुहानाहं आकारं ॥ अहं १५ निलषधायनिलषध
हं नामहर्षधं ॥ अहं १५ मवमाश्रुतं नवास्यनाश्रुतं रयं रविष्यति ॥ नवास्यवोनरयं रविष्यति नाभि
रयं रविष्यति ॥ नादकनकालंकनिष्यति ॥ नवास्यकायविमं कमिष्यति ॥ नधर्मकमिष्यति ॥ सर्वं १५
वस्यमाति ॥ सुखकयति विवृथ्यति ॥ स्वस्थनिनूयदवानि नूपासा निरुग्यथिकानिरुग्य
समिगानि नूयदुग १५ सर्वरयविनिमूक १५ सर्वं विनकजीविष्यति ॥ स्थपयित्वा नययो नार्धक

मविषाकं ॥ १०० यं वानंदमहामायत्रीविद्याहं ॥ अग्निरुष्टामनाष्टाव्यमित्तवा ॥ नन १५ सर्वनागा
सूक्तमायत्यक्त ॥ अग्निरुष्टी निगृह्णति ॥ अनावृष्टो वधाना पार्श्वकनिष्यति ॥ यावरुस्य कूलयुग्यवा
कूल इहिरुवो अरियाया रविष्यति ॥ अस्या आनन्दमहामाय्या विद्यानाहं १५ स्मनधदवसर्वरय
नवाविषयमयिष्यति ॥ किम्यूननिमांसकलसमाफामख १५ याधनयन् स्वस्थयनं वाक्योक्त १५
रुद्रत्वमानन्द १५ मांसहामायत्रीविद्यानाहं पर्यवायुहिधानयवायमहामायत्रीविद्यानाहं स

[illegible]

यागममसर्वसत्त्वानां कुरु नमिषं महा मायूया विद्यानां ह्यममसत्त्वानां नन्दस्वार्हर्हि कार्त्तव्यं उसाधूरुग
वानित्यायूषानां नन्दारुगवतः ४ प्रमिषं ह्यरुगवतः ४ पादोक्षिनसावन्दित्वा रुगवतं ४ यदक्षिणी
कृत्यथनस्वार्हर्हि कुरुतापसंक्रान्तः ॥ उपसंक्रम्य स्वार्हर्हि कुरु जनयामहायूया विद्यानां ह्यमम
काशीरूपा गुणियनिगर्धं पत्रिगुहं यत्रियालनं ॥ नित्यस्वार्हर्हि कुरु यत्रिहर्नं ॥ कुरु यत्रिहर्नं वि
षद्वयं विषनाशनं सीमावचनं वचनं वा काशीरूपा वृत्तिरश्वायूषा-स्वार्हर्हि कुरु स्वायवा

152

वन्दादिहोवाप्यधिवानियकनां॥नथावापनिश्रानागच्छयुः॥नवनथागतस्यवचनमन्यथाएव
दिनि॥अथरगवानायुष्मन्मानन्दमामकुयकस्म॥नस्मारुहिल्वमानन्दः॥मोमहामायुनीविश्वना
लीश्वरः॥पर्वदामानावयहिकुलीहिकुलीनामृषाक्षकानामृषाक्षिकानास्वर्गनासाध्वरगवानि
त्यायुष्मानानन्दनठर्षुपर्वदामानावयनिहिकुलीहिकुलीनामृषाक्षकानामृषाक्षिकानास्वर्गना
गच्छदमवानहगवानारुमनाज्जायुष्मानानन्दायवतस्वीयर्षदिसन्निधयिनिता॥सद्वमानुषासून

[illegible][illegible]

वर्था॥ सर्वशुद्धसर्वविस्तृतसूक्तबहु॥ ॥ इदं
वसर्वविशीष्यत्तद्वमान्वाप्तनगचवेष्टुल
आर्यमहागीतवतीनाममहाविद्यानाह्नीमहा
खंडेनमारगवद्ये आर्यमहामन्त्रानुज्ञानिस्ते
दानां॥ एवम्माधुरतमकस्मिन्मथरगवा

मवावरुगवानास्तना आयुष्यान्नाहलस्त
कारुगवनासाधिरुमत्यनन्दनिति॥
नृसीमानकासुखं समाफे॥ १॥ १॥ १॥
स्थानमाविशानाजायमानमस्तमन्व
नृवेषाल्याविहन्तिस्ममर्कदृष्टदसीभक

दागभनक्षालायां॥रुद्रगवानायुष्मकमामकुयरुस्म॥आगमयानंदवेक्षालीनि॥अवंरुदंरुद्रायुष्मकमामान
 नंदारुद्रगवगृह्यध्यायी॥अथरुद्रगवानुवृजिषूजुनपदवानिकांवनवेक्षालीमनूपाकावेक्षालीविह
 नक्षामुपलिवनरुद्रगवानायुष्मकमामकुयरुस्म॥गच्छनन्दवेक्षालीकृत्वा॥ॐद्वीलयादस्मययि
 त्वा॥ॐमानिमहामहानुसानीमकुयदानिराषया॥ॐमाध्वगाथा॥विसनरुविसनरुविसनरुविसनरुवि
 सनरु॥ॐ॥वृक्षालाकानुकीयकआरूपययनि॥सर्ववृक्षानुमरुतसर्वप्रत्यकवृक्षानुमरुत॥सर्वाहोनुमरु

[illegible]

पालाऽयविष्ठाकि॥अनकानि वद वतामनसह आसि॥असूनडाश्चअनकानि वासूनमनसह आसि
यविष्ठाकि॥वद निवरु रुमह आसि रुगवता रुय संनानि पव च्छक्ति॥सर्व सत्यानामर्थ रुवा मानार्थ रुनि
ष्ठाकि॥निर्गच्छ रु निर्गच्छ रु निर्गच्छ रु निर्गच्छ रु॥ ४॥क्षिपं पलाय रु॥यदि यूयं इष्ट विरुनय नाय रु
नस्य रु॥यमेव विरुनाय नाद कामान रुवान वरुयि रु कामा रु ति रु रुम रु वरु यविष्ठा रु वृक्षा रु कान
म्य रु वमा रु पय रु॥समन समन समन समन॥ ४॥नुसम नुसम नुसम नुसम॥ ४॥सुन सुन

सिद्धगमथाजिनादिनाः सर्वेषां देवतानां हिरण्यनाथः हिरण्यविष्णुः ॥ ह्यननारथारुमनाद्यनथाधर्मनयापिब
जगतामीनयः सर्वः ॥ ६॥ अथ त्वाभाम्यममुवशाविष्णुकिंकायस्यरुष्कविष्णुस्त्वाविनलीकृता ॥ ६॥ नवि
लायनायासः सर्वः स्वस्तिकनिष्पत्तिः ॥ अथ जगतां रुमार्गस्मिन्निवर्णयतिनायकः ॥ ६॥ कः सर्वः ॥ ६॥
धर्मः ॥ सर्वः स्वस्तिकनिष्पत्तिः ॥ गतिर्याजगतां ॥ लाकृतेन शनसुखीवदृ ॥ अथ यः सर्वसत्त्वानीमवः स्व
स्तिकनिष्पत्तिः ॥ यतः सर्वजगच्चतुर्भेदविरुननायिनायापानिर्नयुवन्निर्णयः सर्वः स्वस्तिकनिष्पत्तिः ॥ ग

निर्यः सर्वसत्त्वानां गार्होदीयः यनायर्हः ॥ संसात्रवरुमानातां सर्वः स्वस्तिकनिष्पत्तिः ॥ यावाधार्हधर्माधाम
विस्वादेकधुविः ॥ धुविवाकः ॥ धुविकनः ॥ सर्वः स्वस्तिकनिष्पत्तिः ॥ यस्मिन् जातमदावीनसमृद्धाः सर्व
संपदः ॥ सिद्धार्थः ॥ सिद्धसंलग्नः सर्वः स्वस्तिकनिष्पत्तिः ॥ यस्मिन् जातवसुमनीसवनयस्यकन्यिना
॥ सर्वसत्त्वाः ॥ यमृदिताः ॥ सर्वः स्वस्तिकनिष्पत्तिः ॥ षड्विकारंयुवलिनायसावारधेवसन्धनाः ॥ मागाध
इर्मन्नाः ॥ जीत्सर्वः स्वस्तिकनिष्पत्तिः ॥ यः ॥ जीत्सर्वः स्वस्तिकनिष्पत्तिः ॥ यः ॥ जीत्सर्वः स्वस्तिकनिष्पत्तिः ॥ यः ॥

वस्त्वस्त्रिकविषयिनि॥यनगार्थकना॥सर्वजिनाधर्मधनायिना॥वशीकृता॥सर्वगता॥सर्व॥स्वस्त्रिकविषयिनि
॥स्वस्त्रिव॥कृन्नीवृद्ध॥स्वस्त्रिदवा॥सर्वकृता॥स्वस्त्रिसर्वादिहानि॥सर्वकालीदिहानुव॥वृद्धपृथ्वान
रावनदवगानीमरुतव॥यायार्थ॥समहिपुन॥सर्वार्थायसमृद्धता॥स्वस्त्रिवादिपदराकुस्वस्त्रिवाकु १५३
वृद्धपद॥स्वस्त्रिवावृद्धनीमारगस्त्रियत्तागरुष्व॥स्वस्त्रिनाशेस्वस्त्रिदिवास्वस्त्रिमर्थादिनस्त्रिनि॥
सर्वस्वस्त्रिवाकुमावेपीयायमागरु॥सर्वसत्त्वा॥सर्वप्राप्ता॥सर्वरुता॥सर्वकबला॥सर्ववेसस्त्रिनस

कुसर्वसत्त्वनिनामयासर्वरुद्राक्षियत्ताकुमाकश्चित्प्रायमागरु॥यानीरुहानि॥समागतानिस्त्रिना
निहमावधवाकनिरुक्कवन्नुमेयासगर्गपुजाशुदिवावनाशेववन्नकुधर्म॥ ॥४॥स्ववृद्धक
त्यायमानानेदारुगवत॥पुतिष्ठत्य॥कुकीलपादास्त्ययित्वा॥स्त्रिमातिमहामकानुसात्रिणीमनु
यदानिनाषकस्म॥४॥माश्रुता॥॥विसन्नन्॥विसन्नन्॥विसन्नन्॥विसन्नन्॥विसन्नन्॥॥॥वृद्धासाकान
कंपकलाक्षपयति॥सर्ववृद्धानुमरुत॥सर्वपुष्टकवृद्धानुमरुत॥सर्वलोकांनुमरुत॥

[illegible][illegible]

[illegible]

नाककनाककनाककना॥ ८ ॥ कंकनाकंकनानिकुनाकिनिषक्ति॥ निनिनिनिनिनि॥ ९ ॥ नीनिनरुसा
नि॥ रुनिरुनिरुनिरुनिरुनिरुनिरुनि॥ १० ॥ रुनाः रुनाथानाथानिनिथिरुनिनूनिपुनिरुनिजना
थानाथानिर्गच्छरुनिपुनिर्गच्छरु॥ पलायननिरूपपलायन॥ यदियुयं दृष्टविहानयलायननक्ष
र॥ वृक्षालाकानूकम्यकलवमारुपयकिपुविषक्ति॥ सर्वसत्त्वहिताध्यासाध्यामेणीविहानीकनूधिका
मृदिताविहानीउपकाविहानी॥ ११ ॥ मरुपदाः सिद्धाः सिद्धमाथाकितादिताः ॥ सर्वार्थदवतानी

रिहता नानां चरिते विमोक्षनार्था रुमना यथा धर्मगया विव ॥ रुमना मीतय ४ सर्वा ४ क्षम्यत्वा ना
यमसु ४ ॥ विष्णुकि कायस्य रुद्र विधुस्त विनली रुता ॥ गान विरुता फनाया सर्व ४ स्वस्तिक निष्पति
॥ या रुगमा रुमार्ता र्मि निव न प्रकि नायक ४ दणक ४ सर्व धर्मा ४ सर्व ४ स्वस्तिक निष्पति ॥ गानि यो रु
गतां ४ ॥ रुद्रु न यन सुखी वरु ॥ अर्थाय सर्व सत्ता नां सव ४ स्वस्तिक निष्पति ॥ य न सर्व रुद्रु न यन रुद्रु
विरुन नायिना ॥ पालि न पूरु व निर्य सर्व ४ स्वस्तिक निष्पति ॥ गानि र्द ४ सर्व सत्ता नां यो न दीप ४ य ना

यर्ग ॥ संसा न वरु माक्ष नां सव ४ स्वस्तिक निष्पति ॥ या वाडा सर्व धर्मा क्षम विरु वादक ४ रुद्रु विरु ॥ यो
क ४ रुद्रु विक न ४ सर्व ४ स्वस्तिक निष्पति ॥ य स्मि न्जा रु म हा वी न स म्प द्वा ४ सर्व स य द ४ सिद्धार्थ ४ सिद्ध
संसा न ४ सर्व ४ स्वस्तिक निष्पति ॥ य स्मि जा रु व स म्प ती स व न र्य यु क म्पि ना ॥ सर्व सत्ता ४ य म्प दि ता
४ सर्व ४ स्वस्तिक निष्पति ॥ य द्वि का र्ग प व लि ता य स्य वी ४ धो व स च्च ना ॥ मा जा रु द र्म ४ क्ष मा जी न
व ४ स्वस्तिक निष्पति ॥ य क्ष मा जी न न र्य स ध र्म व क य व र्द न ॥ अ र्य सत्ता नि व द न ४ सव ४ स्वस्तिक

...सर्वज्ञः सर्वशक्तिः सर्वव्यापीः सर्वभूतहितः सर्वज्ञः
...सर्वशक्तिः सर्वव्यापीः सर्वभूतहितः सर्वज्ञः
...सर्वशक्तिः सर्वव्यापीः सर्वभूतहितः सर्वज्ञः
...सर्वशक्तिः सर्वव्यापीः सर्वभूतहितः सर्वज्ञः
...सर्वशक्तिः सर्वव्यापीः सर्वभूतहितः सर्वज्ञः